FAIZAN E MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

- वोह नबियों में उम्मी लक़ब पाने वाला 9
- घर टूटने से कैसे बचाएं ? 17
- मोबाइल और बद गुमानियां 22
- लिखने के लिए उ़नवान की तलाश 42
- बेटियों को मोबाइल से बचाएं 53

क्या आप के बच्चे का ज़ेहन कमज़ोर है ?

"یَاعَلِیْمُ" 7 बार और हर बार बिस्मिल्लाह के साथ 21 मरतबा "सूरए अलम नशरह" पढ़ कर पानी पर दम कर के जिस बच्चे या बड़े का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो उस को पिलाइए। اِن شآءَ الله हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाएगा।

(बीमार आबिद, स. 42)

केन्सर का दम

یَارَقِیْبُ

सात दिन तक रोज़ाना बा वुज़ू یَارَقِیْبُ 100 बार (अव्वल आख़िर 11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर केन्सर के मरीज़ पर दम कीजिए, अगर ज़ख़्म हो तो उस पर भी दम कीजिए अगर केन्सर का ज़ख़्म जिस्म के अन्दरूनी हिस्से या पर्दे की जगह हो तो ज़ख़्म की जगह पर कपड़े के ऊपर दम कर दीजिए। अगर जिस्म के बाहर ज़ख़्म है तो सरसों के तेल पर भी दम कर दीजिए और वोह तेल मरीज़ ज़ख़्म पर लगाता रहे, اِن شآءَ الله ज़ख़्म सहीह हो जाएगा और केन्सर दूर होगा।

(बीमार आबिद, स. 40)

(नोट : हर इलाज अपने तबीब के मशवरे से कीजिए।)

क्या आप कारोबार की वजह से परेशान हैं ?

जो शख़्स बिला नाग़ा रोज़ाना 786 बार सात दिन तक पूरी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़े, और अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़े, तो اِن شآءَ الله उस की हर हाजत पूरी होगी, अब वोह हाजत चाहे किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की।

(फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 134 मुलख़्ख़सन)

मूज़ी अमराज़ से हिफ़ाज़त का रूहानी नुस्ख़ा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله

76 बार काग़ज़ वग़ैरा पर लिख या लिखवा कर आबे ज़म ज़म शरीफ़ से धो कर पीने वाला اِن شآءَ الله मूज़ी अमराज़ से महफ़ूज़ रहेगा। (बीमार आबिद, स. 37)

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल गुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस
मुर्दा दिली के अस्बाब व कैफ़ियात 3
तंगदस्तों पर आसानी करो 6
फ़ैज़ाने सीरत वोह नबियों में उम्मी लक़ब पाने वाला 9
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत नमाज़ में हंसी आ जाए तो क्या करें ? मअ़ दीगर सुवालात 13
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत जादू से हिफ़ाज़त के लिए ऊंट की हड्डी रखना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 15
मज़ामीन घर टूटने से कैसे बचाएं ? 17
अ़द्ले इस्लामी की मिसालें 19
मोबाइल और बद गुमानियां 22
नफ़्सो शैतान से होशियार रहें 26
येह भी अमानत है ! 29
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
हज़रते ज़िमाम बिन सालबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 32
रसूलुल्लाह के दस्ते रह़मत का फ़ैज़ पाने वाले 34
वाइज़े उम्मत इमाम इब्ने अबिदुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ 38
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 40
मुतफ़र्रिक़ लिखने के लिए उ़न्वान की तलाश 42
सेह़त व तन्दुरुस्ती रसूलुल्लाह की ग़िज़ाएं (सिर्का) 45
क़ारेईन के सफ़ह़ात नए लिखारी 47
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" वालिदा के साथ हुस्ने सुलूक कीजिए 50
तौशादान कभी ख़ाली नहीं हुवा 51
बच्चों के इस्लामी नाम 52
इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेटियों को मोबाइल से बचाएं 53
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 55

मुर्दा दिली
के अस्बाब व कैफ़िय्यात

किताबे हिदायत कुरआने मजीद, बुरहाने रशीद में दिल की जो हालतें बयान हुई हैं, उन में से क़ल्बे सलीम के औसाफ़ व कैफ़िय्यात पिछले माह के शुमारे में ज़िक्र की गई, ज़ैल में क़ल्बे मय्यित की कैफ़िय्यात मुलाहज़ा कीजिए :

क़ल्बे मय्यित

मय्यित मुर्दे को कहते हैं। क़ल्बे मय्यित उस दिल को कहते हैं जो अपने रब, ख़ालिक़ो मालिक, राज़िक़ व माबूद को न पहचानता हो, जो न तो ख़ालिक़ो मालिक की इबादत करे और न ही उस के हुक्म पर अमल करे और न ही उस के ममनूआत से बाज़ आए। नफ़्सानी ख़्वाहिशात के पीछे चले और अपने ख़ालिक़ को छोड़ कर ग़ैर की इबादत करे।

कुरआने करीम में दिलों के मुर्दा पन को मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यात व औसाफ़ से बयान किया गया है और इन के अस्बाब भी बताए गए हैं जैसा कि

मुहर किए हुए दिल

बाज़ दिल वोह हैं कि जिन पर उन की हट धर्मी, ना फ़रमानी और सरकशी के बाइस मुहर कर दी गई कि अब वोह हक़ बात समझ ही नहीं सकते, जैसा कि यहूदियों के बारे में फ़रमाया गया :

﴿فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَ كُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ قَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّ قَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا(۱۵۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन की कैसी बद अ़हदियों के सबब हम ने उन पर लानत की और इस लिए कि वोह आयाते इलाही के मुन्किर हुए और अम्बिया को नाहक़ शहीद करते और उन के इस कहने पर कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं बल्कि अल्लाह ने उन के कुफ़्र के सबब उन के दिलों पर मुहर लगा दी है तो ईमान नहीं लाते मगर थोड़े।[1]

इसी त़रह़ जिन क़ौमों ने अपने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लाई हुई निशानियों और किताबों को झुटलाया और ना फ़रमानी में ह़द से बढ़े।[2] ग़ज़्वए तबूक के मौक़ेअ़ पर जंग से जान छुड़ाने वाले मुनाफ़िक़ीन,[3] ईमान लाने के बाद फिर दुन्या के लालच, बुरी सोह़बत या किसी भी वजह से ईमान छोड़ देने वाले,[4] अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को مَعَاذَاللّٰه बातिल पर कहने वाले।[5] अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की आयात के ख़िलाफ़ झगड़ने और तकब्बुर व सरकशी करने वाले,[6] रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक ख़ुत्बा व वअ़ज़ तवज्जोह से

न सुनने और बाद में सहाबा के सामने मस्ख़री करने वाले मुनाफ़िक़ीन,[7] और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात को ही अपना ख़ुदा ठहराने वाले[8] बद नसीबों के दिलों पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुहर कर दी।

क़ल्बे क़ासी यानी सख़्त दिल

बाज़ वोह दिल हैं कि जो ह़क़ की मुख़ालिफ़त के बाइस सख़्त हो गए, कुरआने करीम में क़सावते क़ल्बी के मुख़्तलिफ़ अस्बाब बयान हुए हैं जैसा कि यहूद ने एक क़त्ल किया और उस का इल्ज़ाम एक दूसरे पर लगाने लगे और ह़क़ के ख़िलाफ़ चलने लगे, उन के दिल पथ्थर की त़रह सख़्त हो गए।[9]

इसी त़रह़ बाज़ उम्मतों में अल्लाह की त़रफ़ से आज़माइश व सख़्ती आने पर भी आ़जिज़ी व रुजूअ़ का रास्ता इख़्तियार न करने वालों के दिल सख़्त हो गए और फिर उन पर अचानक अ़ज़ाब आया।[10]

इसी त़रह़ यहूदो नसारा की त़रफ़ आने वाले अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को गुज़रे मुद्दत हो गई तो वोह उन की तालीमात से दूर हो गए जिस के सबब उन के दिल सख़्त हो गए।[11]

इसी त़रह़ जिन्हों ने अल्लाह के साथ किए हुए अ़हद को तोड़ा और आस्मानी किताबों में तह़रीफ़ की तो उन पर अल्लाह की लानत हुई और उन के दिल सख़्त कर दिए गए।[12]

इसी त़रह़ वोह दिल जो अल्लाह की याद की त़रफ़ न आए और सख़्त हो गए उन की ख़राबी को बयान किया गया है।[13]

क़ल्बे मुक़फ़्फ़ल यानी ताला लगा दिल

कुरआने करीम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की किताब और हमारे लिए हिदायत का सर चश्मा है, रब्बे करीम ने कसीर मक़ामात पर इस में ग़ौरो फ़िक्र करने की दावत दी है और जो कुरआन में ग़ौर नहीं करते और अपनी हट धर्मी, कुफ़्र, शिर्क और मुख़ालिफ़ते ह़क़ पर अड़े रहते हैं उन के दिलों को कुफ़्ल ज़दा फ़रमाया गया। चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ اَمۡ عَلٰی قُلُوۡبٍ اَقۡفَالُهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह कुरआन को सोचते नहीं या बाज़े दिलों पर उन के कुफ़्ल लगे हैं।[14]

क़ल्बे मुग़ल्लफ़ यानी ग़िलाफ़ दार दिल

ग़िलाफ़ दार दिल उसे कहते हैं जिस दिल पर ना फ़रमानी, सरकशी, बद अ़हदी, तकब्बुर और दीगर रज़ाइल के सबब पर्दा आ गया हो, अब उस दिल तक ह़क़ बात का असर नहीं पहुंचता। कुरआने करीम में कई मक़ामात पर इस का ज़िक्र है।

अ़क़ीदए आख़िरत तौह़ीदो रिसालत की त़रह़ इस्लाम का बुन्यादी अ़क़ीदा है, कुरआने करीम में इस का बहुत कसरत से बयान है, जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते अल्लाह करीम ने उन से तिलावते कुरआन की तासीर को भी दूर कर दिया और उन के दिलों पर ग़िलाफ़ यानी पर्दा डाल दिया और अपने ह़बीब से फ़रमा दिया कि "ऐ मह़बूब तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया और हम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ डाल दिए हैं कि उसे न समझें।"[15]

वोह लोग जिन्हें कुरआनी आयात से नसीह़त की जाती है और एक अल्लाह وَحۡدَهٗ لَاشَرِيۡك की त़रफ़ बुलाया जाता है लेकिन वोह उस से मुंह फैरते हैं, कुरआने करीम ने उन्हें ज़ालिम क़रार दिया और अल्लाह करीम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ कर दिया, ऐसे लोग कभी भी हिदायत नहीं पा सकते।[16]

कुछ बद बख़्त वोह थे कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से कुरआने मजीद सुनते, उस के ह़क़ होने का मालूम होने के बा वुजूद इनाद में मुख़ालिफ़त करते, अल्लाह करीम ने उन के दिलों पर ग़िलाफ़ डाल दिया कि वोह उस के असर और हिदायत से दूर हो गए।[17]

यहूद इस्लाम के इस क़दर ख़िलाफ़ थे कि जब उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم राहे हिदायत की त़रफ़ बुलाते तो वोह ख़ुद कहते कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं,

अल्लाह करीम ने उन के इस कुफ़्र के सबब उन पर लानत की और दिलों पर ग़िलाफ़ पक्के हो गए।[18]

ज़ंग आलूद दिल

ज़ंग आलूद दिल भी मुर्दा दिलों में शुमार होता है। आख़िरत के मुन्किरीन के सामने जब क़ुरआनी आयात पढ़ी जाती हैं तो वोह उन्हें مَعَاذَاللہ पहले लोगों की कहानियां कह कर मज़ाक़ बनाते हैं तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया।[19]

क़ल्बे मरऊ़ब यानी रोब ज़दा दिल

मुर्दा दिलों की एक क़िस्म वोह है जिन पर अल्लाह करीम ने रोब डाल दिया, येह दो त़रह़ के लोग हैं, एक वोह जो शिर्क की नुहूसत में गिरिफ़्तार हुए और दूसरे वोह अहले किताब जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत को न माना, येह दोनों गिरोह जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ मुहाज़ आराई पर आए तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उन के दिलों पर रोब त़ारी कर दिया। इसी त़रह़ मुशरिकीन के दिल अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के ज़िक्र के वक़्त सुकड़ने लगते हैं।[20]

ना समझ दिल

कुफ़्र की अन्धेरियों में डूबे हुए ऐसे बद नसीब भी हैं कि जिन के दिल तो हैं लेकिन वोह समझ बूझ से क़ासिर हैं, ऐसों को क़ुरआने करीम ने जानवरों से बदतर फ़रमाया है।[21]

अन्धे दिल

दुन्या में हर त़रफ़ क़ुदरते इलाही के बे शुमार नज़ाइर देखने के बा वुजूद जो लोग रब्बुल इ़ज़्ज़त की वह़दानिय्यत के मुन्किर हैं, उन के दिल सिर्फ़ बे अ़क़्ल नहीं बल्कि अन्धे हैं। रब तआ़ला ने फ़रमाया कि "आंखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वोह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।"[22]

ह़क़ से फिरे हुए दिल

जो बद नसीब अल्लाह का कलामे पाक नाज़िल होने पर बजाए उसे सुनने और समझने के आपस में सरगोशियां करते और क़ुरआने करीम से मुंह फैर लेते थे, अल्लाह करीम ने उन के दिलों को ही ह़क़ से फैर दिया और ऐसा फैरा कि वोह ह़क़ बात समझ ही नहीं सकते।[23]

निफ़ाक़ भरे दिल

मुनाफ़िक़ीन जो कि मुसलमानों को धोका भी देते थे और ठट्ठा भी करते थे, लेकिन ह़ालत येह थी कि डरते भी रहते कि कहीं क़ुरआन की कोई सूरत उन के बारे में न आ जाए, रब्बे करीम ने उन की सब अस्लिय्यत अपने ह़बीब को बता दी और उन के दिलों में क़ियामत तक के लिए निफ़ाक़ भर दिया गया।[24]

ग़ैर मुत्तह़िद दिल

काफ़िरों के दिलों की एक कैफ़िय्यत येह है कि वोह आपस में ही ग़ैर मुत्तह़िद हैं, अहले ईमान को कुफ़्फ़ार की ह़क़ीक़त से आगाह करते हुए फ़रमाया गया "येह सब मिल कर भी तुम से न लड़ेंगे मगर क़ल्आ़ बन्द शहरों में या धुसों (दीवारों) के पीछे आपस में उन की आंच सख़्त है तुम उन्हें एक जथ्था (जमाअ़त) समझोगे और उन के दिल अलग अलग हैं येह इस लिए कि वोह बे अ़क़्ल लोग हैं।"[25]

मोह़तरम क़ारेईन ! क़ुरआने करीम से कुफ़्फ़ार, मुशरिकीन और मुनाफ़िक़ीन के दिलों की कैफ़िय्यात का कुछ ह़िस्सा बयान किया गया है, हमें चाहिए कि उन तमाम बातों, आमाल, नज़रिय्यात और एतिक़ादात से दूर रहें जो दिलों के मुर्दा होने का सबब बनते हैं।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें क़ुरआने करीम की ग़ौर और तफ़क्कुर के साथ तिलावत करने और इस के पैग़ाम को आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ6، النسآء:155 (2) پ11، یونس:74 (3) پ10، التوبۃ:93 (4) پ14، النحل:106 تا 108 (5) پ21، الروم:58، 59 (6) پ24، المؤمن:35 (7) پ26، محمد:16 (8) پ25، الجاثیۃ:23 (9) پ1، البقرۃ:72 تا 74 (10) پ7، الانعام: 42 تا 44 (11) پ27، الحدید:16 (12) پ6، المآئدۃ:13 (13) پ23، الزمر: 22 (14) پ26، محمد:24 (15) پ15، بنی اسرآءیل:45، 46 (16) پ15، الکہف:57 (17) پ7، الانعام:25 (18) پ6، النسآء:155- پ24، حٰمٓ السجدۃ: 5- پ1، البقرۃ:88 (19) پ30، المطففین:13، 14 (20) پ4، اٰل عمران:151- پ9، الانفال:10 تا 12- پ22، الاحزاب:26- پ28، الحشر:2- پ23، الزمر:45 (21) پ9، الاعراف:179 (22) پ17، الحج:46 (23) پ11، التوبۃ:127 (24) پ11، التوبۃ:77 (25) پ28، الحشر:14۔

तंगदस्तों पर आसानी करो

मुस्लिम शरीफ़ में है : ख़ातमुन्नबिय्यीन जनाबे रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

مَنْ يَسَّرَ عَلٰى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ[1]

लफ़्ज़ी तर्जमा : مَنْ يَسَّرَ जो आसानी पैदा करे, عَلٰى مُعْسِرٍ तंगी वाले पर, يَسَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِ आसानी देगा अल्लाह उसे, فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ दुन्या और आख़िरत में।

बा मुहावरा तर्जमा : जो किसी तंगदस्त के लिए आसानी पैदा करेगा, अल्लाह पाक उस के लिए दुन्या और आख़िरत में आसानी पैदा करेगा।

शर्हे हदीस

इस हदीसे पाक में बुन्यादी तौर पर (Basically) दो बातों का बयान है :

1. तंगदस्त के लिए आसानी पैदा करने का
2. आसानी पैदा करने वाले को मिलने वाले इन्आम का

हम इन दोनों को अलग अलग तफ़्सील से बयान करते हैं :

तंगदस्त (Poor) से मुराद वोह शख़्स है जो क़र्ज़ की अदाएगी या अपनी ग़रीबी वग़ैरा की वजह से परेशान हो, अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी, अल्लामा मुल्ला अली क़ारी और दीगर शारेहीन رحمۃ اللہ علیہم ने तंगदस्त में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों को शामिल किया है।[2]

आसानी पैदा करने की तीन सूरतें

आसानी पैदा करने की 3 सूरतें मुम्किन हैं :

1. मक़रूज़ दो क़िस्म के हो सकते हैं, एक वोह जिस ने आप का क़र्ज़ा देना है और दूसरा वोह जिस ने किसी और का क़र्ज़ा देना है।

अगर उस ने आप का क़र्ज़ा देना है तो उसे क़र्ज़ की अदाएगी की तारीख़ आने के बा वुजूद मोहलत दे दीजिए, अगर बड़ी रक़म हो तो उस की सहूलत के मुताबिक़ क़िस्तों में तक़्सीम कर दीजिए, या फिर उस का मुकम्मल या थोड़ा क़र्ज़ ही मुआफ़ कर दीजिए।[3] इन कामों से मक़रूज़ की ज़िन्दगी कैसी आसान होगी ! और वोह किस तरह टेन्शन फ़्री हो जाएगा इस का अन्दाज़ा करना हो तो ख़ुद को मक़रूज़ की जगह रख कर देखिए।

क़ुरआनी तरग़ीब

तंगदस्त को मोहलत देने के बारे में क़ुरआने करीम में है :

﴿وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ(۲۸۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिए और भला है अगर जानो।[4]

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़र्ज़दार अगर तंगदस्त या नादार हो तो उस को मोहलत देना या क़र्ज़ का जुज़्व या कुल (Part or total) मुआफ़ कर देना सबबे अज्रे अज़ीम है।

अ़र्श का साया मिलेगा

आप को इस अ़मल के बदले में दीगर फ़ज़ाइल के साथ साथ मैदाने मेह़शर की तपती धूप में कैसी राह़त मिलेगी ! इस के लिए येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ लीजिए : जो किसी तंगदस्त को मोहलत दे या उस का क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे तो अल्लाह तआ़ला उसे उस दिन अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा कि जिस दिन अ़र्श के साए के इलावा कोई साया न होगा ।(5)

मक़रूज़ पर नर्मी करने वाला बख़्शा गया

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक शख़्स ने कभी कोई नेक काम न किया था, अलबत्ता ! वोह लोगों को क़र्ज़ दिया करता और अपने नौकरों से कहा करता : "मक़रूज़ के लिए जितना क़र्ज़ा अदा करना आसान हो उतना ले लेना और जितना अदा करना मुश्किल हो उतना छोड़ देना, ऐ काश ! हमारा रब भी हम से दरगुज़र फ़रमाए ।" जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो अल्लाह पाक ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तू ने कभी कोई नेकी भी की ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं, अलबत्ता ! मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और जब अपने ख़ादिम को क़र्ज़ की वुसूली के लिए भेजता तो उसे कहा करता था कि जितना आसान हो उतना ले लेना जितना मुश्किल हो उतना छोड़ देना, हो सकता है कि अल्लाह पाक हम से भी दरगुज़र फ़रमाए ।" तो अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तुम्हें बख़्श दिया ।"(6)

सारा क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ जा रहा था कि एक शख़्स आप को देख कर छुप गया और दूसरा रास्ता इख़्तियार किया । जब आप को मालूम हुवा तो आप ने उसे पुकारा, वोह आया तो पूछा कि तुम ने रास्ता क्यूं बदल दिया ? और क्यूं छुप गए ? उस ने अ़र्ज़ की : "मैं आप का मक़रूज़ हूं, मैं ने आप को दस हज़ार दिरहम देने हैं जिस को काफ़ी अ़र्सा गुज़र चुका है और मैं तंगदस्त हूं, आप से शरमाता हूं ।" इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ मेरी वजह से तुम्हारी येह ह़ालत है, जाओ ! मैं ने सारा क़र्ज़ तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया । मैं ने अपने आप को अपने नफ़्स पर गवाह किया । अब आइन्दा मुझ से न छुपना, और सुनो जो ख़ौफ़ तुम्हारे दिल में मेरी वजह से पैदा हुवा मुझे वोह भी मुआ़फ़ कर दो ।"(7)

क़ारेईन ! दूसरी क़िस्म का मक़रूज़ (Debtor) वोह है जिस ने किसी और का क़र्ज़ा देना है, ऐसे में आप उसे यूं आसानी दे सकते हैं कि उस का क़र्ज़ मुकम्मल या कुछ ह़िस्सा अदा कर दीजिए (जैसे मह़ल्ले की परचून या दूध दही की दुकान से उस का खाता मालूम कर के क्लियर करवा दीजिए) या क़र्ज़ ख़्वाह (क़र्ज़ वुसूल करने वाले) से उस की क़िस्तें बनवा कर अदाएगी अपने ज़िम्मे ले लीजिए अगर आप उन में से कुछ भी नहीं कर सकते तो कम अज़ कम क़र्ज़ ख़्वाह से मक़रूज़ के लिए इन आसानियों की फ़राहमी की सिफ़ारिश ही कर दीजिए ।(8)

2 ग़रीब को आसानी यूं फ़राहम की जा सकती है कि उस की ग़ुर्बत का सबब दूर कर दिया जाए मसलन वोह बे रोज़गार है तो उसे जॉब दिला दीजिए, उस की सलाह़िय्यत (Ability) के मुत़ाबिक़ छोटा मोटा कारोबार, फलों का ठेला या बर्गर या चिप्स केबिन वग़ैरा शुरूअ़ करवा दीजिए ताकि उसे फ़ौरी रीलीफ़ मिले, आप की ज़रा सी तवज्जोह उसे ग़ुर्बत से निकलने में मदद दे सकती है ।

3 सैलाब या ज़लज़ले या आग लगने के सबब परेशान ह़ालों को परेशानी या दुश्वारी से निकलने के लिए किसी सहारे की तलाश होती है, अगर आप ह़स्बे हैसिय्यत ऐसों का सहारा बन जाएंगे तो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां आप का मुक़द्दर होंगी ।

GNRF

रफ़ाही व फ़लाही कामों के लिए दावते इस्लामी का एक डिपार्टमेन्ट GNRF है जिस की माहिर टीम बीमारी, ग़ुर्बत, बे रोज़गारी, क़ुदरती आफ़ात और बह़रानों से नजात दिलाने के लिए सरगर्मे अ़मल है । GNRF का वसीअ़ नेटवर्क 65 से ज़ाइद मुमालिक में फैला हुवा है । आप भी GNRF के कामों में माली व अ़मली सपोर्ट कर के आसानी फ़राहम करने का सवाब कमा सकते हैं ।

GNRF की ख़िदमात की तफ़्सील दावते इस्लामी की वेब साइट gnrf.in पर देखी जा सकती हैं।

आसानी पैदा करने वाले को मिलने वाला इन्आ़म

(Reward to the Facilitator)

मज़्मून के आग़ाज़ में लिखी गई ह़दीसे पाक में आसानी पैदा करने वाले का इन्आ़म येह बयान हुवा कि अल्लाह पाक दुन्या और आख़िरत में उस के लिए आसानी पैदा करेगा। क्या क्या आसानी मिल सकती है ? इस का बयान इमाम मुनावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने किया कि दुन्या में उस का रिज़्क़ वसीअ़ हो जाएगा, मुश्किलात में उस की ह़िफ़ाज़त होगी और उसे नेक कामों में मदद मिलेगी और आख़िरत में उस का ह़िसाब आसान होगा, अ़ज़ाब से नजात की खुश ख़बरी मिलेगी, इन के इलावा भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह कई क़िस्म के शरफ़ पाएगा।[9]

आख़िरी बात

इस फ़रमाने रसूल पर अ़मल करने के लिए हमें शायद मशक़्क़त ज़ियादा न उठानी पड़े लेकिन इन्आ़म बहुत बड़ा है, इस लिए आज और अभी से अ़मल शुरूअ़ कर देना चाहिए। अपने इर्द गिर्द नज़र दौड़ाइए शायद कोई तंगदस्त आसानी चाहता हो, आप उसे आसानी दे कर इस फ़ज़ीलत को ह़ासिल कीजिए। अल्लाह पाक हमें इस्लामी तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

---

(1) مسلم، ص1110، حدیث: 6853(2) دیکھئے: فیض القدیر شرح جامع صغیر، 316/6، تحت الحدیث: 9108، مرقاۃ المفاتیح، 1/454، مرأۃ المناجیح، 1/189 (3) دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 1/454(4)پ3، البقرۃ:280(5)ترمذی، 3/52، حدیث:1310(6)مسند امام احمد، 3/285، حدیث:8738(7)مناقب الامام الاعظم ابی حنیفہ، 1/260 (8) دیکھئے: فیض القدیر شرح جامع صغیر، 316/6، تحت الحدیث:9108(9)دیکھئے: فیض القدیر شرح جامع صغیر، 316/6، تحت الحدیث:9108۔

वोह नबियों में उम्मी लक़ब पाने वाले

अल्लाह पाक ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुख़्तलिफ़ मोजिज़ात, कमालात और ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा, जब कि हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जामेउ़स्सिफ़ात वल मोजिज़ात बनाया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह करीम ने ऐसी कई ख़ूबियां और ख़ासिय्यतें अ़ता फ़रमाईं जो पहले किसी नबी व रसूल को अ़ता न हुईं, उन्ही ख़साइस में से आप का एक अ़ज़ीम लक़ब **"उम्मी"** भी है । अल्लाह करीम ने कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया व रुसुल भेजे, उन्हें इ़ल्म दिया, उन्हें सिखाया, पढ़ाया, उन्हें इ़ल्म के एतिबार से दुन्या में किसी का मोहताज न रखा, लेकिन इस के बा वुजूद "उम्मी" लक़ब सिर्फ़ हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही को अ़ता फ़रमाया ।

"नबिय्ये उम्मी" और कुरआने पाक : अल्लाह के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह सिफ़ाती नाम कुरआने पाक की दो आयाते मुबारका में है :

1 ﴿اَلَّذِیْنَ یَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِیَّ الْاُمِّیَّ الَّذِیْ یَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِیْلِ ۫﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ग़ुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े ग़ैब की ख़बरें देने वाले की जिसे लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में[1]

2 ﴿فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ(۱۵۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उस की बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ ।[2]

लफ़्ज़ "उम्मी" की वज़ाहत कुरआन की रौशनी में : इमाम अबू मन्सूर मुहम्मद बिन महमूद मातुरीदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उम्मी का मफ़्हूम वोह है जो दूसरी आयत में मौजूद है चुनान्चे अल्लाह पाक का इरशाद है :

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ(۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इस से पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते ।[3][4]

लफ़्ज़ "उम्मी" की वज़ाहत तफ़ासीर की रौशनी में : तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इमाम अ़ली बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयत की तफ़्सीर में लिखते हैं : क़ुरआने पाक के नाज़िल होने से पहले तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे अगर आप लिखते या पढ़ते तो ज़रूर अहले किताब कहते कि हमारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की सिफ़त येह मज़्कूर है कि "वोह उम्मी होंगे न लिखेंगे न पढ़ेंगे, ह़ालांकि येह तो वोह नहीं।" या मक्का के मुशरिकीन येह एतिराज़ करते कि हो सकता है तुम ने क़ुरआन को लोगों से सीख कर अपने हाथ से लिखा हो।[5]

अ़ल्लामा सय्यिद महमूद आलूसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल क़ुरा यानी मक्का के रहने वाले थे इस लिए आप को उम्मी फ़रमाया और येह क़ौल इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रफ़ मन्सूब है। अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उम्मी सिफ़त से मौसूफ़ फ़रमाया गया ताकि इस बात पर तम्बीह हो जाए कि अल्लाह के नबी उम्मी होने के बा वुजूद कामिल इ़ल्म रखते हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मी होना आप के मोजिज़ात में से एक मोजिज़ा है और बाक़ी किसी के लिए उम्मी होना बाइसे फ़ज़ीलत नहीं जैसा कि तकब्बुर का लफ़्ज़ सिर्फ़ अल्लाह पाक के लिए बाइसे तारीफ़ है और मख़्लूक़ के लिए बुराई है।[6]

इमाम अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नक़्ल फ़रमाते हैं : नबिय्ये उम्मी वोह अ़ज़ीम शख़्सिय्यत हैं जिन्हें दुन्या की कोई चीज़ भी ऐ़बदार नहीं कर सकती। उम्मी वोह हस्ती है जो दुन्या और आख़िरत में वोह कुछ जानता है जो उसे उस के रब ने सिखाया।[7]

"नबिय्ये उम्मी" को किस ने पढ़ाया ? अल्लाह पाक अपने नबी के उ़लूम के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया।[8]

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ(۵) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आदमी को सिखाया जो न जानता था।[9]

اَلرَّحْمٰنُۙ(۱) عَلَّمَ الْقُرْاٰنَؕ(۲) خَلَقَ الْاِنْسَانَۙ(۳) عَلَّمَهُ الْبَیَانَ(۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रह़मान ने अपने मह़बूब को क़ुरआन सिखाया, इन्सानिय्यत की जान मुह़म्मद को पैदा किया, مَاکَانَ وَمَا یَکُوْن* का बयान उन्हें सिखाया।[10]

"नबिय्ये उम्मी" और मक़्सदे नबुव्वत व रिसालत : आ़म लोगों के ह़क़ में उम्मी होना ऐ़ब है जब कि अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में उम्मी होना हर ऐ़ब से पाक, क़ाबिले तारीफ़ और कामिल इ़ल्म वाला होने पर दलालत करता है नीज़ अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मी होना आप के ह़क़ में अल्लाह पाक की त़रफ़ से एक मोजिज़ा है जैसा कि तफ़ासीर में बयान हुवा। अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में उम्मी होने को ऐ़ब बताना नबुव्वत और रिसालत के मक़ासिद से ला इ़ल्म होने और गुमराही का नतीजा है क्यूंकि मन्सबे नबुव्वत और रिसालत इ़ल्म से कभी ख़ाली नहीं हो सकता, मन्सबे नबुव्वत और रिसालत तो बहुत अरफ़अ़ व आला है जब कि अल्लाह पाक मन्सबे विलायत भी बे इ़ल्म को नहीं देता। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मुअ़ल्लिमे काइनात हैं लोगों को तालीम देते, उन्हें पाक और सुथरा फ़रमाते हैं चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ یَتْلُوْا عَلَیْهِمْ اٰیٰتِهٖ وَ یُزَكِّیْهِمْ وَ یُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَۚ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ(۱۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह का बड़ा एह़सान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता और उन्हें किताब व ह़िक्मत सिखाता है और वोह ज़रूर इस से पहले खुली गुमराही में थे।[11]

"नबिय्ये उम्मी" के तशरीफ़ लाने से पहले अहले अ़रब की ह़ालत : अल्लाह के नबी

* यानी माज़ी, ह़ाल और मुस्तक़्बिल

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद से पहले अहले अ़रब की बहुत बुरी ह़ालत थी, कुफ़्रो शिर्क, फ़िस्को फ़ुजूर, क़त्लो ग़ारत गिरी, डाका ज़नी और जहालत सरे आ़म थी, क़बीलों के दरमियान कई सदियों पर मुह़ीत़ लड़ाई नस्ल दर नस्ल जारी रहती लेकिन अल्लाह के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसी क़ौम के अफ़राद को अपनी तालीमो तरबियत से उ़लूम व कमाल और इन्सानिय्यत के उ़रूज तक पहुंचाया और आपस में शीरो शकर कर दिया।

''नबिय्ये उम्मी'' की तालीमो तरबियत की बरकात : अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्लाम की तब्लीग़ और अपनी उम्मत की इस्लाह़ का काम इतनी ख़ूबी से अन्जाम दिया कि रहती दुन्या तक आप का येह काम याद रखा जाएगा, जो मुसलमान सिद्क़े दिल से उस बारगाह में ह़ाज़िर हुवा उ़लूम और बरकात समेट कर गया, अल्लाह के नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी तालीमो तरबियत से मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सदाक़त, दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दीन में सलाबत (यानी मज़बूती) तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़या और सख़ावत और चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शुजाअ़त और अ़दालत का मेयार बनाया। ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़िराअत, मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़र व इबाह़त (यानी ह़लालो ह़राम), ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इ़ल्मे विरासत का न सिर्फ़ आ़लिम बल्कि आलम (यानी सब से बड़ा आ़लिम) बनाया, येह सब ह़क़ीक़त में उसी उम्मी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त ''उम्मी'' ही की जल्वा गरी है कि आज तक़रीबन 14 सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद उ़लूम के मम्बअ़ व सर चश्मा वोही प्यारी ज़ात है। अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म शरीफ़ के बारे में इमाम बूसैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا
وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

तर्जमा : दुन्या और आख़िरत नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत का एक क़त़रा है जब कि लोह़ो क़लम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूम का कुछ ह़िस्सा है।

उम्मी होना एक मोजिज़ा : अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : उम्मी होना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़क़ में मोजिज़ा है अगर्चे आप के इ़लावा दीगर लोगों में येह ऐ़ब और ख़ामी है। अ़ल्लामा क़ाज़ी इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शिफ़ा शरीफ़ में लिखते हैं : मोजिज़ाते नबवी में अहम और अ़ज़ीम तरीन मोजिज़ा कुरआने ह़कीम है जो मआ़रिफ़ और उ़लूम को शामिल व ह़ावी है और इस में वोह फ़ज़ाइलो शमाइल हैं कि जिन के ज़रीए़ अल्लाह पाक ने हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام की तारीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाई और येह तअ़ज्जुब की बात है जिस शख़्स ने न दुन्या में किसी से पढ़ा हो, न कभी कुछ लिखा हो न किसी मद्रसे में किसी उस्ताद के सामने ज़ानूए अदब तेह किए हों उन से ऐसे कारनामों का इज़हार तअ़ज्जुब है इस त़रह़ के उम्मी होने में कोई तौहीन नहीं बल्कि इसे मोजिज़ात में शुमार किया जाएगा।

उम्मी नाम की ह़िक्मतें : अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस सिफ़त ''उम्मी'' की बड़ी प्यारी ह़िक्मतें नक़्ल कीं जिन में से चन्द येह हैं : 1 अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखते तो आप की तेह़रीर मुबारक बसा औक़ात ऐसे लोगों के हाथों तक पहुंच जाती जो उसे न पहचानते और उस की ताज़ीम उस त़रह़ न करते जिस त़रह़ करने का ह़क़ है।

2 तेह़रीर उस शख़्स के लिए वसीला है जो ह़िफ़्ज़ न कर सकता हो जैसे लाठी नाबीना के लिए चलने का आला है। (अल्लाह पाक ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वोह अ़ज़ीम कुव्वते ह़ाफ़िज़ा अ़त़ा फ़रमाया कि लिखने के मोह़ताज ही न थे।)

3 एक ह़िक्मत येह भी है कि जिसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद बयान किया चुनान्चे फ़रमाया :

لَا اُرِيْدُ الْخَطَّ لِاَنَّ ظِلَّ الْقَلَمِ يَقَعُ عَلٰى اِسْمِ اللّٰهِ تَعَالٰى

यानी मैं तेह़रीर को नहीं चाहता क्यूंकि क़लम का साया अल्लाह पाक के इस्म पर पड़ता है। अल्लाह पाक ने आप के इस अदबो एह़तिराम की येह जज़ा दी कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साए को ज़मीन से उठा दिया ताकि उस पर किसी का क़दम न पड़े, इस लिए आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया न था।

4 रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस लिए नहीं लिखा ताकि क़लम अल्लाह पाक के इस्मे पाक के ऊपर न पड़े। अल्लाह पाक ने आप को इस की जज़ा अ़ता फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया :

لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ [12]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से।[13]

उम्मी नाम के फ़वाइद : शैख़ुल ह़दीस अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **"सीरते मुस्त़फ़ा"** में ज़िक्र करते हैं : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मी लक़ब होने का ह़क़ीक़ी राज़ क्या है ? इस को तो ख़ुदा वन्दे अ़ल्लामुल ग़ुयूब के सिवा और कौन बता सकता है ? लेकिन ब ज़ाहिर इस में चन्द ह़िक्मतें और फ़वाइद मालूम होते हैं :

1 तमाम दुन्या को इ़ल्मो ह़िक्मत सिखाने वाले ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्ताद सिर्फ़ ख़ुदा वन्दे आ़लम ही हो, कोई इन्सान आप का उस्ताद न हो ताकि कभी कोई येह न कह सके कि पैग़म्बर तो मेरा पढ़ाया हुवा शागिर्द है।

2 कोई शख़्स कभी येह ख़याल न कर सके कि फ़ुलां आदमी ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस्ताद था तो शायद वोह ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा इ़ल्म वाला होगा।

3 ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में कोई येह वहम भी न कर सके कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि पढ़े लिखे आदमी थे इस लिए उन्हों ने ख़ुद ही क़ुरआन की आयतों को अपनी त़रफ़ से बना कर पेश किया है और क़ुरआन उन्हीं का बनाया हुवा कलाम है।

4 जब ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी दुन्या को किताब व ह़िक्मत की तालीम दें तो कोई येह न कह सके कि पहली और पुरानी किताबों को देख देख कर इस क़िस्म की अनमोल और इन्क़िलाब आफ़रीं तालीमात दुन्या के सामने पेश कर रहे हैं।

5 अगर ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई उस्ताद होता तो आप को उस की ताज़ीम करनी पड़ती, ह़ालांकि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ालिक़े काइनात ने इस लिए पैदा फ़रमाया था कि सारा आ़लम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम करे, इस लिए अल्लाह पाक ने इसे गवारा नहीं फ़रमाया कि मेरा मह़बूब किसी के आगे ज़ानूए तलम्मुज़ तेह करे और कोई उस का उस्ताद हो।[14] (واللہ تعالٰی اعلم)

मौलाना जामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

نگارِ مَن کہ بہ مکتب نرفت وخط ننوشت
بغمزہ سبق آموز صد مدرس شد [15]

यानी मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न कभी मद्रसे गए, न लिखना सीखा मगर अपनी आंख और अब्रू के इशारे से सेंकड़ों असातिज़ा को सबक़ पढ़ाया।

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ऐसा उम्मी किस लिए मिन्नत कशे उस्ताज़ हो
क्या किफ़ायत उस को اقرأ وربك الاكرم नहीं

शर्ह़ : यानी नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी उस्ताद का एह़सान मन्द होने की क्या ज़रूरत है जिसे उस का रब्बे करीम ख़ुद पढ़ाए सिखाए।[16]

अल्लाह पाक हमें हमेशा अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वफ़ादार, उन की इ़ज़्ज़त का रखवाला और पहरेदार बनाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ9، الاعراف:157 (2) پ9، الاعراف:158 (3) پ21، العنکبوت:48 (4) تفسیر ماتریدی، 5/54 (5) تفسیر خازن، 3/453 (6) روح المعانی، الجزء:9، ص107 (7) تفسیر سلمی، 1/246 (8) پ30، العلق:1 (9) پ30، العلق:5 (10) پ27، الرحمٰن:1تا4 (11) پ4، اٰلِ عمرٰن:164 (12) پ26، الحجرات:2 (13) الریاض الانیقہ، ص119 (14) سیرت مصطفٰی، ص85، 86 (15) سیرت مصطفٰی، ص85 (16) شرح حدائق بخشش، ص267۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 पालतू जानवर देख भाल में कोताही की वजह से मर जाए तो ?

सुवाल : अगर पालतू परिन्दे या जानवर देख भाल में कोताही की वजह से मर जाएं तो उन का क्या कफ़्फ़ारा होगा ?

जवाब : देख भाल में कोताही करने वाला गुनाहगार होगा कि उस ने उन पर ज़ुल्म किया है, लिहाज़ा उसे चाहिए कि वोह अल्लाह पाक की बारगाह में सच्ची तौबा करे, उस पर कफ़्फ़ारा नहीं है।

2 नमाज़ में हंसी आ जाए तो क्या करें ?

सुवाल : नमाज़ में जब कोई ख़याल आए या ऐसी कैफ़िय्यत बन जाए जिस से इन्सान हंसने पर मजबूर हो जाए और हंसी कन्ट्रोल नहीं हो रही हो तो क्या इस सूरत में नमाज़ तोड़ सकते हैं ?

जवाब : नमाज़ तोड़ने की इजाज़त नहीं है बल्कि हंसी रोकने की ताकीद है कि हंसी रोके। अगर बालिग़ को जागते में रुकूअ़ सज्दे वाली नमाज़ में उतनी आवाज़ से हंसी आ गई कि आस पास वाले सुनें तो वुज़ू भी टूटा और नमाज़ भी टूट गई।[1] (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/308)

3 इस्लाम की मुफ़्तिया

सुवाल : क्या इस्लामी बहनें मुफ़्तिया बन सकती हैं, क्या इस्लाम में कोई मुफ़्तिया है ?

जवाब : जी हां ! बिल्कुल बन सकती हैं, और इस्लाम में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बहुत ज़बरदस्त मुफ़्तिया थीं। इस्लामी बहनों को भी मुफ़्तिया बनने की कोशिश करनी चाहिए, न भी बन पाएं तो इ़ल्मे दीन बहुत सारा ह़ासिल हो जाएगा। दावते इस्लामी के तह़त चलने वाले जामिअ़तुल मदीना (गर्ल्स) में भी इस्लामी बहनों को तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह (यानी मुफ़्तिया कोर्स) करवाया जाता है।

4 क्या पिछली उम्मतों से क़ब्र के सुवालात होते थे ?

सुवाल : क्या पिछली उम्मतों में भी क़ब्र के सुवालात होते थे, अगर होते थे तो कौन कौन से सुवालात होते थे ?

जवाब : पिछली उम्मतों के मुतअ़ल्लिक़ क़ब्र के सुवालात के बारे में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है, फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत, जिल्द 1, सफ़ह़ा नम्बर 280 पर है : अगली उम्मतों से सुवाले क़ब्र के बारे में इख़्तिलाफ़ है, अ़ल्लामा इब्ने

(1) बहारे शरीअ़त में है : अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि ख़ुद उस ने सुना, पास वालों ने न सुना तो वुज़ू नहीं जाएगा नमाज़ जाती रहेगी। अगर मुस्कुराया कि दांत निकले आवाज़ बिल्कुल नहीं निकली तो उस से न नमाज़ जाए न वुज़ू। (बहारे शरीअ़त, 1/308,309)

आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه तेह़रीर फ़रमाते हैं कि अगली उम्मतों से क़ब्र में सुवाल होता ही न था जैसा कि रद्दुल मुह़तार, जिल्द 1, सफ़्ह़ा नम्बर 572 पर लिखा है :

اَنَّ الرَّاجِحَ اَیْضًا اِخْتِصَاصُ السُّؤَالِ بِهٰذِهِ الْاُمَّةِ

यानी राजेह़ (यानी ज़ियादा मज़्बूत़) बात येह है कि सुवालाते क़ब्र भी इस उम्मत (यानी उम्मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ख़ुसूसिय्यात में से है।

बाज़ उ़लमा के नज़्दीक अगली उम्मतों से क़ब्र में रब की वह़्दानिय्यत (यानी अल्लाह पाक के एक होने) के बारे में सवाल किया जाता था।

5 क़ब्र पर पौदा लगाना कैसा ?

सुवाल : क़ब्र पर पौदा लगाना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : क़ब्र पर छोटे छोटे पौदे लगाए जा सकते हैं लेकिन इस की वजह से क़ब्र को तोड़ा नहीं जाए, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अच्छी निय्यत से लगाएंगे तो सवाब मिलेगा, निय्यत येह हो कि इस से मय्यित का दिल बहलेगा क्यूंकि तर घास अल्लाह पाक की पाकी बयान करती है जिस से मय्यित के अ़ज़ाब में कमी आती है और उस का दिल बहलता है।

6 अपने मर्ह़ूमीन की क़ब्रों पर प्याले रखना कैसा ?

सुवाल : बाज़ लोगों ने अपने मर्ह़ूमीन की क़ब्रों पर प्याले रखे होते हैं जिस में वोह पानी डाल देते हैं कि परिन्दे वग़ैरा पानी पिएंगे तो इस का सवाब मय्यित को पहुंचेगा। क्या येह तसव्वुर दुरुस्त है और क्या वाक़ेई इस का सवाब मय्यित को पहुंचता है ?

जवाब : ह़दीसे पाक में है कि हर तर जिगर में अज्र है। (بخاری،4/103،حدیث:6009) यानी परिन्दों को भी पानी पिलाना, दाने खिलाना सवाब का काम है, लेकिन क़ब्र के ऊपर प्याला वग़ैरा न रखा जाए बल्कि क़ब्र से हट कर प्याला वग़ैरा बनाया जाए और उस की देख भाल भी होती रहे, उस में पानी डलता रहे और परिन्दे पीते रहें तो यूं ईसाले सवाब की सूरत बनेगी जब कि ईसाले सवाब की निय्यत की गई हो।

7 मुक़ीम इमाम के पीछे मुसाफ़िर क़सर नमाज़ पढ़ेगा या पूरी ?

सुवाल : मुसाफ़िर मुक़ीम इमाम के पीछे ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रहा हो और मुसाफ़िर की दो रक्अ़तें निकल जाएं तो फिर वोह क़सर पढ़ेगा या पूरी चार पढ़ेगा ?

जवाब : अगर कोई मुसाफ़िर, मुक़ीम इमाम के पीछे चार रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ता है तो अब उस को पूरी चार रक्अ़त ही पढ़नी होगी, अगर्चे दो रक्अ़तें निकल गई हों, पूरी चार ही पढ़ेंगे।

8 आस्तीन से मुंह साफ़ करना कैसा ?

सुवाल : वुज़ू करने के बाद आस्तीन से पानी साफ़ करना कैसा है ?

जवाब : बदन पर पहने हुए कपड़ों से वुज़ू का पानी साफ़ करना या वैसे ही हाथ मुंह पोंछना, मुनासिब नहीं है, ऐसा करने से ह़ाफ़िज़ा कमज़ोर होता है। (الکشف والبیان،ص31) अलबत्ता येह शरअ़न गुनाह नहीं है।

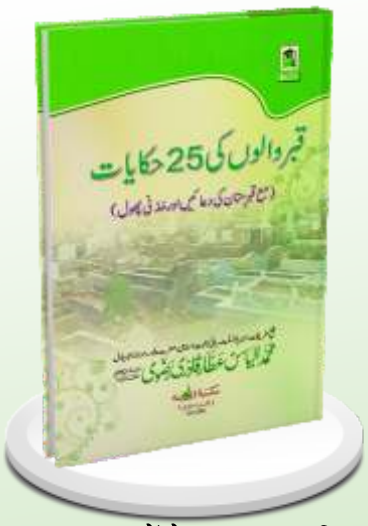

मरने के बाद क़ब्र वालों के ह़ालात व वाक़िआ़त पर मुश्तमिल 25 ह़िकायात और क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के आदाब जानने के लिए रिसाला "क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात" का मुत़ालआ़ कीजिए।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 जादू से हिफ़ाज़त के लिए ऊंट की हड्डी रखना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ लोग येह कहते हैं कि घर में ऊंट की हड्डी रखने से जादू वग़ैरा असर नहीं करता तो क्या घर में ऊंट की हड्डी रख सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जादू वग़ैरा के असर से बचने के लिए घर में ऊंट की हड्डी रखना शरअ़न जाइज़ है, इस में शरअ़न कोई ह़रज नहीं कि येह जादू वग़ैरा से हिफ़ाज़त का एक टोटका है और हर वोह टोटका जो शरीअ़ते मुत़ह्हरा से टकराता न हो, वोह करना जाइज़ है। नीज़ जिस त़रह़ दवाओं में किसी नक़्ली दलील की ज़रूरत नहीं होती मह़ज़ तजरिबा काफ़ी होता है इसी त़रह़ टोटकों में भी किसी नक़्ल की ज़रूरत नहीं होती, बस इतना ज़रूर है कि वोह शरीअ़ते मुत़ह्हरा की तालीमात के ख़िलाफ़ न हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 जमाअ़ते फ़ज्र के दौरान सुन्नतें पढ़ने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स कहता है कि जब फ़ज्र की नमाज़ हो रही हो तो फ़ज्र की सुन्नतें नहीं पढ़नी चाहिएं कि कुरआने पाक की क़िराअत सुनना फ़र्ज़ होता है। इस ह़वाले से शरीअ़त की क्या राहनुमाई है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

फ़ुक़हाए किराम ने अह़ादीसे त़य्यिबा की रौशनी और सह़ाबए किराम के मुबारक अ़मल से इस ह़वाले से जो हुक्म बयान फ़रमाया है वोह येह है कि फ़ज्र की जमाअ़त शुरूअ़ होने के बाद अगर जानता है सुन्नतें पढ़ने के बाद भी जमाअ़त मिल जाएगी तो पहले सुन्नतें पढ़े फिर जमाअ़त में शामिल हो मगर सुन्नतों के लिए जमाअ़त की सफ़ में खड़ा होना जाइज़ नहीं और अगर अन्दर जमाअ़त होती हो तो सह़न में पढ़े और सह़न में हो तो अन्दर पढ़े। और अगर उस मस्जिद में अन्दर बाहर दो दर्जे न हों तो सुतून वग़ैरा की आड़ में पढ़े कि उस के और सफ़ के दरमियान सुतून ह़ाइल हो जाए और ऐसी कोई जगह न मिले तो फिर सुन्नते फ़ज्र बिग़ैर पढ़े ही जमाअ़त में शामिल हो जाए और अगर सुन्नतों में मशग़ूलिय्यत से फ़ज्र की जमाअ़त फ़ौत होने का गुमान हो तो सुन्नतें पढ़ने की इजाज़त नहीं बल्कि उसे हुक्म है कि बिग़ैर सुन्नत पढ़े फ़ौरन जमाअ़त में शामिल हो जाए।

फ़ज्र की नमाज़ के इ़लावा दूसरी नमाज़ों में इक़ामत हो जाने के बाद अगर्चे येह मालूम हो कि सुन्नत पढ़ने के बाद भी जमाअ़त मिल जाएगी फिर भी सुन्नतें पढ़ने की इजाज़त नहीं बल्कि सुन्नत पढ़े बिग़ैर फ़ौरन ही जमाअ़त में शामिल हो जाना ज़रूरी है।

नीज़ मोतरिज़ का येह कहना कि "जब फ़ज्र की नमाज़ हो रही हो तो फ़ज्र की सुन्नतें नहीं पढ़नी चाहिए कि कुरआने पाक की क़िराअत सुनना फ़र्ज़ होता है" बिल्कुल भी दुरुस्त नहीं है और मुम्किन है मोतरिज़ को येह ग़लत् फ़ेहमी हुई हो कि कुरआने पाक की आवाज़ जिस तक जाए सब को सुनना फ़र्ज़ है जब कि ऐसा नहीं है क्यूंकि कुरआने पाक की क़िराअत के वक़्त जो अश्ख़ास सुनने की ग़रज़ से हों उन पर सुनना लाज़िम होता है न कि वोह सब जिन तक आवाज़ जा रही है। और नमाज़ की जमाअ़त में मुक़्तदी पर इक़्तिदा की वजह से सुनना लाज़िम होता है तो उस के सुनने से कुरआने पाक का येह ह़क़ अदा हो जाता है लिहाज़ा बक़िय्या अश्ख़ास जो मुक़्तदी नहीं हैं और सुनने की ग़रज़ से भी नहीं बैठे तो उन पर सुनना लाज़िम नहीं होता।

और फ़ुक़हाए किराम ने जमाअ़ते फ़ज्र के दौरान सफ़ के दरमियान में या सफ़ के पीछे बिला ह़ाइल सुन्नतें पढ़ने से मन्अ़ की वजह जमाअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी बताई है न कि वोह जो मोतरिज़ ने बयान की, कि कुरआने पाक सुनना सब पर फ़र्ज़ है लिहाज़ा उस शख़्स का येह मस्अला इस तफ़्सील के बिग़ैर बयान करना जो फ़ुक़हाए किराम ने बयान की है और अपनी मनमानी तौजीह के साथ बयान करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 तोह़फ़ा दे कर वापस लेने का ह़ुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद की चन्द साल पहले एक जगह मंगनी हुई थी तो मंगनी के बाद वोह उस दूसरे ख़ानदान वालों को मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़, मसलन ईद वग़ैरा पर नक़दी और कपड़े वग़ैरा अश्या बत़ौरे तह़ाइफ़ देते रहे अब उन की मंगनी टूट चुकी है, तो उन तोह़फ़े, तह़ाइफ़ को वापस लेने का क्या ह़ुक्म है ?

(**नोट :** साइल ने बताया कि तोह़फ़े देने लेने वाले दोनों ह़यात हैं और तह़ाइफ़ पर उन्हों ने क़ब्ज़ा भी कर लिया था और अभी बाज़ तह़ाइफ़ उन के पास मौजूद हैं और बाज़ ख़त्म (हलाक) हो चुके हैं, कुछ मिल्किय्यत से निकल चुके हैं और बाज़ तह़ाइफ़ में इज़ाफ़ा भी हो चुका है। और उन तह़ाइफ़ का बदल भी नहीं लिया।)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरअ़ की रू से मंगनी के बाद एक ख़ानदान वालों की त़रफ़ से दूसरे ख़ानदान वालों को दिए जाने वाले तोह़फ़े तह़ाइफ़ और कपड़े वग़ैरा हिबा के ह़ुक्म में हैं और हिबा का ह़ुक्म येह होता है कि अगर मवानेअ़ हिबा में से कोई मानेअ़ न पाया जाए, तो क़ाज़ी के फ़ैस्ले या बाहमी रिज़ामन्दी से वापस लेने का अगर्चे इख़्तियार होता है यानी वापसी दुरुस्त हो जाएगी, मगर वापस लेना मकरूहे तह़रीमी, नाजाइज़ व गुनाह है, कि ह़दीसे पाक में हिबा दे कर वापस लेने से मन्अ़ किया गया है और इसे कुत्ते की त़रह़ क़ै कर के फिर उसे चाटने की मिस्ल क़रार दिया गया है। और अगर कोई मानेअ़ पाया जाए मसलन, दोनों में से कोई एक फ़ौत हो जाए या उस का इवज़ ले लिया या उस में कुछ इज़ाफ़ा हो गया या उस की मिल्किय्यत से शै निकल गई या वोह शै हलाक हो गई या वोह दोनों मियां बीवी हों या जिसे तोह़फ़ा दिया वोह उस का ज़ी रह़म मह़रम रिश्तेदार हो तो उन चीज़ों को वापस नहीं लिया जा सकता।

इस तफ़्सील के बाद पूछी गई सूरत का जवाब येह है कि ज़ैद की त़रफ़ से मंगनी के बाद जो चीज़ें दूसरे ख़ानदान वालों को तोह़फ़े में दी गई थीं और उन की त़रफ़ से उन पर क़ब्ज़ा भी कर लिया गया था तो उन में से फ़क़त् उन चीज़ों को वापस लेने का इख़्तियार है जो अभी तक उन की मिल्किय्यत में मौजूद हैं और उन में कोई मुत्तसिल इज़ाफ़ा भी नहीं हुवा है, मगर वापस लेना मकरूहे तह़रीमी, नाजाइज़ व गुनाह है, फ़ लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

घर टूटने से कैसे बचाएं

1 किसी माक़ूल शरई सबब के बिग़ैर त़लाक़ देना येह इस्लाम में सख़्त ना पसन्दीदा है, जैसा कि ह़दीसे पाक में है : اَبْغَضُ الْحَلَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی اَلطَّلَاقُ यानी ह़लाल चीज़ों में ख़ुदा के नज़दीक ज़ियादा ना पसन्दीदा त़लाक़ है। (ابوداؤد، 2/370، حدیث:2178) जब कि त़लाक़ के कसीर मुआ़शरती नुक़्सानात इस के इ़लावा हैं। लिहाज़ा ह़त्तल इम्कान त़लाक़ देने से बचना ही चाहिए।

2 अगर मियां बीवी में नाचाक़ी हो जाए तो तअ़ल्लुक़ात बेहतर बनाने के लिए दीने इस्लाम की बयान कर्दा हिदायात पर अ़मल करते हुए आपस में सुल्ह़ की कोशिश करनी चाहिए। इस का त़रीक़ा येह है कि अगर बीवी की त़रफ़ से कोई ना मुनासिब रवय्या है तो शौहर बीवी को अच्छे अन्दाज़ में समझाए अगर इस त़रह़ मुआ़मला ह़ल न हो तो बीवी से चन्द दिनों के लिए बिस्तर अ़लाह़िदा कर ले और मक़्सद येह हो कि त़लाक़ के नतीजे में गुज़ारी जाने वाली ज़िन्दगी का एक नमूना (औ़रत के) सामने आ जाएगा जिस से एक चोट लगती है, क़वी इम्कान है कि उस से सबक़ ह़ासिल कर के दोनों आपस में सुल्ह़ कर लें।

3 अगर यूं भी सुल्ह़ न हो सके तो पारह नम्बर 5 सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 35 की हिदायत के मुत़ाबिक़ दोनों जानिब से समझदार और मुआ़मला फ़हम अफ़राद को ह़कम यानी मुन्सिफ़ (फ़ैसला करने वाला) बना लिया जाए ताकि वोह उन में सुल्ह़ करवा दें, अगर येह सुल्ह़ करवाने वाले अफ़राद अच्छी निय्यत और ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में कोशिश करेंगे तो अल्लाह पाक ज़ौजैन के दरमियान इत्तिफ़ाक़ पैदा फ़रमा देगा।

4 याद रखिए ! मियां बीवी के झगड़े का ह़ल येह नहीं है कि फ़ौरन त़लाक़ दे कर मुआ़मले को ख़त्म कर दिया जाए और बाद में अफ़्सोस के सिवा कुछ हाथ न आए, अलबत्ता अगर बाहमी तअ़ल्लुक़ात की ख़राबी इस ह़द तक पहुंच गई कि मियां बीवी येह समझते हों कि अब एक दूसरे के शरई ह़ुक़ूक़ अदा नहीं कर पाएंगे और त़लाक़ ही इस का आख़िरी ह़ल है तो फिर शौहर इस्लाम के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ त़लाक़ दे जैसा कि बहारे शरीअ़त में इस की तफ़्सील मौजूद है।

5 त़लाक़ का बुन्यादी सबब मियां बीवी के दरमियान ज़ेहनी हम आहंगी का फ़ुक़्दान है, एक दूसरे पर एतिमाद की कमी, एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने में कमी और एक दूसरे का एह़तिराम करने की कमी है।

6 मियां बीवी के दरमियान कोई तीसरा शख़्स उसी वक़्त लड़ाई भिड़ाई और जुदाई करवाता है जब उन दोनों में इख़्तिलाफ़ होता है अगर दोनों में इत्तिफ़ाक़ हो तो कोई उन्हें कैसे जुदा करवा सकता है।

7 मियां बीवी में पाई जाने वाली बुरी आ़दत जूते में लगी हुई कील की त़रह़ होती है जो अज़िय्यत देती है, अब कील वाला जूता पहन कर कोई कैसे चल सकता है, लिहाज़ा अगर दोनों ने चलना है तो उस कील यानी बुरी आ़दत को निकालना होगा।

8 घर जहां फ़राइज़ो वाजिबात (यानी हुक़ूक़) अदा करने से चलता है वहीं उ़र्फ़ व आ़दत और मुआ़शरती और अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने से भी चलता है।

9 अगर मियां बीवी शक करते हुए एक दूसरे का मोबाइल चेक करते हैं तो इस त़रह़ एतिमाद ख़त्म हो जाता और फिर (आपस में) दूरियां पैदा हो जाती हैं और घर चलाने के लिए एतिमाद एक बुन्यादी ईंट का किरदार अदा करता है और जब एतिमाद ही न रहा तो घर कैसे चल सकेगा।

10 अगर मियां बीवी में किसी से कोई ग़लती हो जाए तो अपनी ग़लती को मान लेना चाहिए और अगर दोनों में से किसी एक को ग़ुस्सा आ जाए तो दूसरे को चुप रहना चाहिए, अगर आए रोज़ बह़सो मुबाह़सा करेंगे तो एक दिन नौबत त़लाक़ तक पहुंच सकती है।

11 (वालिदैन को चाहिए कि) जब लड़की को रुख़्सत करें तो मुकम्मल तौ़र पर रुख़्सत कर दें और उन दोनों मियां बीवी के मुआ़मलात में बेजा मुदाख़लत न करें, रोज़ाना कॉल कर के बेटी के घर के ह़ालात मालूम न करें और बेटी को भी चाहिए कि अपनी मां को अपने सुसराल की पल पल की ख़बरें न पहुंचाए कि इस से घर टूटने से बचा रहेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।

12 लड़का लड़की दोनों के वालिदैन को अ़द्ल से काम लेना चाहिए कि अगर लड़की की ग़लती है तो मां बाप उस को बताएं कि बेटी ग़लती तेरी है अगर ग़लती लड़के की हो तो उस के वालिदैन भी उस को तस्लीम करें और लड़के को समझाएं, बिलफ़र्ज़ अगर इन दोनों में नहीं बनी फिर भी आप को अ़द्ल करने का सवाब ज़रूर मिलेगा।

13 लड़की की अपने सास ससुर से नहीं बनती या लड़के की अपने सास ससुर से लड़ाई हो गई और लड़की अपने मां-बाप के घर चली जाए तो दोनों के वालिदैन को चाहिए कि अब अपनी अना का मस्अला न बनाएं कि जब तक लड़का या लड़की अपने सास ससुर से मुआ़फ़ी नहीं मांगेंगे तो दोनों नहीं मिल सकते बल्कि अपनी अना को फ़ना कर दें और अपने बच्चों का घर टूटने से बचाएं और दर गुज़र से काम लें।

14 लड़का लड़की के दरमियान झगड़ा होने की सूरत में लड़की अपने घर चली गई तो अब दोनों के मां-बाप को उन्हें मिलाने के लिए अपना किरदार अदा करना चाहिए कि दोनों के सामने उन की अच्छी बातों और अच्छी आ़दतों का ज़िक्र करें कि इस त़रह़ भी दोनों को एक दूसरे की अहमिय्यत पता चलेगी और हो सकता है दोनों में सुल्ह़ हो जाए।

15 अगर हम ग़ुस्सा, ज़िद और बह़स से बच जाएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हमारा घर टूटेगा नहीं बसा रहेगा।

16 अगर आप साह़िबे औलाद हैं और आप के दरमियान रन्जिश है तो आप मियां बीवी येह सोच कर सुल्ह़ कर लें कि वालिदैन तो अपनी औलाद की ख़ात़िर कितनी क़ुरबानियां देते हैं हम अपनी औलाद के लिए अपने मुआ़मलात क्यूं ह़ल नहीं करते, वरना याद रखिए! मां-बाप की जुदाई में औलाद की ज़िन्दगी बरबाद हो जाती है।

अल्लाह करीम हर मुसलमान को अपने घर में शादो आबाद रखे और घर टूटने से बचाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अ़द्ले इस्लामी की मिसालें

दुन्या के निज़ाम को अह्सन व ख़ूब अन्दाज़ के साथ चलाने और हुस्ने मुआ़शरत क़ाइम रखने के लिए इस्लाम के दिए गए निज़ाम का एक बहुत ही अहम हिस्सा अ़द्लो इन्साफ़ भी है। इस्लाम ने अ़द्लो इन्साफ़ के क़ियाम व फ़रोग़ के लिए क्या क्या इक़्दामात किए हैं ? इस का तफ़्सीली बयान पिछले माह के शुमारे में हुवा, यहां अ़द्ले इस्लामी की कुछ मिसालें और इस के असरात मुलाहज़ा कीजिए :

1 हुज़ूर ने ह़ज़रते अ़क्काशा को बदला दे दिया

एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर किसी का मुझ पर कोई बदला हो तो वोह ले ले तो ह़ज़रते अ़क्काशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه खड़े हुए और अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! अगर आप ने बार बार क़सम न दी होती तो मेरी मजाल ही नहीं थी कि मैं किसी चीज़ के बदले के लिए आप के सामने आता। मैं आप के साथ एक ग़ज़्वे में था, फ़त्ह़ के बाद जब हम वापस आ रहे थे तो मेरी ऊंटनी आप की ऊंटनी के बराबर आ गई, मैं अपनी ऊंटनी से उतर कर आप के क़रीब हुवा ताकि आप के क़दम मुबारक पर बोसा दूं तो आप ने छड़ी बुलन्द की और मेरे पहलू पर मारी, मैं नहीं जानता कि आप ने ऐसा जान बूझ कर किया या आप का इरादा ऊंटनी को मारने का था ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुम्हें अल्लाह पाक के जलाल से पनाह में लेता हूं कि अल्लाह का रसूल तुम्हें जान बूझ कर मारे। फिर फ़रमाया : ऐ बिलाल ! फ़ातिमा के घर जाओ और वोही पतली छड़ी ले आओ। जब आप वोह छड़ी ले आए तो ह़ज़रते अ़क्काशा को फ़रमाया : ऐ अ़क्काशा ! अगर तुम मारना चाहते हो तो मारो। ह़ज़रते अ़क्काशा ने अ़र्ज़ की : जिस वक़्त आप ने मुझे मारा था उस वक़्त मेरे पेट पर कपड़ा नहीं था। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने पेट मुबारक से कपड़ा हटा दिया, येह देख कर मुसलमानों की चीख़ें निकल गईं जब ह़ज़रते अ़क्काशा ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक पेट की सफ़ेदी को देखा गोया मिस्री की डली हो तो फ़ौरन हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام से चिमट गए और बत्ने मुबारक का बोसा लेते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हुए : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! भला कौन है जो आप से बदला लेने का सोच सके।[1]

2 क़र्ज़ को अह़सन त़रीक़े से अदा करो

एक दफ़्आ़ एक साहिब की ऊंटनी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िम्मे दैन थी आप ने ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : जो ऊंटनियां आई हैं उन में से उसी मेयार की ऊंटनी दे दें उन्हों ने अ़र्ज़ की : तमाम ऊंटनियां उस से बेहतर हैं जो आप के ज़िम्मे है, आप ने फ़रमाया : उसी में से दे दो येह हुस्ने अदाएगी का तक़ाज़ा है।[2]

3 ह़ुदूद के निफ़ाज़ में किसी की रिआ़यत नहीं

एक मख़्ज़ूमिया औ़रत ने चोरी की जिस की वजह से क़ुरैश को फ़िक्र पैदा हो गई आपस में लोगों ने कहा कि इस के बारे में कौन शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सिफ़ारिश करेगा ? फिर लोगों ने कहा : ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब हैं। ह़ज़रते उसामा ने सिफ़ारिश की इस पर हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : तुम ह़द के बारे में सिफ़ारिश करते हो ! फिर हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुत्बे के लिए खड़े हुए और उस में फ़रमाया : अगले लोगों को इस बात ने हलाक किया कि अगर उन में कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और जब कमज़ोर चोरी करता तो उस पर ह़द क़ाइम करते। अल्लाह पाक की क़सम ! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद भी चोरी करतीं तो मैं उन का भी हाथ काट देता।[3]

4 क़ानून में सब बराबर

ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर जब बहुत सारे लोग क़ैदी हुए तो उन में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे जब फ़िदया मुक़र्रर हुवा तो उन के लिए भी मुक़र्रर हुवा, उन्हों ने फ़िदया मुआ़फ़ करने की दरख़्वास्त की, अन्सार ने भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिश्ते की रिआ़यत करते हुए अ़र्ज़ किया कि इन का फ़िदया मुआ़फ़ कर दिया जाए लेकिन आप ने इस को क़बूल नहीं किया और उन से भी फ़िदया वुसूल फ़रमाया।[4]

5 ह़ुक्मरानों की औलादें भी अ़द्ल के कटहरे में

एक मिस्री शख़्स ने ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में शिकायत की, कि मैं ने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه जो कि गवर्नर थे उन के बेटे के साथ दौड़ लगाई तो मैं उन से सबक़त ले गया उन के बेटे ने मुझ पर कोड़े बरसाए और येह भी कहा है कि तुम मेरा मुक़ाबला करते हो ह़ालांकि मैं दो करीमों का बेटा हूं ? आप ने फ़ौरन उन को एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में उन्हें अपने बेटे समेत मदीनए मुनव्वरा में ह़ाज़िर होने का ह़ुक्म दिया जब ह़ाज़िर हुए तो फ़रमाया वोह मिस्री शख़्स कहां है ? जब वोह ह़ाज़िर हुवा तो उसे फ़रमाया : येह कोड़ा पकड़ो और उसे मारना शुरूअ़ करो उस मिस्री ने कोड़े बरसाना शुरूअ़ किए वोह मारता जाता और आप फ़रमाते दो करीमों के बेटे को और मारो।[5]

6 इस्लाम भी नसीब हुवा और ज़िरह भी मिल गई

एक दिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़िरह गुम हो गई, आप ने वोह ज़िरह एक यहूदी के पास देखी और उस यहूदी को कहा कि येह मेरी ज़िरह है, फ़ुलां दिन गुम हो गई थी जब कि यहूदी ने आप का दावा दुरुस्त मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि इस का फ़ैसला अ़दालत ही करेगी चुनान्चे आप और वोह यहूदी दोनों फ़ैसले के लिए क़ाज़ी शुरैह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की अ़दालत में पहुंचे आप ने अपना दावा पेश किया कि यहूदी के पास ज़िरह मेरी है जो फ़ुलां दिन गुम हो गई थी। क़ाज़ी ने यहूदी से पूछा : आप ने कुछ कहना है। यहूदी ने कहा : मेरी ज़िरह मेरे क़ब्ज़े में है और मेरी मिल्कियत है। क़ाज़ी ने ज़िरह देखी और यूं गोया हुए। अल्लाह की क़सम ! ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप का दावा बिल्कुल सच है येह ज़िरह आप ही की है लेकिन क़ानून के तक़ाज़ों को पूरा करना आप पर वाजिब है क़ानून के मुत़ाबिक़ आप गवाह पेश करें आप ने बत़ौरे गवाह अपने ग़ुलाम क़म्बर को पेश किया फिर आप ने अपने दो बेटों ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को अ़दालत में पेश किया उन्हों ने भी आप के ह़क़ में गवाही दी। क़ाज़ी ने कहा : मैं आप के ग़ुलाम की गवाही तो क़बूल करता हूं

मगर एक गवाह मज़ीद दरकार है क्यूंकि आप के हक़ में आप के बेटों की गवाही ना क़ाबिले क़बूल है । आप ने फ़रमाया : तो फिर आप इन की गवाही क़बूल क्यूं नहीं करते ? क़ाज़ी ने कहा : येह दोनों आप के बेटे हैं और बाप के हक़ में बेटे की गवाही क़बूल नहीं येह कह कर क़ाज़ी ने आप के ख़िलाफ़ यहूदी के हक़ में फ़ैसला सुना दिया और ज़िरह यहूदी के हवाले कर दी । यहूदी ने तअज्जुब से कहा : मुसलमानों का हुक्मरान मुझे अपने क़ाज़ी की अदालत में लाया और क़ाज़ी ने उस के ख़िलाफ़ मेरे हक़ में फ़ैसला सादिर फ़रमा दिया और उन्हों ने उस का फ़ैसला बिला चूनो चरा क़बूल भी कर लिया । वल्लाह येह तो पैग़म्बराना अद्ल है फिर यहूदी ने आप की तरफ़ निगाह उठाई और कहने लगा ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप का दावा बिल्कुल सच है येह ज़िरह यक़ीनन आप ही की है । फुलां दिन येह आप के ऊंट से गिर गई थी तो मैं ने इसे उठा लिया चुनान्चे वोह यहूदी इस आदिलाना फ़ैसले से मुतअस्सिर हो कर मुसलमान हो गया और आप ने वोह ज़िरह बतौरे तोहफ़ा उस को दे दी ।[6]

7 जानवरों के साथ भी अद्लो इन्साफ़

एक मरतबा एक ऊंट के ज़रीए पानी निकाल कर खेत में डाला जा रहा था ऊंट की नज़र जैसे ही प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पड़ी तो बड़ी बे क़रारी से चीख़ा और अपनी गर्दन ज़मीन पर रख दी, येह देख कर आप ऊंट के पास ठहर गए और उस के मालिक को बुलवा कर फ़रमाया : येह ऊंट हमारे हाथ बेच दो ! उस ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम येह आप की बारगाह में तोहफ़तन पेश करते हैं येह ऐसे घर वालों का है जिन के पास इस ऊंट के इलावा कोई ज़रीअए मआश नहीं आप ने फ़रमाया : इस ऊंट ने हम से चारह की कमी और काम की ज़ियादती की शिकायत की है लिहाज़ा तुम इस से अच्छा सुलूक किया करो ।[7]

8 अम्वाल व जाईदाद की वापसी

हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एलाने आम करवा दिया कि जिन लोगों के मालो जाईदाद पर किसी ने क़ब्ज़ा कर रखा है वोह अपनी शिकायतें पेश करें इसी तरह जो भी अम्वाल व जाईदाद और ज़मीन वग़ैरा शाही ख़ानदान के पास ना हक़ मौजूद थी वोह सब की सब आप ने हक़दारों को वापस करवा दी और किसी के साथ कोई रिआयत नहीं की, आप ने इस मुआमले में बड़े अद्लो इन्साफ़ का मुज़ाहरा किया और शाही ख़ानदान के पास कोई चीज़ भी ऐसी न छोड़ी जिस पर किसी दूसरे का हक़ साबित हो रहा हो ।[8]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में जितने भी अद्लो इन्साफ़ के नाम पर निज़ाम क़ाइम हैं उन सब से बढ़ कर जानदार मज़बूत और पाएदार निज़ाम सिर्फ़ इस्लाम का है जिस की हक़्क़ानिय्यत की गवाही सदियों से ख़ासो आम की ज़बान पर जारी है और इस के फ़वाइद और नताइज भी लोगों के सामने हैं, मुआशरे में तरक़्क़ी ख़ुशहाली और अम्नो अमान क़ाइम करने के लिए इस से बेहतर कोई निज़ाम नहीं बशर्ते कि उसे तमाम तक़ाज़ों के साथ नाफ़िज़ किया जाए ।

इस्लामी निज़ामे अद्लो इन्साफ़ जब जब और जहां जहां क़ाइम रहा हर तरफ़ अम्नो अमान की फ़ज़ा क़ाइम रही, लोगों के मालो जान की हिफ़ाज़त रही, कारोबारी सरगर्मियां तेज़ हुईं, तरक़्क़ी की राहें हमवार हुईं, ख़ुशहाली आम हुई और लोग आराम व सुकून और इत्मीनान से ज़िन्दगी बसर करते रहे ।

अल्लाह करीम हमें अस्लाफ़ जैसे अद्लो इन्साफ़ क़ाइम करने वाले हुक्मरान अता फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

---

(1) حلیۃ الاولیاء، 4/76، 77 ملخصًا (2) مصنف عبد الرزاق، 8/20، حدیث: 14235
(3) بخاری، 2/468، حدیث: 3475 (4) بخاری، 3/23، حدیث: 4018
(5) کنز العمال، 6/294، حدیث: 36005 (6) حلیۃ الاولیا، 4/151، رقم: 5085
(7) مسند احمد، 6/178، حدیث: 17576 (8) حضرت عمر بن عبد العزیز کی 425 حکایات، ص162۔

मोबाइल और बद गुमानियां

(Mobiles and misconceptions)

एक पस्मान्दा अ़लाक़े में बीवी से मोबाइल बर आमद होने पर शौहर ने ह़ामिला बीवी को गला दबा कर क़त्ल कर दिया। तफ़्सीलात के मुत़ाबिक़ मक़्तूला के शौहर ने एतिराफ़े जुर्म कर लिया और जूडीशल मेजिस्ट्रेट के सामने भी एतिराफ़ी बयान रेकॉर्ड कराते हुए तस्लीम किया कि उस ने अपनी अहलिय्या को मोबाइल इस्तिमाल करने पर क़त्ल किया, उसे शुबा था कि अहलिय्या किसी (अजनबी) से फ़ोन पर बात करती थी।[1]

अफ़्सोस ! गुज़रते वक़्त के साथ साथ हमारे रवय्यों में मन्फ़ी रुज्हान (Negative trend) बढ़ता जा रहा है। बद गुमानियां और ग़लत़ फ़हमियां उस वक़्त भी होती थीं जब मोबाइल नहीं था। मोबाइल के बढ़ते हुए इस्तिमाल ने हमारे मुआ़शरे को फ़ाएदे और नुक़्सानात दोनों दिए ! मोबाइल के ज़रीए होने वाली बद गुमानियों और ग़लत़ फ़हमियों ने तबाही मचा दी, जिस की एक झलक ऊपर दी गई ख़बर है जिस में एक औ़रत अपनी जान से गई और शौहर क़त्ल जैसे ह़राम फ़ेल का मुर्तकिब हो कर जेल जा पहुंचा। इस से मिलती जुलती बहुत सी मिसालें हमें अपने मुआ़शरे में मिल जाएंगी।

बुरा गुमान ह़राम है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

حَرَّمَ مِنَ الْمُؤْمِنِ ثَلَاثًا دَمَه وَمَالَه وَاَن يُّظَنَّ بِه ظَنُّ السُّوء

यानी बेशक अल्लाह ने मुसलमान का ख़ून, माल ह़राम क़रार दिया है और येह भी ह़राम ठहराया है कि किसी मुसलमान के बारे में बुरा गुमान किया जाए।[2]

बद गुमानियों और ग़लत़ फ़हमियों की दुन्या जितनी वसीअ़ है अच्छे गुमान के एह़तिमालात (Probabilities) की गुन्जाइश इस से कहीं ज़ियादा होती है। अब येह हमारी ज़ेहनिय्यत पर मुन्ह़सिर है कि हम बद गुमानी या ग़लत़ फ़हमी को फ़ौक़िय्यत देते हैं या फिर हुस्ने ज़न के एह़तिमालात को ? हुस्ने ज़न की फ़ज़ीलत पर दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1 اِنَّ حُسْنَ الظَّنِ مِنَ الْاِيْمَان यानी बेशक हुस्ने ज़न रखना ईमान का ह़िस्सा है।[3]

2 حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ यानी हुस्ने ज़न एक अच्छी इबादत है।[4]

बद गुमानियों की मिसालें

(Examples of Evil Presumption)

इस मज़मून में मोबाइल फ़ोन के सबब होने वाली बद गुमानियों और ग़लत़ फ़हमियों की मिसालों को दो उ़नवानात में पेश कर के हुस्ने ज़न के एह़तिमालात भी बयान किए गए हैं !

1 फ़ोन, वोट्सएप या ईमो कॉल के ह़वाले से बद गुमानियां

2 वोट्सएप, IMO वग़ैरा पर सूती या तह़रीरी पैग़ाम के ह़वाले से बद गुमानियां

फ़ोन/वोट्सएप/ईमो कॉल के ह़वाले से बद गुमानियां

1 बीवी किसी को कॉल कर रही थी, आप को देख कर कॉल काट दी तो (مَعَاذَاللہ) आप के दिल में ख़याल आया कि किसी पुराने आ़शिक़ को फ़ोन कर रही होगी, अपने मैके में मेरी बुराइयां कर रही होगी, मुझ से त़लाक़ लेने की प्लानिंग कर रही होगी ह़ालांकि ◎ हो सकता है कि वोह अपनी सहेली को कॉल कर रही हो और आप के एह़तिराम में उस ने कॉल काट दी हो ◎ हो सकता है कि आप के माली ह़ालात की तंगी के पेशे नज़र किसी रिश्तेदार से क़र्ज़ लेने के लिए फ़ोन कर रही हो और आप की ख़ुद्दारी (Self-restraint) की वजह से आप से येह बात छुपाना चाहती हो। रह गई त़लाक़ लेने की प्लानिंग तो हो सकता है कि वोह बड़ी उ़म्र की किसी रिश्तेदार ख़ातून से इस पर मशवरा कर रही हो कि मैं क्या ऐसा करूं कि हमारी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी (Married Life) ख़ुश गवार हो जाए। इन्सान सोचने बैठे तो इस त़रह़ के दर्जनों अच्छे एह़तिमालात निकल सकते हैं जो उसे बद गुमानी से बचा सकते हैं।

2 इस त़रह़ नौ जवान औलाद या भाई या बहन को फ़ोन पर बात करते देख कर बिला वजह शक करना और बार बार उन को त़ाने मारना कि उन का किसी से चक्कर चल रहा है! इस जदीद दौर में उन्हें आप के बारे में "चकरा" देंगे जिस से आप की इ़ज़्ज़त उन की निगाहों में कम हो सकती है। येह भी तो सोचा जा सकता है कि क्लास फ़ेलो से सबक़ या इम्तिह़ानात की तय्यारी पर डिस्कस हो रही हो (आज कल तो क्लास वालों ने वोट्सएप ग्रूप बनाए होते हैं) या क्लास फ़ेलो के वालिद या वालिदा या क़रीबी अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल पर ताज़ियत की जा रही हो। वग़ैरा वग़ैरा

3 हम किसी को फ़ोन या वोट्सएप कॉल करते हैं लेकिन दूसरी त़रफ़ से रिसीव नहीं होती तो हम त़रह़ त़रह़ के वस्वसे पाल लेते हैं कि येह मुतकब्बिर है किसी को घास नहीं डालता या मेरी क़र्ज़ रक़म वापस करने के बजाए हड़प करना चाहता है, मेरा फ़ोन सुनते हुए उसे मौत पड़ती है, अब मैं उस से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं रखूंगा, मेरा उस के साथ जीना मरना ख़तम! ह़लांकि दर्जनों सूरतें बन सकती हैं कि इन्सान कॉल क्यूं नहीं उठाता ? जैसे ◎ वोह नमाज़ के लिए मस्जिद में हो और फ़ोन (Silent) पर हो ◎ आप का नम्बर उस के पास महफ़ूज़ (Saved) न हो क्यूंकि कई लोग ऐसे होते हैं जो अजनबी नम्बर से आने वाली कॉल नहीं उठाते ◎ वोह ऐसी जगह हो जहां फ़ोन ले कर जाने की इजाज़त न हो और उस ने मोबाइल फ़ोन सिक्यूरिटी वालों को जम्अ़ करवा दिया हो ◎ ◎ क्लास में पढ़ रहा हो ◎ ऑफ़िस की मीटिंग में हो ◎ मोबाइल घर भूल गया हो ◎ बाज़ार में हो या पब्लिक ट्रान्सपोर्ट में हो और फ़ोन उठाने पर डकैती का ख़दशा हो ◎ ड्राइविंग कर रहा हो ◎ मोबाइल चार्जिंग पर हो ◎ आप ने मोटी रक़म ज़बरदस्ती क़र्ज़ के तौ़र पर मांगी या कोई ग़ैर मामूली दफ़्तरी सहूलत त़लब की या उसे क़र्ज़ दिया था वक़्त से पहले मांगना शुरूअ़ कर दिया तो ऐसे में वोह तंग आ कर आप की कॉल वसूल करना छोड़ देता है ◎ आप बिन बुलाए किसी की निजी दावत में पहुंच गए, अब आप घर से बाहर खड़े उसे कॉल कर रहे हैं और वोह शर्मिन्दगी से बचने के लिए फ़ोन न उठा रहा हो कि येह ह़ज़रत कहां से आन टपके ? ◎ बाज़ औक़ात ऐसा होता है कि अगर वोट्सएप ऑन न हो तो उन्हें वोट्सएप कॉल मौसूल नहीं होती ह़ालांकि हमें कॉलिंग बेल सुनाई दे रही होती है ◎ नेटवर्क या मोबाइल की ख़राबी के बाइ़स बाज़ औक़ात कॉल करने वाले को कॉल कनेक्टिंग मालूम होती है, जब कि ह़क़ीक़तन कॉल नहीं जाती, (ऐसी सूरत में कॉलिंग नम्बर पर फ़ोन कर लेना बेहतर है)। ◎ आप का बात करने का अन्दाज़ इस क़दर लम्बा चौड़ा होता है कि एक नुक़्ते को किताब बना देते हैं और आख़िर में बर आमद कुछ भी नहीं होता, ◎ आप हर बात डाइरेक्ट ही करना चाहते हैं ह़ालांकि बहुत मरतबा सिर्फ़ चन्द ह़र्फ़ी बात होती है और मेसेज के ज़रीए भी काम मुकम्मल हो सकता है, फिर भी कॉल करते रहना ◎ बाज़ अफ़राद बीमार हो कर बिस्तर पर पड़े होते हैं या उन के पास सोने के लिए बहुत थोड़ा टाइम होता है, ऐसे में वोह घर वालों को ताकीद कर देते हैं कि फ़ुलां के इलावा किसी का फ़ोन आए तो मुझे न जगाया जाए ◎ या वोह फ़ोन ही साइलेन्ट कर देते हैं लेकिन आप को अस्ल सूरतेह़ाल

का पता नहीं होता और आप उस के बारे में बद गुमानी का पहाड़ खड़ा कर लेते हैं। बाज़ों को ऑडियो या तह़रीरी पैग़ाम पढ़ने में सहूलत होती है ऐसों को झट से वोट्सएप कॉल करने के बजाए रेकोर्डेड पैग़ाम भेजा जा सकता है।

सूती या तह़रीरी पैग़ामात के ह़वाले से बद गुमानियां

कभी हम कॉल के बजाए वोट्सएप या ईमो वग़ैरा पर सूती या तह़रीरी पैग़ाम (voice or text messages) भेजते हैं, लेकिन काफ़ी वक़्त गुज़रने पर भी जवाब नहीं मिलता। वाट्सएप वग़ैरा में ऐसी अ़लामात (Signs) होती हैं जिन से भेजने वाले को अपने पैग़ाम का स्टेटस पता चल जाता है कि उस का पैग़ाम सुना या पढ़ा जा चुका है जैसे एरो के निशानात का नीला होना। एरो का निशान नीला होने पर हमें 100 फ़ीसद यक़ीन हो जाता है कि वोह हमारा पैग़ाम सुन या पढ़ चुका है लेकिन जवाब नहीं दे रहा। जवाब में ताख़ीर पर हम पिछले सफ़ह़ात में बयान की गई ग़लत़ फ़हमियों और बद गुमानियों में पड़ सकते हैं ह़ालांकि नीले निशानात के बा वुजूद जवाब में ताख़ीर इस लिए हो सकती है कि

1 वोट्सएप के इस्तिमाल में लोगों के अन्दाज़ मुख़्तलिफ़ होते हैं, किसी की आ़दत होती है कि वोह मौसूल होने वाले सूती पैग़ामात को हाथों हाथ सुन लेता है जो मुख़्तसर होते हैं, जब कि जो पैग़ामात त़वील होते हैं उन्हें देख कर सुने बिग़ैर Mark as unread कर देता है ताकि अपनी सहूलत के ह़िसाब से बाद में सुन सके लेकिन जिस ने पैग़ाम भेजा होता है जब उस के पास Double Blue Tick ज़ाहिर होते हैं तो वोह बद गुमानी में मुब्तला हो जाता है कि सुनने के बा वुजूद जवाब नहीं मिल रहा, हमें नज़र अन्दाज़ किया जा रहा है वग़ैरा वग़ैरा। ह़ालांकि पैग़ाम अभी पेन्डिंग में होता है और सुना भी नहीं गया होता।

2 बाज़ औक़ात इस लिए फ़िल फ़ौर (Immediately) जवाब नहीं दिया जाता कि सुनने वाला उस पैग़ाम / शख़्सिय्यत को अहम समझता है और उस के पेशे नज़र वोह फ़ुर्सत का इन्तिज़ार करता है ताकि एहतिमाम से सुन कर अच्छे अन्दाज़ से जवाब दिया जाए।

3 बाज़ औक़ात भेजने वाले ने मेसेज दिया होता है किसी और पहलू पर जब कि जिस के पास मेसेज आया वोह समझता है कि हमारी जो ह़ालिया गुफ़्तगू चल रही थी शायद येह उसी पर मेसेज आया है तो वोह समझता है कि ह़ालिया गुफ़्तगू वाली बात को मैं क्लोज़ कर चुका हूं, येह मैं अब कल देखूंगा तो इस वजह से भी बद गुमानियां पैदा हो जाती हैं।

4 कुछ लोगों की आ़दत येह होती है कि उन्हों ने वोट्स एप इस्तिमाल करने, पैग़ामात सुनने और जवाब देने के लिए बा क़ाइ़दा वक़्त मुअ़य्यन कर रखा होता है मसलन: शाम 6 ता 7..... अब अगर 7 के बाद मेसेज आ गया और बे ख़याली में रीड हो गया और फिर अन रीड कर के रख दिया ताकि कल अपने वक़्त पर रिप्लाई दूं लेकिन पैग़ाम भेजने वाला Double Blue Tick देखने के बाद बद गुमानियों में मुब्तला हो जाता है।

5 इसी त़रह़ बाज़ औक़ात मोबाइल घर बच्चों या किसी और फ़र्द के हाथ में होता है तो कभी उन से Chat रीड हो जाती है।

6 कई लोग वोट्सएप का वेब वर्ज़न इस्तिमाल करते हैं, तो बाज़ औक़ात ऐसा होता है कि वेब पर पैग़ाम मौसूल हुवा और रीड हो गया लेकिन इन्टरनेट की प्रोब्लम की वजह से मोबाइल पर नहीं आता तो भेजने वाला इस सूरत में भी बद गुमानी में मुब्तला हो जाता है।

7 बाज़ों ने अ़वामी नम्बर मेनेज (Manage) करने के लिए किसी फ़र्द को मुक़र्रर किया होता है जो पैग़ामात को मुन्तख़ब कर के आगे पहुंचाता है, ऐसी सूरत में आप का पैग़ाम बाज़ औक़ात अपने मत़लूब तक नहीं पहुंच पाता।

8 बाज़ों ने सीन या रीड का ओप्शन ही बन्द किया होता है ऐसे में अपने पैग़ाम के बारे में येही गुमान होता है कि उस ने सुना या देखा ही नहीं है ह़ालांकि वोह देख या सुन चुका होता है लेकिन किसी सबब से जवाब नहीं देता।

बहरह़ाल! वजह कोई भी हो हमें दिल बड़ा रखना चाहिए, वोइस मेसेज करते वक़्त नीचे उ़नवान लिख दीजिए

या अरजन्ट लिख दीजिए और मुनासिब वक़्त के बाद रीमाइन्डर (Reminder) दे देना चाहिए। या ऑडियो की जगह लिखा हुवा पैग़ाम भेज दीजिए क्यूंकि लिखा हुवा जल्दी पढ़ा जाता है।

पैग़ामात वुसूल करने वालों की ख़िदमत में गुज़ारिशात

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक के फ़राइज़ के बाद सब आमाल से ज़ियादा प्यारा अ़मल मुसलमान का दिल खुश करना है।[5]

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बड़ी प्यारी आ़दत है कि जिस को जवाब देना होता है उसे हाथों हाथ (फ़ौरन) दे देते हैं ताकि उस के दिल में खुशी दाख़िल हो। येह बात आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के पेशे नज़र होती है कि रिप्लाई जल्दी दें या देर से, देना ही है तो जल्द दे कर पैग़ाम भेजने वाले के दिल को राहत पहुंचाई जाए।

इस आ़दत को हम भी अपना सकते हैं और जवाब में ताख़ीर हो तो जब रिप्लाई दें तो ताख़ीर की माक़ूल वजह (Reasonable cause) बयान कर देनी चाहिए इस से दिलों में दूरी पैदा नहीं होगी اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ। लेकिन ख़याल रहे कि ताख़ीर का उ़ज़्र बयान करने में झूट में न जा पड़ें। रसूले पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ख़्वाब में एक शख़्स मेरे पास आया और बोला : चलिए ! मैं उस के साथ चल दिया, मैं ने दो (2) आदमी देखे, उन में एक खड़ा और दूसरा बैठा था, खड़े हुए शख़्स के हाथ में लोहे का ज़म्बूर था, जिसे वोह बैठे शख़्स के एक जबड़े में डाल कर उसे गुद्दी तक चीर देता, फिर ज़म्बूर निकाल कर दूसरे जबड़े में डाल कर चीरता, इतने में पहले वाला जबड़ा अपनी अस्ली ह़ालत पर लौट आता, मैं ने आने वाले शख़्स से पूछा : येह क्या है ? उस ने कहा : येह झूटा शख़्स है, इसे क़ियामत तक क़ब्र में येही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।[6]

अल्लाह पाक हमें इस्लामी तालीमात का शुऊ़र नसीब करे और इन पर अ़मल की सआ़दत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) نیوز ویب سائٹ سے ماخوذ (2) دیکھئے: شعب الایمان، 5/297، حدیث:6706 (3) تفسیر روح البیان، 9/84 (4) مسندِ احمد، 3/547، حدیث:10368 (5) معجم اوسط، 6/37، حدیث:7911 (6) مساویٔ الاخلاق للخرائطی، ص76، حدیث:131، جھوٹا چور، ص14۔

बद गुमानी

बद गुमानी की तारीफ़, बद गुमानी की तबाह कारियां, बद गुमानी का इ़लाज और बचने के त़रीक़ों के इलावा बहुत से मौज़ूआ़त पर मुफ़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिए रिसाला "**बद गुमानी**" का मुत़ालआ़ कीजिए।

नफ़्सो शैत़ान से होशियार रहें

रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वालिदे गिरामी और एक अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं। अहले इल्म आप को रईसुल मुतकल्लिमीन और रईसुल अतक़िया के अल्क़ाबात से याद करते हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत 1246 हिजरी जुमादल उख़रा की आख़िरी या रजबुल मुरज्जब की पहली तारीख़ को बरेली शरीफ़ में हुई। सारी तालीम अपने वालिदे माजिद मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से ह़ासिल की जो अपने ज़माने के ज़बरदस्त आ़लिमे दीन थे।[1] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सीरत, अ़क़ाइद, आमाल और तसव्वुफ़ वग़ैरा के मौज़ूअ़ पर शानदार कुतुब तह़रीर फ़रमाई। आप की तक़रीबन 26 तसानीफ़ के नाम मिलते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी इन्डिया से भी इन की 2 कुतुब तह़क़ीक़ी काम के बाद शाएअ़ की जा चुकी हैं :

(1) اَحْسَنُ الْوِعَا لِاٰدَابِ الدُّعَا (2) فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَا

आप ने ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1297 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1880 ईसवी बरोज़ जुमेरात 51 बरस, 5 माह की उ़म्र में विसाल फ़रमाया और वालिदे मोह़तरम के पहलू में दफ़्न हुए।[2]

आप की कुतुब में दुन्या की मज़म्मत, नफ़्स की मज़म्मत व इस्लाह़, अख़्लाक़ी तरबियत और इश्क़े रसूल की कसीर तरग़ीबात मिलती हैं। आप की फ़िक्री और इस्लाह़ी तरग़ीबात की अहमिय्यत के पेशे नज़र आप की अ़ज़ीम किताब "سُرُوْرُالْقُلُوْب فِیْ ذِكْرِ الْمَحْبُوْب" में से नफ़्स की मज़म्मत और इस्लाह़ के मुतअ़ल्लिक़ इन्तिहाई मुफ़ीद और क़ाबिले फ़िक्र कलाम का मुन्तख़ब ह़िस्सा "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के मज़्मून के त़ौर पर शामिल किया जा रहा है।

शैत़ान का फ़रेब

अव्वल शैत़ान बन्दे को इ़बादत से मन्अ़ करता है, जब बन्दा कहता है : दुन्या फ़ानी है और सफ़रे दराज़ दरपेश है, बे तौशा व ज़ाद किस त़रह़ क़त़अ़ होगा ?[3]

तो (शैत़ान) कहता है : जल्दी क्या ज़रूर है अभी उ़म्र बहुत है, इ़बादत कर लेना।

जब बन्दा कहता है : मौत मेरे इख़्तियार में नहीं और वक़्त इस का मालूम नहीं, शायद अभी मर जाऊं और ह़सरत इ़बादत की गोर (क़ब्र) में ले जाऊं !

तो (शैत़ान) कहता है : इ़बादत में जल्दी कर कि नामए आमाल में नेकियां ज़ियादा हो जाएं (यानी जल्द बाज़ी से काम ले)।

जब बन्दा कहता है : दो रक्अ़त नमाज़ ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ व क़रार व सुकून के साथ बहुत रक्अ़तों से जो जल्दी पढ़ी जाएं बेहतर है।

(शैत़ान) कहता है : नमाज़ अच्छी त़रह़ अदा कर देखने वाले तुझे समझें।

जब बन्दा कहता है : मुझे ख़ुदा से काम है उस की इ़बादत औरों के दिखाने के लिए करना निरी बे ह़याई है।

(शैत़ान मज़ीद फ़रेब देते हुए) कहता है : अगर्चे तुझे ख़ल्क़ से कुछ काम नहीं, मगर वोह ख़ुद ज़ाहिर करेगा और लोगों के दिल में तेरी क़द्रो मन्ज़िलत बढ़ाएगा।

जब बन्दा कहता है : दुन्या की क़द्रो मन्ज़िलत बेकार है मुझे इ़ज़्ज़त आख़िरत की दरकार है।

तो (शैत़ान) कहता है : इस क़दर मशक़्क़त न कर अगर अज्ल[4] में तुझे बहिश्ती किया, इ़बादत की क्या ह़ाजत और जो दोज़ख़ी किया तो इस से क्या फ़ाएदा ह़ासिल होगा ?

बन्दा कहता है कि इ़बादतो रियाज़त मेरे ह़क़ में बहरह़ाल मुफ़ीद है अगर बहिश्ती हूं तो मर्तबा बढ़ेगा और ख़ुदा न ख़्वास्ता दोज़ख़ी हूं तो अ़ज़ाब कम होगा इस लिए कि ख़ुदा मेह़नत किसी की राएगां नहीं करता।

उस वक़्त शैत़ान लाचार हो जाता है और नफ़्स से कि उस का उस्ताद है, मदद चाहता है कि उसे उ़ज़्ब[5] की घाटी में हलाक करे। इन्सान को चाहिए कि जिस वक़्त येह सरकश (नफ़्स) इतराए (तो उसे) कहे : ऐ नफ़्स ! तेरी नमाज़ अगर्चे लाख इख़्लास के साथ हो उस से ज़ियादा नहीं जैसे कोई मुफ़्लिस नादार मुट्ठी भर जव बादशाह के हुज़ूर भेजे, ख़ुदाए तआ़ला तेरे इस ह़क़ीर तोह़फ़े की परवाह नहीं रखता।[6] وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ

नफ़्स की तादीब करो !

आ़मिर बिन क़ैस हर रोज़ हज़ार रक्अ़त पढ़ते, बिस्तर पर आते, फ़रमाते : ऐ नफ़्स ! ख़ुदा की क़सम मैं तुझ से ना ख़ुश हूं कि तू ख़ुदा की इ़बादत में काहिली करता है ?[7]

इब्ने सम्माक अक्सर फ़रमाया करते : ऐ नफ़्स ! तू ज़ाहिदों की सी बातें करता है और मुनाफ़िक़ों के काम, बहिश्ती और लोग हैं और अ़मल उन के और त़रह़ के होते हैं।[8]

(ऐ बन्दे) पस तू भी अपने नफ़्स की तेह़ज़ीब व तादीब की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और उस से कह ऐ नफ़्स ! अगर सिपाही बादशाह का किसी को पकड़ने आए और वोह खेल में मश्ग़ूल रहे उस से ज़ियादा अह़मक़ कौन है ? ग़ौर से देख कि लश्कर मुर्दों का दरवाज़ए शहर पर बैठा है और अ़हद करते हैं कि जब तक तुझे साथ न लेंगे हरगिज़ न उठेंगे और बहिश्त व दोज़ख़ तेरे लिए तय्यार है और मौत का वक़्त मालूम नहीं, नागाह (अचानक) सर पर आ जाएगी और जो सामान तय्यार न होगा तो दिल में ह़सरत रह जाएगी।

ऐ नफ़्स ! अगर तेरा ग़ुलाम या नौकर तेरी ना फ़रमानी करे तो किस क़दर ना गवार होता है और तू अपने आक़ा की ना फ़रमानी करता है और उस के ग़ज़ब से नहीं डरता क्या उस के अ़ज़ाब की तुझे त़ाक़त है ? ज़रा चराग़ पर उंगली रख या धूप में बैठ कर ग़ौर कर कि तह़म्मुल दोज़ख़ की आग का हो सकेगा या नहीं ? (यानी ग़ौर कर कि दोज़ख़ की आग बरदाश्त हो सकेगी या नहीं ?)

ऐ नफ़्स ! त़बीब के कहने से सब ख़्वाहिशें तर्क कर देता है और फ़क़ीरी के ख़ौफ़ से तेह़सीले मआ़श में हज़ार रन्जो तक्लीफ़ उठाता है क्या तेरे नज़दीक दोज़ख़ बीमारी और दुन्या की मोह़ताजी से ज़ियादा सख़्त नहीं ?

ऐ नफ़्स ! अगर तू ख़ुदा की तक़्सीम पर राज़ी है तो क़नाअ़त कर और जो राज़ी नहीं तो उस का रिज़्क़ मत ले, और राज़िक़ ढूंड अगर ढूंड सके।

ऐ नफ़्स ! ख़ुदा जिस बात को मन्अ़ करे, मत कर और जो हुक्म दे, बजा ला, वरना उस के मुल्क से निकल जा अगर निकल सके, उस के मुल्क में रहना और उस की ना फ़रमानी करना बड़ी नादानी है।

ऐ नफ़्स ! गुनाह सब से छुपा कर करता है अगर कोई तेरी पीठ के पीछे पंखा झुले तो हरगिज़ तुझ से मुबाशरत (हमबिस्तरी) और चोरी न हो सके और ग़ौर से देख ! उन दरख़्तों को कौन हिलाता है ? और तू किस के सामने गुनाह करता है ?

ऐ नफ़्स ! अगर तू समझता है कि ख़ुदा ने तुझे अ़बस (फ़ुज़ूल) पैदा किया है तो मुन्किरे क़ुरआन है (क्यूंकि रब का फ़रमान है) :

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ اَنَّكُمْ اِلَیْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ(۱۱۵)[9]

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं)

اَیَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ یُّتْرَكَ سُدًى(۳۶)[10]

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या आदमी इस घमंड में है कि आज़ाद छोड़ दिया जाएगा)

ऐ नफ़्स ! तू दो ह़र्फ़ सीख कर ऐसा मग़रूर हुवा कि दोनों आ़लम में नहीं समाता, दस्तार ख़्वाजगी (यानी सरदारी की पगड़ी) सर पर रख कर ख़ल्क़े ख़ुदा को ह़क़ीर समझता है और किसी को शहर में गुफ़्तगू करने के क़ाबिल नहीं जानता, सबब इस का येह है कि तू ने मन्तिक़ व ह़िक्मत और जदल व बह़स में उ़म्रे अ़ज़ीज़ अपनी ज़ाएअ़ की, इ़ल्मे दीन से बे बहरा रहा और येह न समझा कि येह उ़लूम ब क़द्रे ज़रूरत जाइज़ और ह़ाजत से ज़ियादा ह़राम और ह़राम को कमाल समझना बड़ी नादानी है ।

ऐ नफ़्स ! अगर तू ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल भी किया तो इस में फ़िक्र न की अगर फ़िक्र करता तो अपनी ह़क़ीक़त से वाक़िफ़ होता और अपने अ़मल पर नाज़ न करता कि येह इ़ल्मो अ़मल ख़ुदा की इनायत है न तेरी इस्तिअ़दाद व लियाक़त और बिलफ़र्ज़ अगर तेरी इस्तिअ़दाद व लियाक़त को कुछ दख़्ल हो तो वोह भी उसी की इनायत से है ।

ऐ नफ़्स ! जो तेरा ऐ़ब ज़ाहिर करे उस का दुश्मन होता है, अगर इसे ऐ़ब समझता है छोड़ क्यूं नहीं देता, रात दिन शैत़ान की ग़ुलामी करता है और दावा ख़ुदा की बन्दगी का रखता है, इ़बादतो रियाज़त इस लिए करता है कि पगड़ी ख़्वाजगी और पारसाई की तेरे सर पर बांधें (यानी सरदारी व पाकीज़गी अ़त़ा करें) और वज़ाइफ़ इस लिए पढ़ता है कि फ़राग़त दुन्या की तुझे ह़ासिल हो, तस्बीह़ व मुरक़्क़अ़ इस लिए है कि लोग तेरे मोतक़िद हों और पुलाव व ज़र्दा खाने में आए ।

ऐ नफ़्स ! तौबा क्यूं नहीं करता ? हमेशा कल पर डालता है नागहां मौत आ जाएगी और ह़सरत व नदामत दिल में रह जाएगी, कल तौबा आज से आसान न होगी बल्कि जिस क़दर दरख़्ते गुनाह की जड़ ज़ियादा दिन रहेगी, ज़ियादा मज़बूत होती जाएगी, जब कल, आज से सख़्त तर देखेगा दूसरे दिन पर टालेगा इस त़रह़ काम तमाम हो जाएगा और अन्जाम ख़राब ।

ऐ नफ़्स ! जवानी में बुढ़ापे से पहले और बुढ़ापे में मरने से आगे इ़बादत नहीं करता और जाड़े (सर्दी) से सामान गर्मी और गर्मी से सामान जाड़े का दुरुस्त करता है क्या दोज़ख़ की ज़महरीर को उस सर्दी और उस की आग को उस गर्मी से भी कम जानता है ?

ऐ नफ़्स ! अगर तमाम दुन्या तुझे बे मुज़ाह़मत दें और सब आ़लम तेरा मह़कूम हो जाए, आख़िर कार छोड़ना पड़े और दो गज़ ज़मीन और चार गज़ कफ़न से ज़ियादा हाथ न आए, ऐसी बे वफ़ा के लिए आख़िरत को कि दाइम बाक़ी है बरबाद करता है और सोने के बदले ठेकरे ख़रीदता है और दूसरों की नादानी पर हंसता है पहले आप को संवार फिर औरों को राह पर ला कि सवाब इ़ल्मो अ़मल व तालीम व हिदायत का हाथ आए और नाम तेरा उ़लमाए दीन में लिखा जाए लेकिन इस जगह एक और अम्र क़ाबिले बयान के है कि आ़लिमे दीन हर चन्द बे अ़मल हो अ़वाम को चाहिए कि उस की नसीह़त पर अ़मल करें और उसे अपना मुरब्बी और मुर्शिद समझें और ताज़ीम और तौक़ीर उस की बजा लाएं और वुजूद उस का ग़नीमत जानें कि वोह अपनी राह में कांटे बोता है लेकिन उन्हें राहे रास्त बताता है, मिसाल इस की मानिन्दे चराग़ के है कि आप जलता और औरों को फ़ाएदा पहुंचाता है ।

---

(1) جواہر البیان فی اسرار الارکان، ص6 (2) جواہر البیان فی اسرار الارکان، ص10
(3) यानी दुन्या फ़ानी है और उख़रवी ज़िन्दगी का सफ़र न ख़त्म होने वाला है, जो कि नेक आमाल के बिग़ैर बहुत मुश्किल है । (4) यानी हमेशा हमेशा से (5) ख़ुद पसन्दी (6) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो सुथरा हुवा तो अपने ही भले को सुथरा हुवा। (7) الاولیاء لابن ابی الدنیا، ص41، (پ22، فاطر:18)
رقم:101 (8) تاریخ بغداد، 3/347، رقم: 916 (9) پ18، المؤمنون:115 (10) پ29، القیامۃ:36۔

येह भी अमानत है !

तामीराती काम के सिलसिले में ईंटें दरकार थीं, जिस की ख़रीदारी के लिए दादा अब्बू ने ईंटों की भट्टी (Bricks kiln) की सम्त रुख़ किया, वहां पहुंचे तो आस पास तीन चार भट्टियां थीं। दादाजी एक भट्टी वाले के पास गए और दुआ व सलाम के बाद कहने लगे : "जनाब आप के पास मेरी एक अमानत है।" वोह चौंका और बड़ी हैरानी से पूछने लगा : बाबाजी ! भला मेरे पास आप की कौन सी अमानत है ? दादाजी मुस्कुराते हुए कहने लगे : जनाब ! किसी को अच्छा मशवरा देना भी तो अमानत है ! उस ने कहा : क्यूं नहीं ! क्यूं नहीं ! आप पूछिए : दादाजी ने ईंटों की क्वोलिटी और उन की तय्यारी में शामिल मटीरियल के बारे में पूछा, जिस पर भट्टी वाले ने तमाम तफ़्सीलात बयान कर दीं।

इस वाक़िए में जहां और लतीफ़ पहलू हैं, उन में से एक "मशवरा अमानत है !" का भी है। जी हां ! किसी को अच्छा मशवरा देना भी एक अमानत है बल्कि अगर कोई मशवरा लेने आए तो उसे अच्छा और दुरुस्त मशवरा देना वाजिब है।[1] हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई को किसी मुआमले में मशवरा दे हालांकि वोह जानता है कि दुरुस्ती इस के इलावा में है उस ने उस के साथ ख़ियानत की।[2] यानी अगर कोई मुसलमान किसी से मशवरा हासिल करे और वोह दानिस्ता ग़लत मशवरा दे ताकि वोह मुसीबत में गिरिफ़्तार हो जाए तो वोह मुशीर (यानी मशवरा देने वाला) पक्का ख़ाइन (ख़ियानत करने वाला) है।[3] और अगर मौक़अ और सूरते हाल के मुनासिब मशवरा बन न पड़े तो माज़िरत कर ली जाए वरना कम अज़ कम ऐसा मशवरा दिया जाए कि अगर ख़ुद पर वोही सूरते हाल पेश आती तो क्या करते जैसा कि एक हदीसे मुबारका में है कि اَلْمُسْتَشَارُ مُؤْتَمَنٌ فَاِذَا اسْتُشِيْرَ فَلْيُشِرْ بِمَا هُوَ صَانِعٌ لِنَفْسِهٖ यानी जिस से मशवरा लिया जाए वोह अमीन है लिहाज़ा जब मशवरा लिया जाए तो चाहिए कि वोह ऐसा मशवरा दे जो अपने लिए करना चाहता।[4] बल्कि एक मुफ़क्किर ने यहां तक कहा कि अगर तुझ से तेरा दुश्मन भी मशवरा करे तो उसे उम्दा मशवरा दे क्यूंकि मशवरा करने से उस की तेरे साथ दुश्मनी महब्बत में बदल जाएगी।[5]

याद रहे कि जिस तरह रुपियों, पैसों और माल व सामान की अमानतों में ख़ियानत हराम है उसी तरह बातों, कामों और अहदों की अमानतों में भी ख़ियानत हराम है। बल्कि हर क़िस्म की अमानतों में ख़ियानत हराम है और हर ख़ियानत जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[6] अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में फ़रमाता है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤى اَهْلِهَا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।[7]

"**अमानत**" के मफ़्हूम में वुस्अत है, हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : अमानतदारी हर चीज़ में लाज़िम है, ग़ुस्ले जनाबत, नमाज़, रोज़ा, ज़कात के इलावा नाप तोल और लोगों की अमानतों के मुआमले में भी इस का लिहाज़ रखा जाएगा।[8] ख़ियानत, अमानत की ज़िद है ख़ुफ़ियतन किसी का हक़ मारना ख़ियानत कहलाता है। ख़्वाह अपना हक़ मारे या अल्लाह व रसूल का या इस्लाम का या किसी बन्दे का।[9]

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि अमानत की तीन क़िस्में (Types) हैं : 1 अल्लाह पाक की अमानतें कि इन्सान के आज़ा (Organs) रब की अमानतें हैं । उन से अल्लाह की इताअ़त करना अमानतदारी है और इन के ज़रीए़ बुरे काम करना उन आज़ा की ख़ियानत, उस में सारी नेकियां करना और सारे गुनाहों से बचना दाख़िल है । 2 अपने नफ़्स की अमानतदारी कि हम पर हमारे नफ़्स के हुक़ूक़ मसलन जाइज़ तौ़र पर खाना, सोना और आराम करना अमानतदारी है जब कि भूका रह कर हलाक हो जाना वग़ैरा ख़ियानत ।(10)

3 बन्दों के साथ मुआ़मलात में अमानतदारी येह है कि लोगों की अमानतें उन्हें लौटाई जाएं, नाप तोल में कमी करने से बचा जाए, लोगों की पर्दापोशी की जाए वग़ैरा वग़ैरा ।(11)

इन सूरतों की रौशनी में देखा जाए तो मुसलमान का हर क़दम अमानत के दाइरे में रहना ज़रूरी क़रार पाता है । इसी बात को ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े प्यारे अन्दाज़ में समझाते हुए कुछ यूं इरशाद फ़रमाते हैं : मुसलमान उस डाकिया (Post Man) की त़रह़ है जो डाक का थेला ले कर दफ़्तर से चले, जिस में सेंकड़ों की अमानतें हैं अगर एक मनी ओर्डर या पार्सल ग़लत़ तक़्सीम हो गया तो उस की पकड़ है । कामयाब डाकिया वोह है जो सब की अमानतें (Behongings) दुरुस्त तौ़र पर तक़्सीम कर के लौटे और कामयाब मुसलमान वोह है जो तमाम के हुक़ूक़ अदा कर के अपने घर यानी क़ब्र में जाए ।(12)

अमानत की तीन अक़्साम से मुतअ़ल्लिक़ चन्द सूरतों की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

राज़ की बात भी एक अमानत है किसी ने आप से अपने राज़ की बात कही और साथ में येह भी कह दिया कि येह बात अमानत है किसी से मत कहिएगा मगर वोह बात आप ने किसी से कह दी तो येह अमानत में ख़ियानत हो गई । अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْحَدِيْثُ بَيْنَكُمْ اَمَانَةٌ यानी तुम्हारी बाहमी गुफ़्तगू अमानत है ।(13)

बात अमानत होने का क़रीना अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं : बात के अमानत होने के लिए येह शर्त़ नहीं कि कहने वाला सराह़तन (यानी साफ़ लफ़्ज़ों में) मन्अ़ करे कि किसी को मत बताना, बल्कि अगर वोह बात करते हुए इस त़रह़ इधर उधर देखे कि कोई सुन तो नहीं रहा ! येह भी बिल्कुल वाज़ेह़ क़रीना है कि येह बात अमानत है । चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे अमानत बुन्याद है : जब कोई आदमी बात कर के इधर उधर देखे तो वोह बात अमानत है ।(14)

लिहाज़ा ज़बान की इस (राज़ फ़ाश करने की) आफ़त का इ़ल्म और इस से इज्तिनाब ज़रूरी है कि ख़्वाही न ख़्वाही एक मुसलमान को तक्लीफ़ पहुंचाना है । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब दो शख़्स आपस में एक दूसरे को राज़दां बनाएं तो एक के लिए दूसरे का वोह राज़ फ़ाश करना जाइज़ नहीं जिस का फ़ाश होना पहले को नागवार गुज़रे ।(15)

ओ़हदा व मन्सब एक अमानत हर छोटा बड़ा ओ़हदा और मन्सब एक अमानत है यानी जिस को कोई ओ़हदा सिपुर्द किया जाए तो वोह अपने ओ़हदे से मुतअ़ल्लिक़ किसी क़िस्म की कमी कोताही और ख़िलाफ़े शरीअ़त काम कर के ख़ियानत न करे, मातह़त अफ़राद के साथ ना इन्साफ़ी व ज़ुल्म न करे, अपने फ़राइज़े मन्सबी इस्लामी तक़ाज़ों के मुताबिक़ ब ख़ूबी अदा करे । एक मरतबा अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी ओ़हदे के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की तो हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! तुम कमज़ोर हो और येह (ह़ुकूमत व मन्सब) अमानत है और क़ियामत के दिन रुस्वाई व नदामत है सिवाए इस के जो उसे ह़क़ के साथ ले और इस की ज़िम्मेदारियां पूरी करे ।(16)

ओ़हदों के अमानत होने के साथ इस ह़दीसे मुबारका से येह इशारा भी मिलता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स मन्सब का ख़्वाहिश मन्द है जो उस की ज़िम्मेदारियां नहीं निभा सकता तो उसे इस मन्सब से बाज़ रखा जाएगा बल्कि अह़ादीस की रू से ज़ियादा इ़ल्म वाले और मक़्बूले ख़ुदावन्दी के बजाए किसी और को मन्सब दे देने वाले को ख़ियानत करने वाला बताया गया जैसे ज़ियादा इ़ल्म वाले के होते हुए कम इ़ल्म को किसी गिरोह का निगरान या नुमाइन्दा या नमाज़ के लिए इमाम बना देना ।(17)

चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो किसी जमाअ़त पर एक शख़्स को मुक़र्रर करे और उन में वोह हो जो उस शख़्स से ज़ियादा अल्लाह को पसन्दीदा है

तो बेशक उस ने अल्लाह पाक, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसलमानों सब के साथ ख़ियानत की।[18]

इसी त़रह़ अगर कोई ज़िम्मेदारी मिल गई तो उस के तक़ाज़े पूरे पूरे निभाए जाएं क्यूंकि अब उस में बिला इजाज़ते शरई किया जाने वाला तसर्रुफ़ उस अमानत में ख़ियानत कहलाएगा।[19] रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम में जो कोई हमारे किसी काम पर मुक़र्रर हो और वोह एक सूई या उस से भी कम चीज़ को हम से छुपाएगा वोह ख़ियानत करने वाला है, क़ियामत के दिन उसे ले कर आएगा।[20] यानी ख़ियानत अगर्चे मामूली सी चीज़ की ही क्यूं न हो तब भी गुनाहे कबीरा है और ख़ियानत करने वाले के लिए तौबा के साथ साथ उस चीज़ को वापस करना भी ज़रूरी है।[21]

मन्सबे इमामत व अज़ान भी अमानत इमाम सारी क़ौम की नमाज़ों और दुआओं का अमीन है, इसी लिए ऐसे इमाम को ह़दीस में ख़ाइन कहा गया कि जो (बादे नमाज़) ख़ास अपने लिए दुआ करे और उन (मुक़्तदियों) के लिए न करे।[22] नीज़ एक और ह़दीसे मुबारका है :

اَلْاِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُؤَذِّنُ مُؤْتَمَنٌ यानी इमाम ज़िम्मेदार और मुअज़्ज़िन अमानतदार है।[23] **वज़ाह़त :** इमाम मुक़्तदियों की नमाज़ का ज़िम्मेदार है, और अपनी नमाज़ के ज़िम्न में उन की नमाज़ों को लिए हुए, (मुअज़्ज़िन अमीन यूं) कि लोगों की नमाज़ें और रोज़े उस के पास गोया अमानतें हैं।[24]

शिराकत (Partnership) में अमानतदारी

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि मैं दो शरीकों (Partners) का तीसरा होता हूं जब तक उन में से कोई अपने साथी से ख़ियानत न करे और जब ख़ियानत करता है तो उन के दरमियान से मैं निकल जाता हूं (मिश्कात शरीफ़ में है कि) और उन के दरमियान शैत़ान आ जाता है।[25] **शर्ह़ :** यानी अपनी बरकत निकाल लेता हूं, बे बरकती दाख़िल फ़रमा देता हूं, येह तजरिबे से भी साबित है कि जब तक तिजारत में नेक निय्यती से शिर्कत रहे बड़ी बरकत होती है और जहां निय्यत ख़राब हुई तो बरकत गई और दुकान का दीवालिय्या हुवा बारहा का तजरिबा है।[26]

मियां बीवी के मुआ़मलात अमानत मियां बीवी एक दूसरे के अमीन हैं, अगर उन दोनों में से किसी ने निजी गुफ़्तगू या मुआ़मलात को दूसरे लोगों के सामने बयान किया तो ख़ियानत की जिस के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे मुबारका में इरशाद फ़रमाया गया : क़ियामत के दिन अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से बड़ी ख़ियानत येह है कि मर्द अपनी बीवी के पास जाए, बीवी उस के पास आए और फिर वोह अपनी बीवी का राज़ ज़ाहिर कर दे।[27]

घर गिरस्ती और अमानत उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि औ़रत पर वाजिब है कि शौहर की ग़ैर मौजूदगी में उस की इ़ज़्ज़त और माल में ख़ियानत न करे।[28] एक औ़रत के लिए शौहर का मकान और मालो सामान येह सब शौहर की अमानतें हैं और बीवी उन सब चीज़ों की अमीन है अगर औ़रत ने अपने शौहर की किसी चीज़ को जान बूझ कर बरबाद (ज़ाएअ़) कर दिया तो औ़रत पर अमानत में ख़ियानत करने का गुनाह लाज़िम होगा और उस पर ख़ुदा का बहुत बड़ा अ़ज़ाब होगा।[29]

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि वोह हमें हमारे ज़िम्मे आने वाली अमानतों और ज़िम्मेदारियों को बा ख़ूबी अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)لمعات التنقیح،4/10-مراٰۃ المناجیح،2/404(2)ابو داؤد،3/449،حدیث: 3657(3)مراٰۃ المناجیح،1/212(4)معجم اوسط،1/597،حدیث:2195(5)المستطرف، 1/132(6)جہنم کے خطرات، ص67، 68ملخصاً(7)پ5، النسآء:58(8)تفسیر قرطبی،3/178، النسآء، تحت الآیۃ:58(9)مراٰۃ المناجیح،4/62(10)ملخص از تفسیر نعیمی،5/159(11)تفسیر کبیر،4/109، النسآء، تحت الآیۃ:58(12)تفسیر نعیمی، 5/160(13)موسوعۃ ابن ابی الدنیا،7/244، حدیث:406(14)ترمذی،3/386، حدیث:1966-غیبت کی تباہ کاریاں، ص428(15)شعب الایمان،7/520،حدیث: 11191(16)مسلم، ص783، حدیث:4719(17)مجمع الزوائد،5/382، حدیث: 9071-التیسیر شرح الجامع الصغیر،2/396مفہوماً(18)مستدرک للحاکم،5/126، حدیث:7105(19)عمدۃ القاری،1/328بتغیر قلیل(20)مسلم، ص787،حدیث: 4743(21)فیضان ریاض الصالحین،3/203ملخصاً(22)ترمذی،1/373،حدیث: 357-مراٰۃ المناجیح،1/174(23)ابو داؤد،1/218،حدیث:517(24)مراٰۃ المناجیح، 1/414ملتقطاً(25)ابو داؤد، 3/350، حدیث: 3383-مشکاۃ المصابیح، 1/542، حدیث:2933 (26)مراٰۃ المناجیح، 4/310 (27) مسلم، ص579، حدیث:3543(28)الزواجر،2/95(29)جنتی زیور، ص51۔

रौशन सितारे

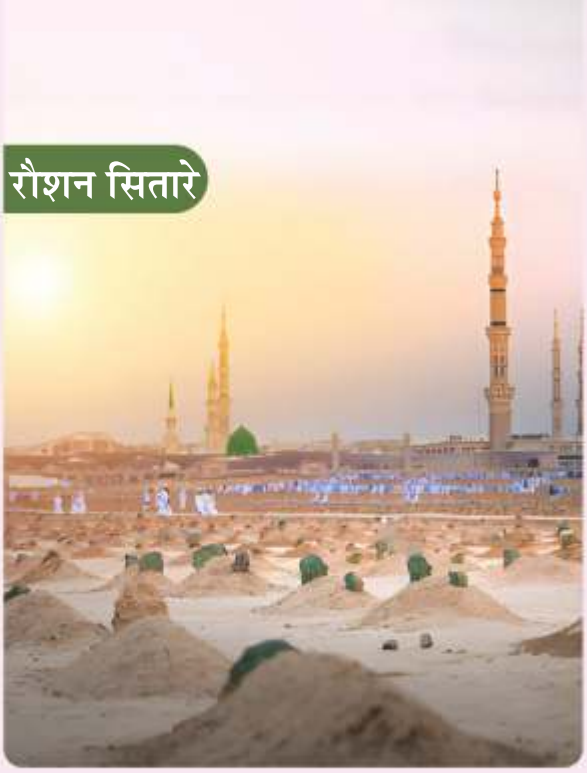

हज़रते ज़िमाम बिन सालबा رضی اللہ عنہ

सहाबिए रसूल हज़रते ज़िमाम बिन सालबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उम्दा औसाफ़ के मालिक होने के साथ साथ निहायत समझदार भी थे रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तारीफ़ी कलिमात अदा कर के आप की समझदारी पर मुहर लगा दी,[1] आप कोई बात लगी लिपटी न रखते जो बात करनी या पूछनी होती तो साफ़ और वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में पूछ लेते, कलाम मुख़्तसर और जामेअ़ करते थे यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बाने ह़क़ से येह कलिमात जारी हुए : मैं ने ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा से बढ़ कर मुख़्तसर और बेहतरीन अन्दाज़ में सुवाल करने वाला किसी को न पाया,[2] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ को क़बूल करने वाले भी थे कि जब ह़क़ वाज़ेह़ हो जाता तो उसे क़बूल करने में ताख़ीर न करते, आप अमीन भी थे जो बातें रसूले दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनीं वोही बातें क़ौम तक पहुंचाईं, आप ह़ौसला मन्द और इस्लाह़ का जज़्बा रखने वाले मुबल्लिग़ भी थे कि क़ौम ने आप को डराया धमकाया लेकिन आप ने उन की धमकियों का ख़याल न किया और नेकी की दावत जारी रखी यहां तक कि पूरा क़बीला मुसलमान हो गया और वहां परचमे इस्लाम लहराने लगा । बरकतों से मालामाल ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा के बारे में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमान है : हम ने किसी क़ौम के क़ासिद के बारे में नहीं सुना कि वोह ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा से अफ़्ज़ल हो ।[3] एक क़ौल के मुताबिक़ यूं फ़रमाया : हम ने किसी क़ौम के क़ासिद के बारे में नहीं सुना कि उस ने ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा के बारे में कोई नापसन्दीदा बात कही हो ।[4]

बारगाहे रिसालत में सिने 9 हिजरी में[5] क़बीला बनू सअ़द ने ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा को अपना क़ासिद बना कर बारगाहे रिसालत में भेजा, आप ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ के दरवाज़े पर अपने ऊंट को बिठा कर रस्सी से बांधा और मस्जिद में दाख़िल हो गए, मालिके दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के दरमियान जल्वा फ़रमा थे[6] आप ने पूछा : ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटे कौन हैं ? सह़ाबए किराम ने मुख़्तारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा कर के बताया : येह टेक लगाए हुए सुर्ख़ व सफ़ेद रंगत वाले हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब गए और कहने लगे :[7] मैं आप से कुछ सुवालात करूंगा, लहजा सख़्त हो जाएगा आप दिल में बुरा मह़सूस न कीजिएगा, सरदारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं दिल में बुरा मह़सूस नहीं करूंगा जो चाहे सुवाल कर लो !![8]

सुवाल : आस्मान को किस ने पैदा किया ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह ने ! **सुवाल :** ज़मीन को किस ने पैदा किया ? फ़रमाया : अल्लाह ने ! **सुवाल :** इन पहाड़ों को किस ने खड़ा किया और इन में नफ़्अ़ बख़्श पोशीदा चीज़ें किस ने रखीं ? फ़रमाया : अल्लाह ने[9] **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हमारी त़रफ़ रसूल बना कर भेजा है ? फ़रमाया : हां ! **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता

हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है कि अल्लाह के साथ इबादत में किसी को शरीक न करें ? फ़रमाया : हां !(10) **सुवाल :** आप को आप के रब और आप से पिछलों के रब की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को तमाम लोगों की तरफ़ मबऊस फ़रमाया है ? फ़रमाया : हां ! **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है कि हम दिन रात में पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ें ? फ़रमाया : हां !(11) **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है कि हम रमज़ान के महीने में रोज़े रखें ? फ़रमाया : हां !(12) **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है कि आप हमारे मालदारों से सदक़ा लें और हमारे ग़रीब लोगों में उसे तक़्सीम कर दें ? फ़रमाया : हां !(13) **सुवाल :** मैं अल्लाह की क़सम दे कर पूछता हूं ! क्या अल्लाह ने आप को हुक्म दिया है कि हम में जो बैतुल्लाह का हज करने की ताक़त रखता है वोह हज करे ? फ़रमाया : हां !(14) आख़िर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहने लगे : मैं आप के दीन पर ईमान लाता हूं मैं अपनी क़ौम बनू सअ़द की तरफ़ से क़ासिद हूं, मेरा नाम ज़िमाम बिन सालबा है ।(15) एक रिवायत में है कि सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के बारे में जवाब इरशाद फ़रमाने के बाद इस्लाम में हराम कर्दा अश्या को बयान किया(16) तो आप ने अ़र्ज़ की : उन बुरी बातों से तो हम पहले ही बचते थे,(17) फिर कलिमए शहादत पढ़ कर कहा : मैं वोही करूंगा जिस का आप ने मुझे हुक्म दिया है और उन बातों (को दूसरों को बताने) में न कमी करूंगा और न (अपनी तरफ़ से) कुछ इज़ाफ़ा करूंगा,(18) आप जब वापस जाने लगे तो जाने दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : समझदार मर्द है ।(19) एक रिवायत के मुताबिक़ येह फ़रमाया : अगर इस दो ज़ुल्फ़ों वाले ने सच कहा है तो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा ।(20) हज़रते ज़िमाम बिन सालबा ऊंट के पास आए, उस की रस्सी खोली सुवार हुए और क़ौम के पास वापस आ गए ।(21)

क़बीले वापसी हुई क़बीले पहुंचे तो सब लोग आप के क़रीब जम्अ़ हो गए और पूछने लगे : ऐ ज़िमाम ! वहां क्या हुवा ? आप ने क़ौम के झूटे माबूद लात व उ़ज़्ज़ा को सख़्त जुम्ले कहने शुरूअ़ कर दिए, येह देख कर क़ौम कहने लगी : उन्हें बुरा मत कहो ! अपने आप को बर्स, जुज़ाम और जुनून से बचाओ (कहीं येह माबूद बुरा कहने की वजह से तुम को इन बीमारियों में मुब्तला न कर दें), आप ने फ़रमाया : तुम्हारा बुरा हो ! तुम सिर्फ़ बातिल पर हो, अल्लाह की क़सम ! येह न तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सकते हैं और न कोई फ़ाएदा, बेशक अल्लाह पाक ने एक रसूल हादिए दो आ़लम को भेजा है और एक दीन को लाज़िम कर दिया है मैं तुम्हारे पास उसी नबिय्ये दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीनी अह़कामात लाया हूं ।(22)

अल्लाह पाक ने अपने ह़बीबे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक किताब नाज़िल की है तुम जिन बुराइयों में मुब्तला हो आक़ाए दो आ़लम तुम्हें उन से बचाना चाहते हैं, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं और मैं तुम्हारे पास उन ही की तरफ़ से वोह अह़कामात लाया हूं जिन का उन्हों ने हुक्म दिया है और जिन बातों से मन्अ़ किया है । रावी कहते हैं : अल्लाह की क़सम ! उस दिन की शाम गुज़रने भी न पाई थी कि हर औ़रत और मर्द मुसलमान हो चुका था,(23) फिर उन लोगों ने क़बीले में मसाजिद बनाईं और नमाज़ के लिए अज़ानें देने लगे ।(24) जब किसी बात में इख़्तिलाफ़ होता तो एक दूसरे से कहते : अपने क़ासिद (ह़ज़रते ज़िमाम) की बात को मज़बूती से थामे रखो ।(25) ह़ज़रते ज़िमाम बिन सालबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तारीख़े वफ़ात के बारे में कुतुबे तारीख़ ख़ामोश हैं ।(26)

---

(1) زرقانی علی المواہب، 5/199 (2) معجم الصحابہ للبغوی، 3/402 (3) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/377 (4) المجلیس الصالح لابن طرار النہروانی، 1/492 (5) زرقانی علی المواہب، 5/193 (6) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/374 (7) سبل الہدیٰ والرشاد، 6/353 (8) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/374 (9) سبل الہدیٰ والرشاد، 6/353 (10) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/374 (11) بخاری، 1/39، حدیث: 63 (12) معجم الصحابہ للبغوی، 3/402 (13) بخاری، 1/39، حدیث: 63 (14) معجم الصحابہ للبغوی، 3/402 (15) بخاری، 1/39، حدیث: 63 (16) استیعاب، 2/305 (17) معجم الصحابہ للبغوی، 3/402 (18) استیعاب، 2/305 (19) سیرت حلبیہ، 3/309 (20) استیعاب، 2/305 (21) دلائل النبوۃ للبیہقی، 5/375 (22) مسند بزار، 11/386 (23) مستدرک، 3/600، حدیث: 4437 (24) سیرت ابن کثیر، 4/118 (25) الاکتفاء للکحیری، 1/606 (26) زرقانی علی المواہب، 5/199۔

कम सिन सह़ाबए किराम

रसूलुल्लाह ﷺ के दस्ते रह़मत का फ़ैज़ पाने वाले

क़ारेईने किराम ! अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में अपने आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना (यानी सीरते मुबारका) को हमारे लिए बेहतरीन नुमूना क़रार दिया है, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है ।[1] रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी ज़िन्दगी पाकीज़ा अख़्लाक़ व आ़दात का सर चश्मा थी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी की इ़बादात (यानी नमाज़, रोज़ा, ह़ज वग़ैरा) के मुआ़मलात हों या रहन सहन (मसलन उठने बैठने, चलने फिरने, सोने जागने, बात चीत वग़ैरा) के या लैन दैन (यानी तिजारत, क़र्ज़, अमानत वग़ैरा) के मुआ़मलात हों सब में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी रहती दुन्या तक एक बेहतरीन रोल मॉडल की हैसिय्यत रखती है । रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका में हमें बड़ों की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करना और छोटों पर शफ़्क़त करना दोनों ही चीज़ें मिलती हैं, इस मज़मून में हम उन मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त का बयान करेंगे कि जिन में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा, आइए ! 20 ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते रसूल से सरशार कीजिए ।

1 ह़ज़रते इ़मामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा थे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : किसी को भी घर में दाख़िल नहीं होने देना, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه घर में दाख़िल हो गए, तो मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रोने की आवाज़ सुनी, मैं ने घर में झांक कर देखा तो इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गोद में बैठे हुए थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोते हुए उन के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेर रहे थे, मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक की क़सम ! मुझे इ़ल्म नहीं कि येह घर में कब दाख़िल हुए ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام घर में हमारे साथ थे, जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ह़ुसैन से मह़ब्बत करते हैं ? मैं ने कहा : जी हां मैं दुन्या में इस से ज़ियादा मह़ब्बत करता हूं, जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : अ़नक़रीब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत इन को करबला की ज़मीन पर क़त्ल कर देगी, फिर जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने करबला की मिट्टी उठा कर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखाई ।[2]

2 ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ह़ातिब जुमह़ी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मेरी वालिदा ह़ज़रते उम्मे जमील رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا मेरे बचपन का वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाती हैं कि मैं तुम्हें ह़ब्शा से ले कर मदीनए मुनव्वरा आ रही थी तो मदीनए मुनव्वरा से एक या दो दिन के फ़ासिले पर रुकी और तुम्हारे लिए ख़ाना पकाने लगी कि लकड़ियां ख़त्म हो गईं, मैं लकड़ियां तलाश करने निकली तो तुम ने हांडी गिरा दी जो उलट कर तुम्हारे बाज़ू पर गिरी, मैं तुम्हें ले कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! येह मुह़म्मद बिन ह़ातिब है । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

तुम्हारे मुंह में अपना लुआबे दहन डाला, तुम्हारे सर पर हाथ फेरा, तुम्हारे लिए बरकत की दुआ फ़रमाई अपना लुआबे दहन तुम्हारे हाथ पर लगाया और येह अल्फ़ाज़ पढ़े :

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاس

وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا یُغَادِرُ سَقَمًا

यानी ऐ लोगों के रब ! इस तक्लीफ़ को दूर फ़रमा और शिफ़ा अ़ता फ़रमा क्यूंकि तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं, ऐसी शिफ़ा अ़ता फ़रमा जो बीमारी का नामो निशान भी न छोड़े, ह़ज़रते उम्मे जमील कहती हैं कि मैं तुम्हें रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से ले कर उठी भी नहीं थी कि तुम्हारा हाथ ठीक हो गया था ।[3]

3 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ की बकरियां चराया करता था, एक दिन रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ मेरे पास से गुज़रे और फ़रमाया : ऐ लड़के ! क्या तुम्हारे पास दूध है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां, लेकिन मैं इस पर अमीन हूं । रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी बकरी है जिस पर नर जानवर न आया हो ? तो मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ऐसी बकरी ले आया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के थनों पर हाथ फेरा तो उस के थनों में दूध उतर आया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बरतन में उस का दूध दोहा, ख़ुद भी पिया और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी पिलाया, फिर बकरी के थनों से फ़रमाया कि सुकड़ जाओ तो बकरी के थन सुकड़ गए । मैं कुछ देर बाद रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे भी येह सिखा दीजिए । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मुझे दुआ दी कि अल्लाह पाक तुम पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाए, बेशक तुम समझदार लड़के हो ।[4]

4 ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अनस बिन फ़ज़ाला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने तशरीफ़ लाए तो मैं दो हफ़्ते का था, मुझे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाया गया, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मुझे दुआए बरकत से नवाज़ा ।[5] आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साह़िबज़ादे ह़ज़रते यूनुस फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद साह़िब ने लम्बी उ़म्र पाई थी, आप के सर के तमाम बाल बुढ़ापे की वजह से सफ़ेद हो गए थे लेकिन सर के वोह बाल जहां हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दस्ते शफ़्क़त फेरा था वोह सफ़ेद नहीं हुए थे ।[6]

5 ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे मेरी ख़ाला नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गईं और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा भांजा बीमार है, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिए दुआए बरकत फ़रमाई, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया तो मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का पानी पिया, फिर मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पीठ के पीछे खड़ा हुवा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नुबुव्वत देखी ।[7]

6 ह़ज़रते कुर्त़ बिन अबू रिमसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने वालिद ह़ज़रते अबू रिमसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ मदीनए मुनव्वरा हिजरत की, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू रिमसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा कि येह तुम्हारा बेटा है ? ह़ज़रते अबू रिमसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : जी हां । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते कुर्त़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बुला कर अपनी गोद मुबारक में बिठा लिया और उन के लिए बरकत की दुआ की, उन के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और उन के सर पर सियाह इ़मामा शरीफ़ बांधा ।[8]

7 ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं कम उ़म्र लड़का था, अन्सार के खजूर के दरख़्त पर पथ्थर मार रहा था, तो उन लोगों ने मुझे पकड़ लिया और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ राफ़ेअ़ ! इन के दरख़्तों पर पथ्थर क्यूं मार रहे थे ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! भूक लग रही थी,

खाने के लिए । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दरख़्त पर पथ्थर नहीं मारो बल्कि जो खजूरें खुद नीचे गिर जाएं उन में से खा लो । फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मेरे लिए येह दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह ! इस का पेट भर दे ।[9]

8 हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब पैदा हुए तो आप के नानाजान हज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप को एक कपड़े में लपेट कर रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने आज तक इतने छोटे जिस्म वाला बच्चा नहीं देखा । मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चे को घुट्टी दी, सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और दुआए बरकत से नवाज़ा । (दुआए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि) हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जब किसी क़ौम (Nation) में होते तो क़द में सब से ऊंचे (Tall) नज़र आते ।[10]

9 हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़त्बा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे हज़रते हम्ज़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा कि आप को रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कोई बात याद है ? तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मुझे याद है कि जब मैं पांच या छे साल का था तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे पकड़ कर अपनी मुबारक गोद में बिठाया, मेरे सर पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा, मेरे लिए और मेरे बाद की औलाद के लिए बरकत की दुआ की ।[11]

10 हज़रते साइब बिन अक़रअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा हज़रते मुलैका رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इत्र बेचा करती थीं, एक बार आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इत्र बेचने के लिए रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुईं तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ मुलैका ! क्या तुझे कोई हाजत दरपेश है ? हज़रते मुलैका رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : जी हां । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे बताओ ताकि मैं उसे पूरा कर दूं । हज़रते मुलैक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप मेरे बेटे (साइब) के लिए दुआ फ़रमा दीजिए, उस वक़्त हज़रते साइब अपनी वालिदा के साथ थे और कम उ़म्र लड़के थे, आप हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आए तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और आप के लिए बरकत की दुआ फ़रमाई ।[12]

11 हज़रते सलमा बिन उ़रादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इमाम इब्ने असीर जज़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सलमा बिन उ़रादा और हज़रते उ़यैना बिन हिसन फ़ज़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के दरमियान रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू के बचे हुए पानी के हवाले से निज़ाअ़ (झगड़ा) हो रहा था, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़यैना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : लड़के को वुज़ू करने दो । हज़रते सलमा बिन उ़रादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने वुज़ू किया और जो पानी बचा वोह पी लिया, फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सर और चेहरे पर दस्ते शफ़्क़त फेरा ।[13]

12 हज़रते हन्ज़ला बिन हिज़यम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिद हज़रते हिज़यम ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे चन्द बेटे हैं, येह सब से छोटा बेटा है इस के लिए दुआ फ़रमाइए कि येह किसी मुसीबत में मुब्तला न हो । रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ लड़के ! यहां आओ, मेरा हाथ पकड़ा, मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और येह दुआ दी : अल्लाह पाक इस में बरकत अ़ता फ़रमाए । हज़रते ज़ियाल बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : (दुआए नबवी की येह बरकत ज़ाहिर हुई कि) मैं ने हज़रते हन्ज़ला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को देखा, जब उन के पास किसी सूजन वाले शख़्स को लाया जाता, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उस पर अपना हाथ फेरते और बिस्मिल्लाह कहते तो उस की सूजन ख़त्म हो जाती ।[14]

13 हज़रते मदलूक अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप फ़रमाते हैं कि मैं अपने आक़ाओं के साथ रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और मैं ने उन के साथ इस्लाम क़बूल कर लिया, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने पास बुलाया, मेरे सर पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा और मेरे लिए दुआए बरकत फ़रमाई, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते शफ़्क़त फेरने की वजह से (बुढ़ापे में भी) हज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सर के अगले हिस्से के

बाल काले थे और उन के इलावा बक़िय्या तमाम बाल सफ़ेद थे।[15]

14 हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम رضی اللہ تعالٰی عنہما

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की वालिदा हज़रते ज़ैनब बिन्ते हुमैद رضی اللہ تعالٰی عنہا आप को ले कर नबिय्ये करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में हाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ! इसे बैअ़त कर लीजिए। हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और आप के लिए बरकत की दुआ़ फ़रमाई।[16]

15 हज़रते मुह़म्मद बिन त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہما

जब आप رضی اللہ تعالٰی عنہ पैदा हुए तो आप के वालिद हज़रते त़ल्ह़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ आप को ले कर रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए, हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और आप का नाम मुह़म्मद रखा।[17]

16 हज़रते यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मेरा नाम यूसुफ़ रखा, मुझे अपनी गोद मुबारक में बिठाया और मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा।[18]

17 हज़रते क़ुर्रह बिन इयास رضی اللہ تعالٰی عنہ

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ बचपन में रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए, हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप के सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और आप के लिए बख़्शिश की दुआ़ फ़रमाई।[19]

18 हज़रते अ़म्र बिन हुरैस رضی اللہ تعالٰی عنہما

आप رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा हज़रते अ़म्रह बिन्ते हिशाम رضی اللہ تعالٰی عنہا मुझे रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ले कर गईं तो आप صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे रिज़्क़ में बरकत की दुआ़ से नवाज़ा।[20]

19 हज़रते उम्मे जमील बिन्ते औस मरई رضی اللہ تعالٰی عنہا

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا अपने वालिदे माजिद हज़रते औस के साथ हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में हाज़िर हुईं, आप के सर पर ज़मानए जाहिलिय्यत के बाल (ज़मानए जाहिलिय्यत में लड़कियों के सर के पेशानी के कुछ बाल लम्बे रखे जाते थे और बक़िय्या बाल मूंड दिए जाते थे) बने हुए थे तो रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने आप के वालिद हज़रते औस से फ़रमाया कि इस के सर से ज़मानए जाहिलिय्यत की निशानी दूर कर दो और फिर इसे मेरे पास ले कर आओ। मेरे वालिद मुझे ले गए और मेरे सर से ज़मानए जाहिलिय्यत की निशानी दूर कर के मुझे दोबारा नबिय्ये करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ले कर हाज़िर हुए। हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मुझे दुआ़ए बरकत से नवाज़ा और मेरे सर पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा।[21]

20 हज़रते जमरह बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رضی اللہ تعالٰی عنہما

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं कि मुझे मेरे वालिद हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में ले कर हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : मेरी बेटी के लिए बरकत की दुआ़ फ़रमा दीजिए। रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने मुझे अपनी मुबारक गोद में बिठाया, मेरे सर पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरा और मेरे लिए दुआ़ए बरकत फ़रमाई।[22]

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : बच्चों के सर पर हाथ फेरना, दुआ़ करना सुन्नत है।[23]

नीज़ इन वाक़िआ़त से हमें भी येह दर्स मिलता है कि हम अपने से छोटों पर शफ़्क़त करते हुए प्यार से उन के सर पर हाथ फेरें और मौक़अ़ की मुनासबत से उन को दुआ़एं भी दें। अल्लाह पाक हमें भी रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की तालीमात पर अ़मल करते हुए दूसरों के साथ शफ़्क़त वाला मुआ़मला करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ21، الاحزاب:21 (2) معجم کبیر للطبرانی، 3/108، حدیث:2819- معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 2/12 (3) مسند احمد، 24/191، حدیث:15453 (4) مسند احمد، 6/82، حدیث: 3598 (5) اسد الغابہ، 5/82 (6) الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 6/4 (7) بخاری، 1/89، حدیث:190 (8) دیکھئے: الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 5/391، 392 (9) دیکھئے: ابوداؤد، 3/55، حدیث:2622- ترمذی، 3/44، حدیث:1292 (10) الاصابۃ فی تمییز الصحابہ، 5/29 (11) معجم اوسط، 1/99، حدیث:303 (12) معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 2/497- 5/311 (13) دیکھئے: اسد الغابہ، 2/503 (14) معجم کبیر، 4/13، حدیث: 3501 (15) دیکھئے: تاریخ کبیر، 7/361- تاریخ ابن عساکر، 57/191 (16) دیکھئے: بخاری، 2/145، حدیث: 2501 (17) الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 3/428 (18) ادب المفرد، ص113، رقم:372 (19) مسند احمد، 26/182، حدیث:16250 (20) ادب المفرد، ص177، حدیث:647 (21) دیکھئے: اسد الغابہ، 1/225 (22) دیکھئے: اسد الغابہ، 7/56 (23) مراٰۃ المناجیح، 4/308

वाइज़े उम्मत इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رحمۃ اللہ علیہ

नाम व कुन्यत नाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद बिन सुफ़्यान बिन क़ैस क़रशी है, कुन्यत अबू बक्र और शोहरत इब्ने अबिद्दुन्या के नाम से है।

विलादत आप 208 हिजरी को बग़दाद में पैदा हुए।[1]

असातिज़ए किराम आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने अपने वक़्त के जय्यिद उ़लमा और अकाबिर मुह़द्दिसीन से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। आप के असातिज़ा में से चन्द मशहूर नाम येह हैं : इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी, इमाम अबू दावूद सजिस्तानी, इमाम क़ासिम बिन सलाम, साह़िबे त़बक़ात इमाम इब्ने सअ़्द और इमाम अबू ह़ातिम राज़ी رحمۃ اللہ علیہم।[2]

तलामिज़ा आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ से इ़ल्म ह़ासिल करने वालों में से कुछ के नाम येह हैं : इमाम इब्ने अबी ह़ातिम, इमाम इब्ने माजा, इमाम अबुल अ़ब्बास बिन अ़क़्दा, और इमाम अबू बक्र अह़मद बिन मरवान दीनवरी رحمۃ اللہ علیہم। इन के इ़लावा भी बहुत लोगों ने आप के उ़लूम से फ़ैज़ पाया है। इमाम ज़हबी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने तक़रीबन 26 तलामिज़ा के नाम ज़िक्र किए हैं।[3] और इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने 17 के नाम ज़िक्र किए हैं।[4]

तारीफ़ी कलिमात 1 इमाम इब्ने अबी ह़ातिम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : मैं और मेरे वालिद, इमाम इब्ने अबी दुन्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की रिवायात लिखा करते थे, एक दिन किसी ने मेरे वालिद साह़िब से इमाम इब्ने अबी दुन्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के बारे में पूछा तो वालिद साह़िब ने फ़रमाया : वोह सच्चे आदमी हैं।[5]

2 क़ाज़ी इस्माईल बिन इस्ह़ाक़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ने आप के विसाल के मौक़े़अ़ पर कहा : अल्लाह पाक अबू बक्र (इमाम इब्ने अबिद्दुन्या) को ग़रीक़े रह़मत फ़रमाए ! उन के साथ कसीर इ़ल्म भी चला गया।[6]

3 इमाम ज़हबी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ सच्चे आ़लिम और मुह़द्दिस थे।[7]

4 मुअर्रिख़ इब्ने नदीम ने कहा : इमाम इब्ने अबी दुन्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ख़लीफ़ा मुक्तफ़ी बिल्लाह के उस्ताद हैं। आप एक मुत्तक़ी और परहेज़गार आदमी थे और अख़्बार व रिवायात के बहुत बड़े आ़लिम थे।[8]

5 अ़ल्लामा इब्ने तुग़री बुरदी ह़नफ़ी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : इमाम इब्ने अबी दुन्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ आ़लिम, ज़ाहिद, मुत्तक़ी और इ़बादत गुज़ार थे। आप से कसीर ह़ज़रात ने रिवायत किया और उ़लमा ने आप के सिक़ा, सच्चे और अमानतदार होने पर इत्तिफ़ाक़ किया।[9]

6 इमादुद्दीन इब्ने कसीर कहते हैं : आप मुफ़ीद तसानीफ़ वाले, सच्चे ह़ाफ़िज़े ह़दीस और अच्छे अख़्लाक़ वाले थे।[10]

7 सिब्त़ इब्ने जौज़ी कहते हैं : आप पेश्वा, आ़लिमे दीन, फ़ाज़िल, दुन्या से बे रग़बत और बड़ी मुरव्वत वाले थे। आप की तसानीफ़ अच्छी और बा बरकत हैं।[11]

तसानीफ़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कसीर किताबें तस्नीफ़ फ़रमाई हैं जिन में से अक्सर ज़ोहदो रिक़ाइक़ पर मुश्तमिल हैं । आप की नसीहतों और मवाइज़ और कुतुब को हर दौर में बे पनाह मक़्बूलिय्यत ह़ासिल रही है । ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ज़ोहद के मौज़ूअ़ पर 100 से ज़ाइद कुतुब लिखी हैं ।[12] इमाम ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप की 183 किताबों के नाम बयान किए हैं । आप की चन्द किताबों के नाम येह हैं :

1 अल क़नाअ़त 2 क़सरुल अमल 3 अस्सम्त 4 अत्तौबह 5 अल यक़ीन 6 अस्सब्र 7 अल जूअ़ 8 हुस्नुज़्ज़न्नि बिल्लाह 9 अल औलिया 10 सिफ़तुन्नार 11 सिफ़तुल जन्नत 12 ताबीरुर्रुअया 13 अद्दुआ़ 14 ज़म्मुद्दुन्या 15 अल अख़्लाक़ 16 करामातुल औलिया 17 आ़शूरा 18 अल मनासिक 19 अख़्बारु मुआ़विया 20 अख़्बारु क़ुरैश 14 अख़्बारुल मुलूक 22 अख़्बारुस्सौरी 23 अख़्बारुल आराब 24 ज़म्मुल मुस्किर 25 ज़म्मुल किज़्ब 26 ज़म्मुल बग़ी 27 ज़म्मुल ग़ीबत 28 ज़म्मुल ह़सद 29 ज़म्मुर्रिबा 30 ज़म्मुर्रिया 31 ज़म्मुल बुख़्ल 32 ज़म्मुश्शहवात ।[13]

दावते इस्लामी इन्डिया के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दो किताबें "अश्शुक्रुलिल्लाह" तर्जमा बनाम "शुक्र के फ़ज़ाइल" (कुल सफ़्ह़ात 122) और ज़म्मुल किज़्ब व अहलिह" तर्जमा बनाम "झूट" (कुल सफ़्ह़ात 39) पर तख़रीज, तर्जमा, मुश्किल अल्फ़ाज़ पर एराब और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुफ़ीद और ज़रूरी ह़वाशी वग़ैरा का काम किया गया है । पहली किताब "शुक्र के फ़ज़ाइल" में शुक्र की ह़क़ीक़त, अम्बियाए किराम, सह़ाबा व औलिया का अन्दाज़े शुक्र नीज़ नाशुक्री के नुक़्सानात को बयान किया गया है । दूसरी किताब "झूट" में झूट की तारीफ़, झूट की जाइज़ और नाजाइज़ सूरतें, अह़ादीस, आसार और बुज़ुर्गाने दीन से मन्क़ूल झूट की मज़म्मत बयान की गई है ।

वफ़ात आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बरोज़ मंगल 14 जुमादल ऊला 281 हिजरी में वफ़ात पाई । क़ाज़ी यूसुफ़ बिन याक़ूब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई । आप के जसदे ख़ाकी को "शूनीज़िय्या" (बग़दाद) के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक किया गया ।[14]

---

(1) سیر اعلام النبلاء، 10/694 (2) سیر اعلام النبلاء، 10/694، تہذیب التہذیب، 4/473 (3) سیر اعلام النبلاء، 10/696 (4) تہذیب التہذیب، 4/473 (5) تہذیب التہذیب، 4/474 (6) تہذیب التہذیب، 4/474 (7) تذکرۃ الحفاظ، 2/181 (8) الفہرست، ص262 (9) النجوم الزاہرۃ، 3/86 (10) البدایۃ والنہایۃ، 7/450 (11) مرأۃ الزمان، 16/175 (12) المنتظم لابن جوزی، 12/341 (13) سیر اعلام النبلاء، 10/697 (14) تاریخ بغداد، 10/91، 90- مقدمۃ التحقیق، ذم الکذب، ص12- المنتظم فی تاریخ الامم والملوک، 12/342۔

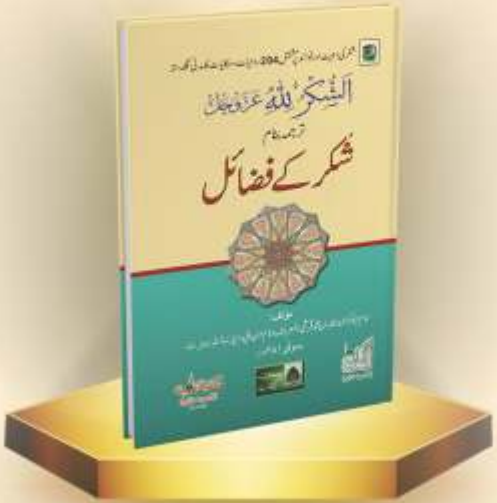

मज़ार हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद अक्बर अ़ली चिश्ती मैरवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

मज़ार हज़रते पीर मुहम्मद याक़ूब शाह सोहावी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

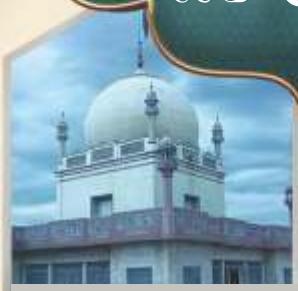

मज़ार हज़रते सय्यिद मुहम्मद हुसैन जमाअ़ती رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

जुमादल ऊला इस्लामी साल का पांचवां महीना है। इस में जिन सहाबए किराम, उ़लमाए इस्लाम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम का विसाल हुवा, उन में से 11 का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

सहाबए किराम علیہم الرضوان

शुहदाए जंगे अजनादैन : जंगे अजनादैन ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर में 27 जुमादलऊला 13 हिजरी को अजनादैन (मौजूदा सूबा अल ख़लील, फ़िलिस्त़ीन) के मक़ाम पर रूमी फ़ौज से हुई। मुसलमानों के सिपह सालार हज़रते अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ थे, इस में मुसलमान फ़त्हयाब हुए, शहीद होने वालों में कई जलीलुल क़द्र सहाबा भी थे।[1]

1 सहाबिए रसूल हज़रते ह़ारिस बिन ह़ारिस क़रशी सहमी رضی اللہ تعالٰی عنہ की पैदाइश क़ुरैश के सरदार और अमीर शख़्स ह़ारिस बिन क़ैस के घर हुई, उन्हें अपने सात भाइयों हज़रते अबू क़ैस, हज़रते अ़ब्दुल्लाह, हज़रते साइब, हज़रते बिशर, हज़रते सईद, हज़रते तमीम और हज़रते मअ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہم समेत दौलते ईमान और सहाबिय्यत का शरफ़ ह़ासिल हुवा, सब को इस्लाम लाने के बाद ह़ब्शा और बाद में मदीनए मुनव्वरा हिजरत की सआ़दत नसीब हुई। हज़रते ह़ारिस बिन ह़ारिस ने जंगे अजनादैन (27 जुमादल ऊला 13 हिजरी) में जामे शहादत नोश फ़रमाया।[2]

औलियाए किराम رحمہم اللہ السّلام

2 बहरुर्राइक़ हज़रते शैख़ अबुल ग़ैस बिन जमील यमनी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ वलिए कामिल, मर्जए ख़लाइक़, कसीरुल फ़ैज़, साहिबे करामात और यमन के अकाबिर औलियाए किराम से थे। आप ने ह़ुदीदा शहर से 70 किलो मीटर के फ़ासिले पर वाक़ेअ़ अ़लाक़े अ़ता में ख़ानक़ाह क़ाइम की, आप की पैदाइश 603 हिजरी को कूफ़ा में हुई और आप ने 25 जुमादल ऊला 651 हिजरी को यमन में विसाल फ़रमाया, मज़ार ख़ानक़ाह अ़ता, ज़िलअ़ ह़ुदीदा, यमन में फ़ुयूज़ो बरकात का मर्कज़ है।[3]

3 पीरे त़रीक़त हज़रते शाह ख़ूबुल्लाह यह्या इलाहाबादी क़ादिरी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की विलादत 1080 हिजरी को इलाहाबादी (यूपी, हिन्द) में हुई और यहीं 11 जुमादल ऊला या जुमादल उख़रा 1143 हिजरी को विसाल फ़रमाया। आप हज़रते शैख़ मुहम्मद अफ़्ज़ल इलाहाबादी के भतीजे, शागिर्द, मुरीद, ख़लीफ़ा और जानशीन थे, आप आ़लिमे बा अ़मल, पीरे त़रीक़त और साहिबे तक़्वा थे।[4]

4 हज़रते ख़्वाजा अ़ल्लामा मुहम्मद अक्बर अ़ली चिश्ती मैरवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1301 हिजरी में हुई और 27 जुमादल ऊला 1376 हिजरी को यहीं विसाल फ़रमाया। आप मुतबह्हिर आ़लिमे दीन, आ़रिफ़े कामिल, ख़्वाजा अहमद मैरवी के मुरीद व ख़लीफ़ा, ख़त़ीबे मस्जिदे महल्ला उस्ताज़ुल उ़लमा, मुअस्सिर शख़्सिय्यत और शैख़े त़रीक़त थे।[5]

5 जिगर गोशा ग़रीब नवाज़ हज़रते पीर सय्यिद मुहम्मद याक़ूब शाह सोहावी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ की पैदाइश 1297 हिजरी कश्मीर में हुई। आप ने अपने वालिद से इब्तिदाई इल्म ह़ासिल करने के बाद अ़ल्लामा मुहम्मद गुल चिश्ती, ख़्वाजा अ़ब्दुल्लाह गढ़ी शरीफ़ और पीर महर अ़ली शाह वग़ैरा से इल्म ह़ासिल किया, वालिद

साहिब से बैअ़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल थीं, वालिद साहिब की वफ़ात के बाद आस्ताना चिश्तिय्या निज़ामिय्या के पहले सज्जादा नशीन बनाए गए। विसाल 27 जुमादल ऊला 1377 हिजरी को इन्तिक़ाल फ़रमाया, दरबार के अन्दर वालिद के पहलू में तदफ़ीन हुई।(6)

6 सिराजुल मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ सय्यिद मुह़म्मद हुसैन जमाअ़ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत तक़रीबन 1297 हिजरी में अ़लीपूर में हुई और यहीं 6 जुमादल ऊला 1381 हिजरी को विसाल फ़रमाया, वालिदे गिरामी अमीरे मिल्लत पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह के पहलू में दफ़्न किए गए। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, मुतबह़्ह़िर आ़लिमे दीन, मुदर्रिसे दर्से निज़ामी और फ़क़ीहे ह़नफ़ी थे।(7)

उ़लमाए इस्लाम رحمہم اللّٰہ السّلام

7 अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अह़मद बिन मुह़म्मद सीरामी ह़नफ़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जलीलुल क़द्र ह़नफ़ी आ़लिमे दीन, बेहतरीन मुदर्रिस और उस्ताज़ुल अइम्मा थे। येह ज़िन्दगी भर बिलादे हुरात, ख़्वारज़म, तबरेज़, ह़लब, शाम और क़ाहिरा मिस्र में तदरीस करते रहे, मश्हूर शागिर्दों में क़ारियुल हिदाया सिराजुद्दीन उ़मर ह़नफ़ी और अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद ऐ़नी शामिल हैं। आप का विसाल क़ाहिरा में 3 जुमादल ऊला 790 हिजरी या 795 हिजरी को हुवा, नमाज़े जनाज़ा में अ़वाम व ख़वास का इज़्दिहाम था, तदफ़ीन मक़्बरा सुल्तान नज़्द कुब्ता यूनुस अद्दवादार शारेअ़ कुब्बुन्नसर क़ाहिरा में हुई।(8)

8 उस्ताज़ुल ह़रमैन वल मिस्र ह़ज़रते शैख़ शम्सुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अ़लाउद्दीन बाबिली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत मौज़अ़ बाबिल सूबा मनूफ़िय्यह मिस्र में 1000 हिजरी और वफ़ात 25 जुमादल ऊला 1077 हिजरी को क़ाहिरा में हुई। आप ने ह़दीस, फ़िक़्हे शाफ़ेई और दीगर उ़लूम के लिए कई सफ़र किए। उ़लमाए अ़रब बिल ख़ुसूस उ़लमाए मक्का से भरपूर इस्तिफ़ादा किया, कहा जाता है कि आप ने शबे क़द्र में दुआ़ की, कि मैं फ़न्ने ह़दीस में इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी की त़रह़ हो जाऊं, आप की दुआ़ क़बूल हुई और आप को येह मक़ाम ह़ासिल हो गया, आप ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, मस्नदुल अ़स्र, फ़क़ीहे शाफ़ेई, मुदर्रिस व मुर्शिद, इ़बादत गुज़ार, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर और सोज़ो गुदाज़ के साथ कसरत से तिलावते क़ुरआन करने वाले थे।(9)

9 तूतिए हिन्द मौलाना इसरारुल ह़क़ सिद्दीक़ी रहतकी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1296 हिजरी को टोंक हिन्द में हुई और 30 जुमादल ऊला 1373 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आगरा में तदफ़ीन हुई। आप आ़लिमे दीन, बेहतरीन ख़त़ीब व वाइ़ज़, साह़िबे दीवान शाइ़र, इमाम व ख़त़ीब और मुह़िब्बे आला ह़ज़रत थे।(10)

10 उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना अह़मद दीन दरगाही رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत तक़रीबन 1900 ईसवी को गुजरात के इ़ल्मी व रूह़ानी दरगाही ख़ानदान में हुई और विसाल 9 जुमादल ऊला 1414 हिजरी में हुवा, आप फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, बाबाजी ख़्वाजा मुह़म्मद क़ासिम मोहड़वी के मुरीद, बेहतरीन ख़त़ीब, अख़्लाक़े ह़सना के मालिक और हर दिल अ़ज़ीज़ शख़्सिय्यत के मालिक थे, जाए पैदाइश में ख़ित़ाबत, तदरीस और रुश्दो हिदायत में मसरूफ़ रहे।(11)

11 ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मह़बूब शाह काज़िमी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 1321 हिजरी में हुई और 25 जुमादल ऊला 1418 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन ह़ज़रत शाह के पहलू में हुई। आप फ़ाज़िले दारुल उ़लूम ह़िज़्बुल अह़नाफ़, क़ाज़ी मुह़म्मद अ़ब्दुर्रह़ीम नक़्शबन्दी के मुरीद व ख़लीफ़ा, मर्कज़ी जामेअ़ मस्जिद ह़सन अब्दाल के ख़त़ीब, मुसन्निफ़े कुतुब थे।(12)

---

(1)البدایہ والنہایہ، 5/124، 170-الکامل فی التاریخ، 2/265، 345(2)اسد الغابہ، 1/470-البدایہ والنہایہ، 2/419(3)العقود اللؤلؤیۃ فی تاریخ الدولۃ الرسولیۃ، 1/107، 110- شذرات الذھب، 5/386(4)ملت راجشاہی، ص92، 93، 370(5)تذکرہ اکابر اہل سنت، ص66 تا68(6)فیضانِ سید علی، ص212 تا 223 (7)سیرت امیر ملت، 670 تا689(8)المنہل الصافی والمستوفی بعد الوافی، 2/175-172(9)الاعلام للزرکلی، 6/270-خلاصۃ الاثر، 4/39، 42(10)روشن دریچے، ص337 تا 339-تذکرہ علمائے اہل سنت، ص284-صد سالہ تاریخ انجمن نعمانیہ، ص128(11)حیات امام المحدثین، ص447 تا449(12)تذکرہ علماء اہل سنت 265 تا268-

लिखने के लिए उ़न्वान की तलाश

तेह़रीर व तस्नीफ़ ख़िदमते दीन का एक अहम और मज़बूत़ तरीन ज़रीआ़ है । तदरीस व तक़रीर के मुक़ाबले में बहुत कम अफ़राद इस शोबे से वाबस्ता होते हैं, क्यूंकि इस में कई त़रह़ की पेचीदगियां होती हैं । तेह़रीर व तस्नीफ़ का शौक़ रखने वालों की एक तादाद तो पहले ही मर्ह़ले यानी इन्तिख़ाबे उ़न्वान पर ही दिल बरदाश्ता हो जाती है और क़दम आगे नहीं बढ़ा पाती । इन्तिख़ाबे उ़न्वान भी एक मुकम्मल फ़न है, आइए ! इस ह़वाले से कुछ अहम निकात मुलाह़ज़ा करते हैं :

याद रखिए ! इन्तिख़ाबे उ़न्वान के लिए जिस क़दर ज़ियादा मवाक़ेअ़ और ऑपशन्ज़ होंगे उसी क़दर अपनी सलाह़ियात, मैलाने त़बअ़ और दिलचस्पी की रिआ़यत का मौक़अ़ मिलेगा । कसीर उ़न्वानात से आगाही ज़ेहनी इस्तिअ़दाद और फ़िक्र को भी जिला बख़्शती है । ज़ैल में इन्तिख़ाबे उ़न्वान में मुआ़विन चन्द अहम ज़राएअ़ पेश किए जाते हैं :

1. एह़सासात व मुशाहदात
2. कसरते मुत़ालआ़
3. अस्नाफ़े तेह़रीर से गहरी वाक़िफ़ियत
4. फ़ेहारिस व इशारियों का इस्तिमाल
5. ज़ेरे मुत़ालआ़ किताब के मसादिर व मराजेअ़ पर नज़र
6. सोशल मीडिया के इ़ल्मी व तह़क़ीक़ी प्लेट फ़ॉर्मज़ पर नज़र
7. कुतुब ख़ानों में आना जाना
8. रसाइल व जराइद से शग़फ़

एह़सासात व मुशाहदात

इन्तिख़ाबे उ़न्वान में सब से अहम तरीन ह़िस्सा एह़सासात और मुशाहदात का होता है । अगर आप लिखना चाहते हैं लेकिन कोई उ़न्वान नहीं मिल रहा तो तस्लीम कर लें कि आप अपने एह़सासात व मुशाहदात को ब रूए कार नहीं ला रहे । मसलन आप मस्जिद जाने के लिए घर से निकले, दूसरी या तीसरी गली में मस्जिद है और मस्जिद जाते जाते रास्ते में आप ने क्या क्या देखा ? गली में गन्दा पानी फैला हुवा है तो उस का सबब क्या था ? अगर आप एक लिखारी हैं या लिखने के शाइक़ हैं तो फ़ौरी त़ौर पर आप को महसूस करना चाहिए कि "राहे ख़ुदा के मुसाफ़िरों का भला कीजिए, सफ़ाई निस्फ़ ईमान है" वग़ैरा पर लिखा जाए ।

आप क्लास में हैं, त़लबा सबक़ सुना रहे हैं, एक त़ालिबे इ़ल्म मेह़नत तो करता है लेकिन अ़रबी किताब से सबक़ की तय्यारी में काफ़ी दिक़्क़त महसूस करता है, आप ने उस की दिक़्क़त को महसूस करते हुए गुज़श्ता पढ़ाए गए सबक़ के अल्फ़ाज़ मआ़नी पर मुश्तमिल लुग़त तय्यार कर दी, यूंही किताब मुकम्मल होने तक किताब की मुकम्मल लुग़त तय्यार हो जाती है ।

आप कुरआने पाक की तिलावत में मसरूफ़ हैं, क्या देखते हैं कि कहीं "غفور رحیم" तो कहीं "تواب رحیم" आ रहा है । कहीं "علیم خبیر" और कहीं "شهید،قدیر،حکیم" वग़ैरा"आ रहा है । यहां आप महसूस करते हैं कि कोई बात तो है कि येह अस्माए इलाहिय्या बदल बदल कर आ रहे हैं तो आप इस पर तह़क़ीक़ी मक़ाला या मज़मून लिखने की ज़रूरत महसूस करते हैं ।

तिलावते कुरआन के दौरान कई मक़ामात पर "لهم الجنة" के अल्फ़ाज़ पढ़े तो आप को महसूस होता है कि येह अलग अलग लोग हैं जिन के लिए "لهم الجنة" के अल्फ़ाज़ से ख़ुश ख़बरी दी गई है तो आप "कुरआनी बिशारतें, जन्नत के हक़दार कौन, जन्नत के कुरआनी वादे वग़ैरा" जैसे किसी उ़न्वान पर लिखने का एह़सास पाते हैं।

अल ग़रज़ येह एह़सास की कैफ़िय्यात हैं, अगर लिखने के शाइ़क़ीन इन को जगाने में कामयाब हो जाएं तो उ़न्वानात की कहीं कमी न रहे। बत़ौरे मिसाल मुख़्तसर और सादा उ़न्वानात बयान किए हैं अलबत्ता तफ़्सीली तह़क़ीक़ी उ़न्वानात भी इसी त़रह़ बनाए जा सकते हैं।

कसरते मुत़ालआ़

एह़सासात व मुशाहदात के साथ साथ कसरते मुत़ालआ़ से भी कसीर उ़न्वानात तक रसाई ह़ासिल होती है। जिस क़दर मुत़ालआ़ वसीअ़ होगा उसी क़दर तिश्नह और क़ाबिले तह़क़ीक़ उ़न्वानात पर नज़र होगी। दौराने मुत़ालआ़ कई ऐसी जिहात सामने आती हैं कि जिन पर मज़ीद तफ़्सीलात की ह़ाजत होती है लेकिन वोह सब यक्जा नहीं मिलता, यूं तिश्नह उ़न्वानात पर इत्तिलाअ़ होती है और उन्हें तह़क़ीक़ी मक़ाला या मज़मून के लिए मुन्तख़ब किया जा सकता है मसलन मैं एक मरतबा कातिबीने वह़ी के बारे में मुत़ालआ़ कर रहा था तो मुख़्तलिफ़ कुतुब में मुख़्तलिफ़ तह़क़ीक़ात और कातिबीन की मुख़्तलिफ़ तादाद देखने को मिली, इस से ज़ेह़न बना कि कातिबीने वह़ी को "कातिबीने बारगाहे रिसालत" के उ़न्वान से तह़क़ीक़ी मक़ाला के त़ौर पर पेश किया जाए जिस में वह़ी, ख़ुत़ूत़, फ़रामीन, मुआ़हदात और दस्तावेज़ात वग़ैरा लिखने वालों की अलग अलग तक़्सीम की जाए और इस का तफ़्सीली जाइ़ज़ा पेश किया जाए।

अस्नाफ़े तह़रीर से गहरी वाक़िफ़िय्यत

अस्नाफ़े तह़रीर से गहरी वाक़िफ़िय्यत और इन में ग़ौरो ख़ौ़ज़ भी इन्तिख़ाबे उ़न्वान में बहुत मुआ़विन है। अस्नाफ़े तह़रीर की वाक़िफ़िय्यत से एक ही मौज़ूअ़ पर कई कई मक़ालात तरतीब दिए जा सकते हैं। अस्नाफ़े तह़रीर की तफ़्सील اِن شآءَ الله जल्द माहनामा फ़ैज़ाने मदीना में ही पेश की जाएगी।

फ़हारिस व इशारियों का इस्तिमाल

फ़हारिस और इशारियों को उ़न्वानात के ज़ख़ाइर कहना बेजा न होगा बशर्त़ येह आप उन्हें मुस्तक़िल मुशाहदे का हिस्सा रखे। अक्सर कुतुब के आख़िर में आयात व अह़ादीस की फ़हारिस मिल जाती हैं मसलन अगर आप मुस्नद अह़मद बिन ह़म्बल की फ़हारिस देखें तो आप को अन्दाज़ा होगा कि "हम अल्फ़ाज़े अह़ादीस" की भी बड़ी तादाद है जैसे "اياكم، اَلَا، مَن سره" वग़ैरा अल्फ़ाज़ से कई अह़ादीस वारिद हैं तो इन अह़ादीस की तादाद देखते हुए भी उ़न्वान मुन्तख़ब किया जा सकता है जैसे "اياكم" से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तम्बीही उस्लूबे तफ़्हीम, एक तआ़रुफ़ी जाइ़ज़ा।

फ़हारिस से मुराद कुतुबो मक़ालात के आख़िर में दी गई आयात, अह़ादीस और मौज़ूआ़त की फ़हारिस हैं जब कि इशारियों से मुराद रसाइल व जराइद, कुतुब और मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात के तफ़्सीली इशारिये हैं। जैसा कि फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ का इशारिया है, बहारे शरीअ़त का भी इशारिया है। इन इशारियों के ज़रीए़ बहुत से ऐसे उ़न्वानात पर इत्तिलाअ़ हो जाती है जिन पर मुख़्तसर या अलग नौइय्यत से लिखा गया होता है जब कि उन्ही उ़न्वानात पर मुफ़स्सल तह़क़ीक़ी मक़ाला लिख कर इल्मी इज़ाफ़ा किया जा सकता है।

ज़ेरे मुत़ालआ़ किताब के मसादिर व मराजेअ़ पर नज़र

ज़ेरे मुत़ालआ़ कुतुब के मसादिर व मराजेअ़ भी इन्तिख़ाबे उ़न्वान में मुआ़विन होते हैं। बाज़ दफ़्आ़ मुह़व्वला कुतुब में मख़्तूत़ात भी शामिल होते हैं तो इन में मख़्तूत़ात पर तह़क़ीक़ी मक़ाला लिखा जा सकता है, किसी मख़्तूत़ की तह़क़ीक़ व तख़्रीज की जा सकती है, इसी त़रह़ मसादिर व मराजेअ़ से कई ग़ैर मारूफ़ कुतुब का इल्म हो जाता है जिन का तर्जमा, तख़रीज, ह़ाशिया निगारी या शर्ह़ का काम बत़ौरे तह़क़ीक़ी मक़ाला किया जा सकता है, सिर्फ़ येही नहीं बल्कि बाज़ कुतुब के सिर्फ़ मसादिर व मराजेअ़ का तह़क़ीक़ी जाइ़ज़ा भी बत़ौरे मक़ाला लिखा जा सकता है मसलन "फ़ैज़ाने सुन्नत की सक़ाहत का तह़क़ीक़ी जाइ़ज़ा, मसादिर व मराज़ेअ़ की रौशनी में," "फ़तावा रज़विय्या के

फ़िक़्ही मसादिर का एक जाइज़ा'', ''फ़तावा रज़विय्या के ह़दीसी मसादिर का एक जाइज़ा'', ''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल व जवाब की किताबियात का तह़क़ीक़ी जाइज़ा'' वग़ैरा।

सोशल मीडिया के इल्मी व तह़क़ीक़ी प्लेट फ़ॉर्मज़ पर नज़र

सोशल मीडिया और दीगर नेट वर्कस पर भी बहुत से इल्मी प्लेट फ़ॉर्मज़ मौजूद हैं जिन से कसीर कुतुब और उ़न्वानात तक रसाई मुम्किन है। अगर आप सोशल मीडिया इस्तिमाल करते हैं तो कुतुब, आर्टीकल्ज़, यूनीवर्सिटीज़ और अहले इल्म के पेजिज़ और ग्रूप्स वग़ैरा जोइन करें या वैसे ज़रूरतन विज़िट करें, ख़ास तौ़र पर जब भी कोई इल्मी पोस्ट शेर हो तो उस के कमेन्टस लाज़िमी देखें क्यूंकि कमेन्टस में अक्सर तन्क़ीदी व इस्लाही हर त़रह़ के मेसेजिज़ होते हैं जो कि कई नए उ़न्वानात को जनम देते हैं या जारी उ़न्वानात के तनव्वोअ़ की जानिब रहनुमाई करते हैं।

कुतुब ख़ानों में आना जाना

अगर आप का कुतुब ख़ानों यानी लाइब्रेरीज़, कुतुब की मार्केट्स और कुतुब की ऑन लाइन वेब साइट्स वग़ैरा के विज़िट का मामूल न हो तो आप को तह़क़ीक़ी मक़ाले के लिए उ़न्वान न मिलने का शिक्वा हरगिज़ नहीं करना चाहिए। क्यूंकि इन्तिख़ाबे उ़न्वान का सब से बड़ा और वाज़ेह़ मैदान तो आप ने बिल्कुल छोड़ रखा है। याद रखें कि जिस क़दर कुतुब ख़ानों के विज़िट की आ़दत होगी, नई से नई कुतुब, नए से नए रुजह़ानात तालीफ़ व तह़क़ीक़ से आगाही होगी, एक ही मौज़ूअ़ पर मुतनव्वेअ़ कुतुब देखने को मिलेंगी, इस विज़िट से आप अपने पास मौजूद एक आध उ़न्वान को भी कई त़रह़ से तक़्सीम करने और मुतनव्वेअ़ बनाने के क़ाबिल हो जाएंगे मसलन कुछ अ़र्से क़ब्ल लाइब्रेरी में एक किताब ''जामेउ़श्शुरूह़ वल ह़वाशी'' नज़र से गुज़री, कुछ देर जाइज़ा लिया तो अन्दाज़ा हुवा कि बर्रे सग़ीर में लिखी गई शुरूहात और ह़वाशी का मुअ़तदबा ह़िस्सा इस में शामिल नहीं, वहीं ख़याल गुज़रा कि इस पर एक मक़ाला ब उ़न्वान ''बर्रे सग़ीर के दर्सी ह़वाशी व शुरूहात का इस्तिक़राई जाइज़ा'' लिखा जाना चाहिए।

बहर कैफ़ कुतुब ख़ाने ऑन लाइन हों या लाइब्रेरीज़ की शक्ल में विज़िट ज़रूर करना चाहिए اِن شآءَ الله बहुत फ़ाएदा होगा।

रसाइल व जराइद से शग़फ़

रसाइल व जराइद में शाएअ़ होने वाले मज़ामीन पर ग़ौर करना चाहिए, कई मज़ामीन ऐसे होते हैं कि जिन पर तफ़्सीली मक़ाला लिखा जा सकता है लेकिन मज़मून निगार इशाअ़ती मजबूरी के बाइ़स सिर्फ़ दो से तीन सफ़ह़ात ही लिखता है, ऐसे अ़नावीन को भी इन्तिख़ाबे उ़न्वान के वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिए मसलन :

बाज़ मज़ामीन सीरियल वाइज़ या क़िस्त़ वार लिखे जाते हैं इन से भी तह़क़ीक़ी मक़ाला के लिए इन्तिख़ाबे उ़न्वान में मुआ़वनत मिलती है जैसे अगर माहनामा फ़ैज़ाने मदीना की मज़ामीन सीरियल ''कैसा होना चाहिए ?'' पर ग़ौर करें तो एक अहम उ़न्वान ''अहम मुआ़शरती किरदारों की ज़िम्मेदारियां और ह़ुक़ूक़'' बनाया जा सकता है।

इसी त़रह़ सीरियल ''ह़ुस्ने मुआ़शरत के नबवी उसूल'' पर ग़ौर किया जाए तो येही उ़न्वान तह़क़ीक़ी मक़ाला के लिए मुन्तख़ब किया जा सकता है और अगर चाहें तो कुछ ह़ुदूद व क़ुयूद का इज़ाफ़ा या तब्दीली की जा सकती है जैसे

- ''ह़ुस्ने मुआ़शरत के क़ुरआनी उसूल''
- ''ह़ुस्ने मुआ़शरत और क़ुरआनो सुन्नत''
- ''ह़ुस्ने मुआ़शरत के बुन्यादी उसूल क़ुरआनो सुन्नत की रौशनी में''
- ह़ुस्ने मुआ़शरत का इस्लामी तसव्वुर और इस में इस्लामी तालीमात का किरदार वग़ैरा।

उ़न्वान के इन्तिख़ाब के लिए दिए गए इन चन्द निकात को अ़मल में लाएंगे तो اِن شآءَ الله कसीर उ़न्वानात तजवीज़ करने में सहूलत पाएंगे।

Vinegar सिर्का

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा ग़िज़ाओं में **"सिर्का"** भी शामिल है। सिर्के को अ़रबी में "ख़िल्लुन" कहते हैं जब कि इंग्लिश में इसे Vinegar कहा जाता है। सिर्का एक मशरूब है जो अंगूर, गन्ने, जामुन, सेब वग़ैरा से बनाया जाता है। जब भी मुत़लक़न सिर्का कहा जाता है तो उस से अंगूर का सिर्का मुराद होता है। सिर्का बहुत ही क़दीम ग़िज़ा है, इसी वजह से तारीख़ के हर दौर में इसे बत़ौरे दवा और ग़िज़ा इस्तिमाल किया जाता रहा है, सिर्का ठन्डक और ह़रारत का एक ह़सीन इम्तिज़ाज है, येह जिस्म से ख़राब माद्दों को निकालता और त़बीअ़त को फ़रह़त बख़्शता है, अल ग़रज़ इस का इस्तिमाल फ़वाइद से ख़ाली नहीं है।

सिर्के की अक़्साम

सिर्का फलों वग़ैरा क़ुदरती अज्ज़ा से भी बनता है और मसनूई तौ़र पर भी तय्यार होता है।[1]

सिर्के से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका

कई अह़ादीसे मुबारका में सिर्के का ज़िक्र आया है। आइए! चन्द अह़ादीस मुलाह़ज़ा कीजिए :

1 उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सिर्का कितना अच्छा सालन है।"[2]

2 ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घर वालों से सालन के बारे में पूछा। तो उन्हों ने कहा, हमारे यहां सिर्के के सिवा कुछ नहीं। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे त़लब फ़रमाया और उस से खाना शुरूअ़ किया और बार बार फ़रमाया कि सिर्का अच्छा सालन है।[3]

3 ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा हाथ पकड़ कर अपने घर ले गए। आप की बारगाह में रोटी पेश की गई। आप ने सालन से मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो अ़र्ज़ की गई कि सिर्के के इ़लावा कुछ नहीं है। इरशाद फ़रमाया : सिर्का बेहतरीन सालन है। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : जब से मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिर्के से मुतअ़ल्लिक़ येह फ़रमान सुना उसी दिन से सिर्का मुझे बहुत अच्छा लगने लगा। ह़दीस के रावी ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं जब से मैं ने ह़ज़रते जाबिर की येह रिवायत सुनी तब से मुझे भी सिर्का बहुत पसन्द है।[4]

4 ह़ज़रते उम्मे सअ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल

मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मिलने के लिए तशरीफ़ लाए, मैं वहीं थी, आप ने दोपहर के खाने के बारे में पूछा । ह़ज़रते आ़इशा ने अ़र्ज़ की : हमारे पास रोटी, खजूर और सिर्का है, आप ने फ़रमाया : सिर्का कितना अच्छा है । ऐ अल्लाह ! सिर्के में बरकत अ़ता फ़रमा ! येह मुझ से पहले नबियों का सालन है । फिर फ़रमाया : जिस घर में सिर्का हो वोह घर कभी मोह़ताज नहीं होगा ।[5]

5 ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मेरे यहां नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो खाने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा । मैं ने अ़र्ज़ की : सूखी रोटी और सिर्के के सिवा कुछ नहीं । फ़रमाया : ले आओ, वोह घर सालन का मोह़ताज नहीं होता जिस में सिर्का हो ।[6]

अह़ादीसे पाक के निकात ❁ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सिर्का तनावुल फ़रमाना साबित है । ❁ सिर्के के ह़दीस शरीफ़ में बहुत फ़ज़ाइल आए हैं । ❁ ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सिर्का तनावुल फ़रमाया है । ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने सिर्के को मामूली ग़िज़ा की वजह से पेश नहीं किया लेकिन आप ने इसे क़बूल फ़रमाया इस से मालूम हुवा कि आदमी आला दर्जे पर पहुंच कर भी मामूली ग़िज़ाओं से नफ़रत न करे अपनी आ़दत सीधी सादी रखे सादा ज़िन्दगी गुज़ारने का आ़दी रहे ।[7]

सिर्के के फ़वाइद सिर्के के कई त़िब्बी फ़वाइद हैं उन्ही फ़वाइद की वजह से हज़ारों साल से इसे बत़ौरे दवा इस्तिमाल किया जा रहा है । सिर्के के चन्द फ़वाइद येह हैं : ❁ सिर्का मेदे की सोज़िश को दूर करता है । ❁ जिस्म से ज़हरीली अदविय्या के असर को दूर करता है । ❁ पित्ते से सफ़ुरा के निकलने की मिक़्दार को एतिदाल में लाता है। ❁ सिर्का प्यास बुझाता है। ❁ तिल्ली के बढ़ने को रोकता है। ❁ जिस्म में वरम की पैदाइश को रोकता है । ❁ ग़िज़ा के हज़्म करने में मददगार होता है। ❁ ख़ून को साफ़ करता है और फोड़े फुन्सियों को दूर करता है । ❁ सिर्के को गर्म कर के उस में नमक डाल कर पिया जाए तो येह मुंह की गन्दगी को दूर करता है । ❁ सिर्का ह़ल्क़ में तल्ख़ी, जलन, बोझ और गले की रुकावट को दूर करता है। ❁ सिर्का सीने में बोझ की कैफ़िय्यत को दूर करता है । ❁ सिर्का गले के कव्वे की सोज़िश, ह़स्सासिय्यत और इस के टेढ़े पन में मुफ़ीद है। ❁ गर्म सिर्के के ग़रारे दांत के दर्द को ठीक करते हैं और मसूढ़ों को मज़बूत़ करते हैं । ❁ गर्म सिर्का पीना मेदे को तक़विय्यत देता है, जिस्मानी कुव्वत में इज़ाफ़ा करता और चेहरे को जाज़िब बनाता है । ❁ मौसिमे गर्मा में सिर्का पीना जिस्म की ह़िद्दत को कम कर के त़बीअ़त को मुत़मइन करता है ।[8]

नोट : सिर्का इस्तिमाल करने से पहले अपने त़बीब से लाज़िमी मश्वरा कर लें कि आप के लिए कौन सा सिर्का मुफ़ीद है ?

---

(1)طب نبوی اور جدید سائنس،2/124(2)مسلم،ص873،حدیث:5350
(3)مسلم، ص873،حدیث:5352(4)مسلم،ص873، حدیث:5353 ملخصًا
(5)ابن ماجہ،4/34،حدیث:3318(6)ترمذی، 3/332، حدیث:1848
(7)مراٰۃ المناجیح،6/39(8)طب نبوی اور جدید سائنس،2/127-128۔

मुख़्तलिफ़ बीमरियों के घरेलू त़िब्बी इलाज जानने के लिए किताब ''घरेलू इलाज'' का मुत़ालआ़ कीजिए ।

नए लिखारी
(New Writers)

ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी नसीह़तें

मुह़म्मद अ़ब्दुल मुबीन अ़त्तारी

आप عَلَیْہِ السَّلَام का नाम मुबारक "लूत़" है जिस का एक माना "क़ल्बी मह़ब्बत" बनता है। इस की वजहे तस्मिय्या से मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام आप से बहुत मह़ब्बत फ़रमाते और क़ल्बी शफ़्क़त का इज़्हार फ़रमाते थे इस लिए आप عَلَیْہِ السَّلَام का नाम "लूत़" रखा गया। ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के भतीजे थे और शजरए नसब कुछ यूं है : लूत़ बिन हारान बिन तारुख़ बिन नाहूर बिन सारूअ़ बिन अरग़ू बिन फ़ालिग़ बिन ग़ाबिर बिन शालिग़ बिन अरफ़ख़्शद बिन साम बिन नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام। लेकिन ऐसे शजरो नसब में हमेशा येह बात याद रखनी चाहिए कि येह क़त़ई नहीं होते। मुम्किन है कि दरमियान में बहुत से अफ़राद के नाम रह गए हों। (सीरतुल अम्बिया, स. 374)

नसीह़त के लुग़वी माना "अच्छी सलाह, नेक मशवरा" के हैं। इसी का एक दूसरा लफ़्ज़ है नसीह़त आमेज़ यानी इ़ब्रत दिलाने वाली बात।

(फ़ीरौज़ुल लुग़ात, स. 1430)

नसीह़त क़ौली भी होती है और फ़ेली भी। लोगों को अल्लाह पाक और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पसन्दीदा बातों की त़रफ़ बुलाने और नापसन्दीदा बातों से बचाने और दिल में नर्मी पैदा करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ वाज़ो नसीह़त भी है। वाज़ो नसीह़त दीनी, दुन्यवी, अख़्लाक़ी, रूह़ानी, मुआ़शी और मुआ़शरती ज़िन्दगी के लिए ऐसे ही ज़रूरी है जैसे त़बीअ़त ख़राब होने की सूरत में दवा ज़रूरी है। येही वजह है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी क़ौमों को वाज़ो नसीह़त फ़रमाते रहे, ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام ने भी अपनी क़ौम को मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में नसीह़तें फ़रमाईं जिन का ज़िक्र क़ुरआने पाक में कई मक़ामात पर किया गया है उन में से चन्द दर्जे ज़ैल हैं :

1 अल्लाह पाक से डरने की नसीह़त ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام अपनी क़ौम अहले सुदूम के पास रसूल बन कर तशरीफ़ लाए और उन्हें अल्लाह पाक से डरने की नसीह़त फ़रमाई क़ुरआने मजीद में आप عَلَیْہِ السَّلَام की नसीह़त का ज़िक्र कुछ यूं है :

﴿اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌۙ(۱۶۲) فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ(۱۶۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं तो अल्लाह से डरो और मेरा हुक्म मानो। (پ19، الشعرآء:162،163)

2 बद फ़ेली पर क़ौम को नसीह़त आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन लोगों की सब से क़बीह़ आ़दत पर तम्बीह करते हुए फ़रमाया कि ह़लाल औ़रतों (बीवियों) को छोड़

कर मर्दों के साथ बेद फ़ेली करते हो तुम लोग ह़द से बढ़ चुके हो, चुनान्चे इरशाद होता है :

﴿اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ(۱۶۵) وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ(۱۶۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या मख़्लूक़ में मर्दों से बद फ़ेली करते हो और छोड़ते हो वोह जो तुम्हारे लिए तुम्हारे रब ने जोरूएं (बीवियां) बनाईं बल्कि तुम लोग ह़द से बढ़ने वाले हो। (پ19، الشعرآء:163،162)

3 दुन्यवी नफ़्अ़ के बिग़ैर क़ौम को तब्लीग़ो नसीह़त

ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام ने क़ौम को तब्लीग़ो नसीह़त करते हुए फ़रमाया : याद रखो कि मैं इस तब्लीग़ व तालीम पर तुम से कोई उजरत और दुन्यवी मनाफ़ेअ़ का मुत़ालबा नहीं करता, मेरा अज्रो सवाब तो सिर्फ़ रब्बुल आ़लमीन के ज़िम्मए करम पर है।

﴿وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ(۱۶۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मेरा अज्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है। (پ19، الشعرآء:166،165)

अल्लाह पाक हमें अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक नसीह़तों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उन के सदक़े नेकियां करने और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमें फ़ैज़ाने अम्बिया से माला माल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का 5 चीज़ों के बयान से तरबियत फ़रमाना

उ़मर फ़ारूक़ अ़त्तारी

मुआ़शरे के अफ़राद से बुरी ख़स्लतों को दूर कर के उन्हें अच्छी ख़स्लतों से आरास्ता करना अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का त़रीक़ा है। नूर वाले आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तरबियत हमारे लिए बेहतरीन नुमूना है। अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर अपनी उम्मत की तरबियत फ़रमाई। इन में से रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पांच चीज़ों के बयान से अपनी उम्मत की तरबियत फ़रमाना मुलाह़ज़ा कीजिए।

1 एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच ह़ुक़ूक़

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच ह़क़ हैं : सलाम का जवाब देना, बीमार की इयादत करना, जनाज़ों के पीछे चलना, दावत क़बूल करना और छींक का जवाब देना।

(فیضان ریاض الصالحین، 3/295، حدیث:238)

2 इस्लाम पांच चीज़ों पर क़ाइम किया गया

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस्लाम पांच चीज़ों पर क़ाइम किया गया : इस की गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात देना, ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 27)

3 शहीद पांच हैं

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि शहीद पांच हैं : ता़ऊन वाला, पेट की बीमारी वाला, डूबा हुवा, दब कर मरने वाला और अल्लाह की राह का शहीद। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 413)

4 पांच दुआ़एं बहुत क़बूल की जाती हैं

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पांच दुआ़एं बहुत क़बूल की जाती हैं मज़लूम की दुआ़ ह़त्ता कि बदला ले ले, ह़ाजी की दुआ़ ह़त्ता कि लौट आए, ग़ाज़ी की दुआ़ ह़त्ता कि जंग बन्द हो जाए, बीमार की दुआ़ ह़त्ता की तन्दुरुस्त हो जाए, मुसलमान भाई की पसे पुश्त दुआ़।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 303)

5 पांच चीज़ों से पनाह मांगना

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पांच चीज़ों से पनाह मांगते थे, बुज़दिली से, बुख़्ल से, बुरी उ़म्र से, सीनों के फ़ितनों और क़ब्र के अ़ज़ाब से।

बुरी उ़म्र से मुराद बुढ़ापे की वोह ह़ालत है जब आज़ा जवाब दे जाएं और इन्सान अपने घर वालों पर बोझ बन जाए। (मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 61)

अल्लाह पाक हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन फ़रामीन पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عليه واٰله وسلَّم

औलाद के हुक़ूक़
कलीमुल्लाह चिश्ती अ़त्तारी

औलाद अल्लाह पाक की वोह अ़ज़ीम नेमत है जिन की ख़ातिर वालिदैन सख़्त गर्मी व सर्दी को दामनगीर लाए बिग़ैर मेहनत मज़दूरी करते हैं येही औलाद अपने वालिदैन और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की उम्मीदों का मह़वर होती है इस की अगर सह़ीह़ मानों में तरबियत और इन के हुक़ूक़ अदा किए जाएं तो येह दुन्या में अपने वालिदैन के लिए राह़ते जान और आंखों की ठन्डक का सामान बनती है। बचपन में इन के दिल का सुरूर, जवानी में आंखों का नूर होगी। अगर इन की तरबियत सह़ीह़ ख़ुतूत़ पर नहीं होगी तो येह सहारे की बजाए वबाल ही बनेगी। आइए ! तरबियते औलाद के ह़वाले से कुछ हुक़ूक़ का मुत़ालआ़ करते हैं ताकि अदाइगिए हुक़ूक़ की वजह से औलाद दुन्या व आख़िरत में कामयाब व कामरान हो सके।

1 सब से पहला ह़क़ आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है कि औलाद का सब से पहला ह़क़ जो उस की पैदाइश से भी पहले है कि आदमी किसी रज़ील कम क़ौम (नीच ज़ात) औ़रत से निकाह़ न करे कि बुरी नस्ल ज़रूर रंग लाती है। (औलाद के हुक़ूक़, स. 15)

2 तमाम बच्चों से मसावी सुलूक इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस बात में कोई बुराई नहीं कि औलाद में से किसी को फ़ज़ीलते दीन की वजह से तरजीह़ दी जाए हां अगर दोनों बराबर हों तो उन में से किसी को तरजीह़ देना मकरूह है। (الخانیہ، 2/290)

3 नेक कामों में मदद वालिदैन को चाहिए कि हमेशा अपनी औलाद को नेक कामों की तरग़ीब दे और नेक कामों में बढ़ चढ़ कर उन की मदद करें जिस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक उस बाप पर रह़म फ़रमाए जो अपनी औलाद की नेक काम पर मदद करता है। (مصنف ابن ابی شیبہ، 6/101، حدیث:1)

4 अदब सिखाना ह़दीसे मुबारक में है : बाप पर औलाद के हुक़ूक़ में से येह भी है कि उसे अच्छी त़रह़ अदब सिखाए। (دیکھئے: شعب الایمان، 6/400، حدیث:8658)

4 सातवें दिन से ले कर 16 साल की उ़म्र तक मुख़्तलिफ़ हुक़ूक़ बच्चे का सातवें दिन अ़क़ीक़ा किया जाए और उस का नाम रखा जाए और उस का ह़ल्क़ किया जाए (यानी सर के बाल उतारे जाएं)।

(دیکھئے: مصنف ابن ابی شیبہ، 5/532، حدیث:1، 2)

सात साल की उ़म्र में नमाज़ का हुक्म दे। (देखिए : औलाद के हुक़ूक़, स. 21) 10 साल की उ़म्र में बिस्तर अलग कर दे, इसी उ़म्र में मार कर नमाज़ पढ़ाए, जवान हो जाए तो शादी कर दे, शादी में क़ौम, दीन, सीरतो सूरत मल्हूज़ रखे। (देखिए : औलाद के हुक़ूक़, स. 26)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह औलाद एक ग्रीन शाख़ की त़रह़ है जिस की सम्त आदमी अपनी मरज़ी से तब्दील कर सकता है लेकिन कुछ अ़र्से बाद येह एक बांस की सूरत इख़्तियार कर जाएगी जिस को सीधा करने की कोशिश से येह टूट जाएगा इस के इ़लावा अगर हम अपनी औलाद की अच्छी तरबियत करेंगे और उन्हें नमाज़ रोज़ा और इस के इ़लावा दीगर अह़कामे शरइ़य्या पर अ़मल करने का पाबन्द बनाएंगे तो येह औलाद दुन्या में भी हमारे लिए राह़त और आंखों की ठन्डक बनेगी और हमारे मरने के बाद भी हमारे लिए ईसाले सवाब और दुआ़ए ख़ैर कर के आख़िरत में भी बख़्शिश का सामान होगी।

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि वालिदैन को औलाद के हुक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عليه واٰله وسلَّم

आओ बच्चो ! ह़दीसे रसूल सुनते हैं

वालिदा के साथ ह़ुस्ने सुलूक कीजिए

एक शख़्स नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की

مَنْ اَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي قَالَ: اُمُّكَ

यानी लोगों में से मेरे ह़ुस्ने सुलूक का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : तेरी मां । (بخاری، 4/93، حدیث: 5971)

प्यारे बच्चो ! मां वोह हस्ती है जो अपने बच्चों के लिए बिग़ैर किसी दुन्यावी लालच के अपना सब कुछ कुरबान करने के लिए हर वक़्त तय्यार रहती है, मां की ख़िदमत और उस के साथ भलाई और अच्छा सुलूक करने से अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم राज़ी होते हैं, मां की दुआ़ औलाद के ह़क़ में क़बूल होती है ।

अगर कोई अपनी वालिदा की नाफ़रमानी करे और उस का दिल दुखने की सूरत में मां ने बद दुआ़ दी तो वोह भी क़बूल होती है ।

बाज़ बच्चे अपनी अम्मी की बात नहीं मानते, उन के साथ अच्छा सुलूक नहीं करते, अपनी अम्मीजान से बात करते हुए बद तमीज़ी वाला रवय्या इख़्तियार करते हैं ।

जब कि येही बच्चे अपने दोस्तों के साथ बहुत ख़ुश रहते हैं, दूसरे लोगों के साथ बड़े अच्छे अन्दाज़ में बात करते और जवाब देते हैं, ऐसे बच्चों को इस ह़दीसे पाक पर ज़रूर ग़ौर करना चाहिए कि लोगों में से सब से ज़ियादा अच्छे सुलूक की ह़क़दार मां होती है ।

चुनान्चे बच्चों को चाहिए कि अपनी अम्मी के साथ अच्छे अन्दाज़ में पेश आएं, वोह जो काम कहें फ़ौरन कर दिया करें, जो चीज़ खाने से मन्अ़ करें उस से बाज़ आएं, हो सके तो रोज़ाना अम्मी के पांव दबाएं और हाथ भी चूमा करें । यूं हमेशा अपनी वालिदा की ख़िदमत करते रहें और ह़ुस्ने सुलूक से पेश आएं ।

अल्लाह पाक हमें अपनी वालिदा की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हुरूफ़ मिलाइए !

م	ز	ہ	ع	ن	ی	ز	و	ر
ب	ل	و	ش	ف	ا	و	ط	ا
ج	ع	د	ن	ج	ق	ع	ب	ع
د	ا	ی	ہ	ک	م	ن	ر	ص
ہ	ب	ب	ا	و	ش	ج	ا	ح
ر	د	س	ی	ٹ	ھ	گ	م	ا
د	ہ	ی	ع	ف	د	م	ح	ب
ع	ن	ی	ر	ب	ن	ا	ر	ی
ا	ک	ذ	ر	ی	ب	ز	ع	ج

एक मरतबा मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ख़ूब बारिश हुई, यहां तक कि बैतुल्लाह शरीफ़ के आस पास काफ़ी पानी जम्अ़ हो गया और लोगों के लिए चलना फिरना और त़वाफ़ करना मुश्किल हो गया । उस वक़्त एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारिश के पानी में तैरना शुरूअ़ कर दिया और तैरते हुए अपना त़वाफ़ मुकम्मल किया । (موسوعہ ابنِ ابی الدنیا، ۸/ ۴۴۳)

प्यारे बच्चो ! आप को मालूम है येह प्यारे सह़ाबिए रसूल कौन थे ? जी हां येह सह़ाबिए रसूल "ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर" رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की पैदाइश हुई तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने लुआ़बे दहन (यानी थूक मुबारक) से घुट्टी दी और "अ़ब्दुल्लाह" नाम तजवीज़ फ़रमाया । (الزرقانی علی المواہب، ۲/ ۳۵۶) इस्लामी साल के पांचवें महीने "जुमादल ऊला" में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का उ़र्स है ।

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर मज़मून में बयान किए गए पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े "मक्का" तलाश कर के बताया गया है । तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं : 1 طواف 2 صحابی 3 زبیر 4 گھٹی 5 لعاب دہن

तौशादान कभी ख़ाली न हुवा

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कई मोजिज़ात ऐसे भी थे कि आप के विसाले ज़ाहिरी के सालों बाद तक भी आप के प्यारे सहाबा को उन के फ़ाएदे और बरकतें नसीब होती रहीं, उन्ही में से हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के तौशादान[1] से तअ़ल्लुक़ रखने वाला मोजिज़ा भी है जिस की तफ़्सील येह है :

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ खजूरें ले कर हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इन में अल्लाह पाक से बरकत की दुआ फ़रमा दीजिए । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें इकठ्ठा किया और मेरे लिए उन में दुआए बरकत फ़रमाई फिर मुझ से फ़रमाया : लो येह अपने तौशादान में रख लो, इस में से जब भी लेना चाहो तो अपना हाथ डाल कर ले लेना लेकिन इसे झाड़ना मत । (हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं) मैं ने उन खजूरों में से इतने इतने (यानी कई) वस्क़[2] खजूरें अल्लाह पाक की राह में ख़र्च कीं फिर हम ख़ुद भी उस में से खाते और दूसरों को खिलाया करते । वोह तौशादान मेरी कमर से कभी जुदा न होता था, यहां तक कि जिस दिन हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शहीद हुए तो वोह मुझ से कहीं गिर गया ।[3]

उस बा बरकत तौशादान का खो जाना हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के लिए इतना बड़ा ग़म था कि उन दिनों आप येह शेर कहा करते :

لِلنَّاسِ هَمٌّ وَلِي هَمَّانِ بَيْنَهُم
هَمُّ الْجِرَابِ وَهَمُّ الشَّيْخِ عُثْمَانَا

लोगों के लिए एक ग़म है और उन के दरमियान मेरे लिए दो ग़म हैं, तौशादान गुम होने का ग़म और हज़रते उ़स्मान की जुदाई का ग़म ।[4]

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बाद हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत तक़रीबन पच्चीस साल बाद हुई जब कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआए बरकत अपनी हयाते मुबारका में दी थी लिहाज़ा 25 साल यानी 300 माह से ज़ियादा अ़र्सा तक उस तौशादान से खजूरों का ख़त्म न होना, मुसल्सल हासिल होना यक़ीनन हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बहुत ज़बरदस्त मोजिज़ा था वोह यूं कि उस तौशादान का हमेशा हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की कमर से बन्धा रहना ज़ाहिर करता है सिर्फ़ एक आध किलो खजूरें होंगी क्यूंकि कमर पर हर वक़्त बांधे रखने वाला सामान आ़म तौ़र पर इतने ही वज़्न का होता है मगर इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ख़ुद खाने और दूसरों को खिलाने के इ़लावा कई मन राहे ख़ुदा में भी ख़ैरात किए ।

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस मोजिज़े से चन्द चीज़ें समझ आती हैं :

❁ बरकत येह है कि चीज़ थोड़ी हो मगर वोह और उस का फ़ाएदा हमेशा या फिर देर तक बाक़ी रहे ।

❁ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी बारगाह में आने वाले की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाते और आरज़ू पूरी किया करते थे।

❁ सच्ची अक़ीदत वालों को चाहिए कि चीज़ों की ज़ाहिरी मिक़्दार को देखने के बजाए अल्लाह वालों की दुआओं और बरकतों पर यक़ीन रखें।

❁ अल्लाह पाक का क़ुर्ब रखने वालों की ज़बान से निकलने वाली दुआ बा बरकत और मुस्तजाब (क़बूल) होती है।

❁ अगर कोई अपनी मुरादें नबियों या वलियों से जा कर मांगे और येह अक़ीदा रखे कि येह हज़रात भी अल्लाह से मांग कर मुझे देंगे तो ऐसा करना शिर्क व गुनाह नहीं बल्कि जाइज़ व फ़ाएदेमन्द है, फ़ाएदेमन्द इस लिए कि येह अल्लाह पाक के ख़ास दोस्त होते हैं, अल्लाह पाक की बारगाह से उन का हमारे लिए मांगना, हमारे अपने लिए मांगने से ज़ियादा जल्दी क़बूल होता है।

❁ जब दूसरों को फ़ाएदा पहुंचाना अपने बस में हो तो ज़रूर फ़ाएदा पहुंचाना चाहिए।

❁ जिसे अल्लाह पाक नवाज़े उसे चाहिए कि अल्लाह पाक के अ़ता किए हुए में से उस की राह में ज़रूर ख़र्च करे, नेक कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले। राहे ख़ुदा में देने से दर हक़ीक़त माल बढ़ता है।

❁ बा बरकत चीज़ की मिक़्दार के बारे में सोचने, अन्दाज़ा लगाने या उसे नापने तोलने स गुरेज़ करना चाहिए क्यूंकि येह सब चीज़ें तवक्कुल व भरोसे के ख़िलाफ़ हैं, इस लिए येह सब करने के बजाए अल्लाह पाक पर तवक्कुल व भरोसा रखते हुए उस बा बरकत चीज़ से ख़ुशी ख़ुशी फ़ाएदा उठाते रहना चाहिए।

---

(1) सफ़र में खाने पीने का सामान रखने वाले थेले या बरतन को "तौशादान" कहते हैं जैसा कि आज कल टिफ़िन वग़ैरा। (2) एक वस्क़ छे मन तीस सैर का होता है।
(3)دیکھئے:ترمذی،5/454،حدیث:3865-مسند احمد،14/276،حدیث:8628-مرآۃ المناجیح،8/253(4)شرح مصابیح السنۃ،6/367-

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع،3/285،حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुहम्मद	सईद	ख़ुश नसीब	रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	उ़मर	ज़िन्दगी	मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का नाम
मुहम्मद	ज़कवान	ज़हीन	सहाबिए रसूल का बा बरकत नाम

बच्चियों के 3 नाम

शहर बानू	शहर की सरदार	नवासए रसूल हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजए मोहतरमा का नाम
रुक़ैक़ा	नर्म दिल	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बा बरकत नाम
मुत़ीआ	फ़रमां बरदार ख़ातून	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बेटियों की तरबियत

बेटियों को मोबाइल से बचाएं

मोबाइल फ़ोन के फ़ाएदे किसी से ढके छुपे नहीं मगर इस के नुक़्सानात भी बहुत हैं । इस का बेजा इस्तिमाल वक़्त ज़ाएअ़ करने का बड़ा सबब है । महंगे मोबाइल फ़ोन अब हैसिय्यत की अ़लामत (Status Symbol) बन चुके हैं । नए और महंगे मोबाइल फ़ोन ख़रीदना और इस्तिमाल करना फ़ेशन का नया रुजहान है । मोबाइल फ़ोन की इस दौड़ में बच्चियां और ख़वातीन भी पीछे नहीं हैं ।

मोबाइल फ़ोन के बाइस ख़वातीन की घरेलू ज़िन्दगी तबाह हो रही है, बच्चियों में शर्मो ह़या और निस्वानी हिचकिचाहट ख़त्म हो रही है । बच्चियों में घरदारी सीखने का रुजह़ान ख़त्म हो रहा है । येह इन्तिहाई क़ाबिले अफ़्सोस और ख़त़रनाक सूरतेह़ाल है । बच्चियों में येह ख़ामियां पैदा होने का सीधा सीधा मत़लब उन के मुस्तक़्बिल यानी इज़्दिवाजी और घरेलू ज़िन्दगी का दाव पर लग जाना है ।

इन ह़ालात में बहुत ज़रूरी है के बेटियों की परवरिश के इस पहलू पर ख़ास तवज्जोह दी जाए और उन्हें मोबाइल से दूर करने और घरदारी सिखाने का एहतिमाम किया जाए ।

आप को बेटियों को ख़ुद भी सपोर्ट करना होगा इस के लिए आप को भी मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल को छोड़ना होगा क्यूंकि बेटियां जब देखती हैं कि इन के वालिदैन भी कसरत से मोबाइल इस्तिमाल कर रहे हैं तो इन का इश्तियाक़ बढ़ने लगता है ।

जब बेटियां बारह साल से बड़ी होने लगती हैं तो यहां से उन की तरबियत का ख़ुसूसी वक़्त शुरूअ़ हो जाता है । मसलन ! उमूरे ख़ानादारी सिखाना, सिलाई कढ़ाई सिखाना (इस का शौक़ उ़मूमन बच्चियों को होता है कि वोह अपनी गुड़ियों के कपड़े बनाती हैं) इसी शौक़ को हवा देते हुए माएं अपनी बेटियों की सिलाई, कढ़ाई, बुनाई में दिलचस्पी पैदा कर सकती हैं, बच्चियों को कपड़ों के छोटे छोटे टुकड़े दे कर उन्हें सिखाएं, वोह अपनी गुड़ियों (Dolls) के कपड़े ख़ुद बनाएंगी तो ख़ुश होंगी फिर आहिस्ता आहिस्ता उन का रुजह़ान पैदा करें कि वोह अपने लिए भी येह सीख कर बनाने की कोशिश करें ।

इसी त़रह़ उन के फ़ारिग़ वक़्त में उन से ड्रोइंग करवाएं, फूल बनवाएं, मेहन्दी के डीज़ाइन बनाने में लगाएं, येह काम करते उन्हें बोरियत भी नहीं होगी और सीखने सिखाने का सिल्सिला भी जारी रहेगा मोबाइल से

भी छुटकारा मिल जाएगा।

मोबाइल से नजात के लिए दस्तकारी के इलावा बच्चियों को खाना पकाना सिखाना भी मुफ़ीद है, घर के खाने पकाने में अश्या का दुरुस्त इस्तिमाल करना, एतिदाल के साथ इस्तिमाल करना कि खाना ज़ाएअ़ न हो, बेटी कुछ बनाए तो उस की हौसला अफ़्ज़ाई करना ताकि अगली बार वोह मज़ीद शौक़ से पकाए और अच्छा पकाने की कोशिश करे, इस बात का भी बिल ख़ुसूस ख़याल रखा जाए कि येह सब काम बेटियों को ज़ोर ज़बरदस्ती न करवाएं बल्कि येह सब कुछ करने के लिए उन के अन्दर दिलचस्पी पैदा करें ताकि वोह शौक़ से करें बोझ समझ कर न करें, आज कल घर के कामों को बोझ समझा जाने लगा है इस चीज़ से बचना चाहिए ऐसे घर में नाचाक़ियां भी पैदा हो जाती हैं।

मोबाइल के ज़रूरी और बजा इस्तिमाल की गुन्जाइश रखें

बच्चियों को पढ़ाई के सिल्सिले में मोबाइल की ज़रूरत पड़े तो इस की गुन्जाइश रखें, मगर वालिदैन येह ध्यान रखें कि बच्ची मोबाइल का ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल तो नहीं कर रही ? उन्हें बिल ख़ुसूस सोशल मीडिया के इस्तिमाल से बचाएं। बेजा टिकटॉक, फ़ेसबुक, इन्स्टाग्राम वग़ैरा के अकाउन्ट बनाना, गेम्ज़ वग़ैरा मोबाइल में इन्स्टॉल कर लेना यक़ीनन येह ग़ैर ज़रूरी है और सोशल मीडिया ने कितने घरों को बरबाद किया है येह बात भी किसी से ढकी छुपी नहीं, इस लिए हर मां येह कोशिश करे कि ज़ियादा से ज़ियादा अपनी बेटियों को मोबाइल के इस्तिमाल से बचाए।

घर का माहौल खुश गवार और मानूस रखें

अक्सर बेटियां मोबाइल की त़रफ़ और सोशल मीडिया की त़रफ़ बढ़ती ही इस वजह से हैं कि उन्हें शुरूअ़ में घर से इतनी तवज्जोह नहीं मिली होती, या तो घर का माहौल ऐसा होता है कि वालिदैन आपस में लड़ते झगड़ते हैं या घर का माहौल ही बे सुकूनी व बेज़ारिय्यत वाला, बेजा रोक टोक, बेजा सख़्ती वाला, या मार धाड़ वाला होता है क्यूंकि उ़मूमन येही बातें बच्चियों की घर से बेज़ारिय्यत का सबब बनती हैं फिर एक वक़्त ऐसा आता है कि मां बाप तो तवज्जोह चाहते हैं मगर औलाद तवज्जोह नहीं देती, इसी लिए हमें बचपन में ही अपने बच्चों की ऐसी तरबियत करनी है कि उन्हें मोबाइल के बिग़ैर जीना आए, उन्हें ज़रूरी और बेजा बातों का पता हो। यक़ीनन बेटियां नाज़ुक शीशियां हैं कि ज़रा सख़्त गिरिफ़्त हुई तो टूट कर चकना चूर हो जाएंगी, माएं अपनी बेटियों को ज़माने की सर्द हवा और काले भेड़ियों से बचाने की भरपूर कोशिश करें अपनी बेटी को बचपन से ही दुरुस्त और ग़लत़ की पहचान अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन करवाएं ताकि वोह इस ज़माने के मक्रो फ़रेब में न फंसे सोशल मीडिया और मोबाइल फ़ोन के ज़रीए इ़श्क़े मजाज़ी की वबा फैलने के वाक़िआ़त बहुत आ़म हैं, उ़मूमन आवार लड़के नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील के लिए "टाइम पास" करने की आड़ में किसी न किसी त़रह़ सिन्फ़े नाज़ुक का फ़ोन नम्बर ह़ासिल करने के बाद या फ़ेसबुक वग़ैरा के ज़रीए ही राबित़ा क़ाइम कर लेते हैं और बाज़ औक़ात पहला क़दम सिन्फ़े नाज़ुक ही की त़रफ़ से उठाया जाता है, यूं कुछ ही अ़र्से में अजनबिय्यत ख़त्म हो जाती जो कि सरासर नुक़्सान देह और इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ है लिहाज़ा ज़रूरी इस्तिमाल की इजाज़त भले ही दी जाए मगर इस की लत न पड़ने दें ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल पर सख़्त पहरा दिया जाए।

समझदार बड़ी बच्चियों को येह भी समझाएं कि मजबूरन अन्जान या ग़ैर मह़रम शख़्स से ज़रूरी बात करते हुए लहजे करख़्त और अन्दाज़े गुफ़्तगू रूखा ही होना चाहिए। उन्हें समझाएं कि अपनी और अपने घर वालों की इ़ज़्ज़त का हमेशा मान और पास रखें और कोई ऐसा काम न करें कि ख़ुद को और घर वालों को शर्मिन्दा होना पड़े।

अल्लाह पाक हमारी बेटियों को रौशन मुस्तक़्बिल और दीन व दुन्या की कामयाबी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

औरत को सिले हुए पाजामा या शल्वार में कफ़न देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस बारे में कि बाज़ ख़वातीन येह कहती हैं कि औरत के कफ़न में इस को सिला हुवा पाजामा या शल्वार देनी चाहिए। और वोह इस पर काफ़ी ज़ोर देती हैं। क्या येह दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मर्द व औरत दोनों की मय्यित के लिए इज़ार यानी तेहबन्द वाली चादर ही सुन्नत है। लिहाज़ा औरत की मय्यित को भी सिला हुवा पाजामा या शल्वार पहनाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। बिल ख़ुसूस औरत के कफ़न के मुतअ़ल्लिक़ सुन्नत त़रीक़ा जो ह़दीसे पाक से साबित है उस के मुत़ाबिक़ औरत के कफ़न में सिली हुई शल्वार शामिल नहीं है बल्कि तेहबन्द यानी बिग़ैर सिली चादर है। चुनान्चे रिवायात में आता है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी एक शहज़ादी मोह़तरमा की वफ़ात पर ग़ुस्ल देने वाली ख़वातीन को कफ़न के कपड़े ख़ुद एक एक कर के पकड़ाए और येह पांच कपड़े थे लेकिन इस में सिली हुई शल्वार नहीं थी। और उन पांच कपड़ों में सब से पहले अपना तेहबन्द शरीफ़ बत़ौरे तबर्रुक अ़त़ा फ़रमाया और ग़ुस्ल देने वाली ख़वातीन को फ़रमाया कि येह वाली चादर उन के जिस्म के साथ मुत्तसिल रखें।

मय्यित को शल्वार न पहनाने की वजह उ़लमा ने येह बयान की है कि ज़िन्दा शख़्स शल्वार इस लिए पहनता है कि चलने फिरने और काम काज के वक़्त उस का सतर (यानी मर्द व औरत का वोह मक़ाम जिसे छुपाना वाजिब है वोह) न खुले लेकिन मय्यित के लिए ऐसा कोई अन्देशा नहीं होता क्यूंकि उस ने चलना नहीं होता इस लिए मय्यित को शल्वार की ह़ाजत नहीं। येही वजह है कि ज़िन्दा इन्सान तेहबन्द नीचे और कमीज़ ऊपर रखता है ताकि उस को चलने में सहूलत रहे और मय्यित ने चूंकि चलना नहीं इस लिए उस की क़मीस नीचे और इज़ार (तेहबन्द) की चादर उस से ऊपर होती है। और इसी वजह से मय्यित को जो क़मीस पहनाई जाती है उस की आस्तीनें नहीं रखी जाती और उस की क़मीस को पहलूओं की जानिब से सिलाई नहीं किया जाता क्यूंकि ज़िन्दा इन्सान को तो अपने लिबास में इस की ह़ाजत होती है जब कि मय्यित को इस की ह़ाजत नहीं होती।

ख़ुलासा येह कि मय्यित अगर औरत हो तो उसे भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ कफ़न देना चाहिए और उस में सिली हुई शल्वार नहीं पहनानी चाहिए। जो लोग सिला हुवा पाजामा या शल्वार पहनाने पर ज़ोर देते हैं वोह अपनी कम इ़ल्मी की वजह से सुन्नत व त़रीक़ए मुस्लिमीन की मुख़ालिफ़त करते हैं उन को चाहिए कि वोह इस से बाज़ आएं और उ़लमाए किराम ने जो शरीअ़त के अह़काम व मसाइल बयान फ़रमाए हैं उन को तस्लीम कर के उन पर अ़मल करें। इसी में हमारी कामयाबी है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जुमादल ऊला के चन्द अहम वाक़िआ़त

तारीख़/माह/सिन	नाम / वाक़िआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
2 जुमादल ऊला 1286 हिजरी	यौमे विसाल आला ह़ज़रत के दादाजान ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
7 जुमादल ऊला 735 हिजरी	यौमे उ़र्स ह़ज़रते शाह रुक्ने आ़लम अबुल फ़त्ह़ रुक्नुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
8 जुमादल ऊला 1334 हिजरी	यौमे विसाल ह़ज़रते अ़ल्लामा वसी अह़मद मुह़द्दिसे सूरती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
17 जुमादल ऊला 73 हिजरी	यौमे शहादत सह़ाबिए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
17 जुमादल ऊला 1362 हिजरी	यौमे विसाल शहज़ादए आला ह़ज़रत, ह़ुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती मुह़म्मद ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
19 जुमादल ऊला 911 हिजरी	यौमे विसाल इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
27 जुमादल ऊला 73 हिजरी	यौमे विसाल ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
जुमादल ऊला 8 हिजरी	जुमादल ऊला 8 हिजरी में जंगे मौता रूनुमा हुई जिस में सिर्फ़ तीन ह़ज़ार मुसलमानों ने दो लाख कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला किया, इस जंग में ह़ज़रते जाफ़र त़य्यार, ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा समेत 12 सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने जामे शहादत नोश फ़रमाया जब कि बहुत से कुफ़्फ़ार मारे गए।	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना
जुमादल ऊला 855 हिजरी	विसाले मुबारका ह़ज़रते शाह यक़ीक़ बुख़ारी नक़्शबन्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जोड़ पैदा कीजिए

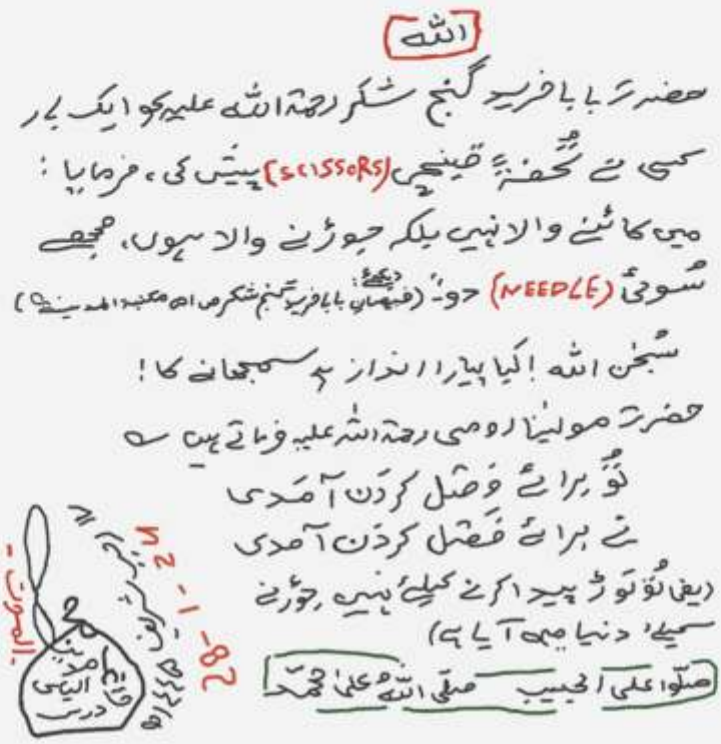

ह़ज़रते बाबा फ़रीद गंजे शकर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को एक बार किसी ने तोह़फ़तन क़ैंची (Scissors) पेश की, फ़रमाया : मैं काटने वाला नहीं बल्कि जोड़ने वाला हूं, मुझे सूई (Needle) दो।

(देखिए : फ़ैज़ाने बाबा फ़रीद गंजे शकर, सफ़ह़ा 51 मक्तबतुल मदीना)

سُبْحٰنَ اللہ ! क्या प्यारा अन्दाज़ है समझाने का !

ह़ज़रते मौलाना रूमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं

تُو برائے وَصل کردن آمدی　　نے برائے فصل کردن آمدی

(यानी तू तोड़ पैदा करने के लिए नहीं जोड़ने के लिए दुन्या में आया है।)

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर
9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.